राष्ट्रीय दैनिक

प्रातः किरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

11 अश्विन बोले- यह मेरा आखिरी क्रिकेट वर्ल्ड कप टीम में चयन की ...

नवाज शरीफ की वापसी की तैयारी के साथ शहबाज का पंजाब पर दांव ... 12

वर्ष : 11 | अंक : 142 | पटना, सोमवार , 02 अक्टूबर, 2023 | विक्रम संवत् 2080 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

मौसम

अधिकतम तापमान 31°C

न्यूनतम तापमान 25.0°C

हां	30%
नहीं	50%
कह नहीं सकते	10%

बाजार

सोना	59,340
चांदी	55,350
सेंसेक्स	63,327
निफ्टी	18,816

एशियाई खेल : पुरुष निशानेबाजी टीम ने स्वर्ण, महिला टीम ने जीता रजत

प्रात : किरण

हांगझोउ/एजेंसी। पृथ्वीराज तोडइमान, काइनन चेनाई और जोरावर सिंह संधू की भारतीय तिकड़ी ने रविवार को यहां एशियाई खेलों की ट्रैप निशानेबाजी स्पर्धा में टीम स्वर्ण पदक जीता। मनीषा कीर, प्रीति रजाक और राजेश्वरी कुमारी की महिला ट्रैप टीम भी रजत पदक जीतने में सफल रही जिससे खेलों में भारतीय निशानेबाजी टीम का अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन जारी है। भारतीय पुरुष टीम ने क्वालीफिकेशन दौर में 361 अंक जुटाए। खालिद अलमुदहाफ, तलाल अलरशीदी और अब्दुलरहमान अलफइहान की कुवैत की टीम ने 359 अंक के साथ रजत पदक जीता जबकि युहाओ गुओ, यिंक की औ युहाओ वैंग की चीन की टीम ने 354 अंक के साथ कांस्य पदक अपने नाम किया। भारतीय महिला टीम ने 337 अंक जुटाते हुए रजत पदक जीता। किंगनियान ली, सुइसुइ वू और शिनक्यु झेंग की चीन की टीम ने विश्व रिकॉर्ड 357 अंक के साथ स्वर्ण पदक जीता। मारिया दमित्रियेंको, एझान दोसमगामबेतोवा और अनास्तासिया प्रिलेपिना (336) की कजाखस्तान की टीम ने कांस्य पदक हासिल किया। पुरुष वर्ग में चेनाई (122) और जोरावर सिंह संधू (120) व्यक्तिगत फाइनल में जगह बनाने में सफल रहे। महिला वर्ग के मनीष ने तीन अन्य निशानेबाजों के साथ टाई के बाद शूट ऑफ के जरिए फाइनल में जगह बनाई।

मिश्रित युगल स्क्वाश में भारत की विजयी शुरूआत: भारतीय पुरुष टीम के रोमांचक मुकाबले में पाकिस्तान का हराकर स्वर्ण पदक जीतने के बाद मिश्रित टीमों ने भी यहां एशियाई खेलों के अपने पूल चरण के मुकाबले जीतकर अच्छी शुरूआत की। पूल ए में दीपिका पल्लीकल और हरिंदर पाल सिंह संधू की जोड़ी ने जेइजिन यू और हवायिओंग युम की दक्षिण कोरिया की जोड़ी को 22 मिनट में 2-0 (11-2, 11-5) से हराया। अनाहत सिंह और अभय सिंह की जोड़ी ने भी 15 मिनट चले पूल डी के मैच में डेविड विलियम पेलिनो और वोने एलिसा डालिडा की फिलिपीन्स की जोड़ी को 2-0 (11-7, 11-5) से शिकस्त दी।

महिला कंपाउंड तीरंदाजी टीम क्वालीफिकेशन में पहले स्थान पर: अनुभवी ज्योति सुरेखा वेन्नम ने एशियाई खेलों की कंपाउंड तीरंदाजी स्पर्धा के व्यक्तिगत क्वालीफिकेशन में रविवार को दक्षिण कोरिया की प्रतिद्वंद्वियों को पछाड़कर शीर्ष स्थान हासिल किया जबकि विश्व चैम्पियन अदिति स्वामी चौथे पायदान पर रही। इन दोनों के शानदार प्रदर्शन से भारत ने टीम स्पर्धा में शीर्ष स्थान हासिल किया। ओलिंपिक खेलों में शामिल रिकर्व वर्ग के तीरंदाजों ने भी पुरुष वर्ग में अच्छा प्रदर्शन किया।

अनुभवी अतनु दास चौथे स्थान पर रहे, प्रतिभाशाली युवा तीरंदाज धीरज बोम्मदेवरा पुरुष वर्ग में कट बनाने वाले छठे स्थान के साथ अगले सर्वश्रेष्ठ भारतीय थे।

प्रधानमंत्री ने उठाया झाड़ू, पार्क में किया श्रमदान, देशभर में लोगों ने लिया स्वच्छता अभियान में हिस्सा

वातावरण स्वस्थ रहेगा तो फिटनेस भी बरकरार रहेगी : मोदी

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की राष्ट्रव्यापी स्वच्छता अभियान की अपील पर नेताओं से लेकर छात्रों तक, सभी क्षेत्रों के लोगों ने रविवार को एक घंटे के श्रमदान में हिस्सा लिया। खुद, प्रधानमंत्री मोदी ने भी हाथ में झाड़ू थामकर एक पार्क में सफाई की। प्रधानमंत्री ने फिटनेस और वर्कआउट की पारंपरिक व देसी शैलियों को बढ़ावा देने के लिए प्रसिद्धि हासिल करने वाले अंकित बैयानपुरिया के साथ एक पार्क में श्रमदान करने से जुड़ा वीडियो सोशल मीडिया मंच एक्स पर पोस्ट किया। उन्होंने लिखा, आज जब राष्ट्र स्वच्छता पर ध्यान केंद्रित कर रहा है, अंकित बैयानपुरिया और मैंने भी ऐसा ही किया! स्वच्छता से परे, हमने फिटनेस और बेहतर स्वास्थ पर भी ध्यान केंद्रित किया। यह सब स्वच्छ और स्वस्थ भारत के बारे में है! वीडियो में प्रधानमंत्री और बैयानपुरिया स्वास्थ्य से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करते दिखाई दे रहे हैं। इस दौरान, प्रधानमंत्री ने बैयानपुरिया से स्वच्छता अभियान में फिटनेस के महत्व पर बात की। इस पर बैयानपुरिया

कहते हैं कि वातावरण स्वस्थ रहेगा, तो फिटनेस भी बरकरार रहेगी। उन्होंने प्रधानमंत्री से सवाल किया कि वह कितनी कसरत कर पाते हैं? जवाब में प्रधानमंत्री ने कहा, मैं ज्यादा एक्सरसाइज नहीं करता, लेकिन रोजमर्रा की जिंदगी के लिए जितना चाहिए मैं अनुशासन का पालन करता हूं। दो चीजों में अभी अनुशासन का पालन नहीं कर पा रहा हूं। एक तो खाने का टाइम नहीं और दूसरा, सोने के लिए मुझे समय देना चाहिए, वह मैं दे नहीं पा रहा हूं। वीडियो में प्रधानमंत्री को झाड़ू लगाते और कचरा उठाते भी देखा जा सकता है। प्रधानमंत्री ने कहा कि देश में धीरे-धीरे स्वच्छता का वातावरण बन रहा है और अब तो बच्चे भी बड़ों को गंदगी फैलाने पर टोकने लगे हैं। बैयानपुरिया को वीडियो में यह कहते हुए सुना जा सकता है, आपसे मिलने का सपना था, वह पूरा हो गया। इससे पहले, केंद्रीय आवास और शहरी मामलों के मंत्रालय ने बताया कि इस अभियान के तहत देशभर में 9.20 लाख से अधिक स्थानों पर स्वच्छता कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। आकाशवाणी के मासिक रेडियो कार्यक्रम मन की बात की पिछली कड़ी में मोदी ने सभी नागरिकों से एक अक्टूबर को स्वच्छता के लिए एक घंटे का श्रमदान करने की अपील की थी। उन्होंने कहा था कि महात्मा गांधी की जयंती की पूर्व संध्या पर यह स्वच्छांजलि होगी।

केंद्रीय मंत्रियों और भाजपा नेताओं ने स्वच्छता अभियान में लिया हिस्सा : केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने झाड़ू लेकर अहमदाबाद में स्वच्छता अभियान में हिस्सा लिया। वहीं, भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे पी नड्डा दिल्ली के झंडेवालान इलाके में इस अभियान में शामिल हुए। श्रमदान में हिस्सा लेते हुए केंद्रीय ऊर्जा मंत्री आर के सिंह ने संवाददाताओं से कहा, हमने (केंद्र) देश को स्वच्छ बनाने का संकल्प लिया है। यह एक बड़ी चुनौती है, लेकिन हम इसे करेंगे। देशभर में केंद्रीय मंत्रियों और भाजपा नेताओं ने झाड़ू उठाकर स्वच्छता ही सेवा अभियान में हिस्सा लिया। गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल ने अहमदाबाद में स्वच्छता अभियान में भाग लिया। भाजपा सांसद दिनेश शर्मा ने भी एक स्वच्छ अभियान में हिस्सा लिया और कहा कि स्वच्छता देश का चेहरा बन गई है।

भारतीय वायु सेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल वी आर चौधरी नई दिल्ली में स्वच्छता गतिविधि के लिए स्वेच्छा से शामिल हुए।

विराट कोहली और रोहित शर्मा जैसे क्रिकेट खिलाड़ियों ने भी लोगों से एक तारीख, एक घंटा, एक साथ के लिए साथ आने और स्वच्छता के प्रति संकल्प को मजबूत करने के लिए सबसे बड़े नागरिक नेतृत्व वाले आंदोलन में शामिल होने की अपील की। केंद्रीय मंत्री मीनाक्षी लेखी ने कहा, हम उम्मीद करते हैं कि लोग स्वच्छ भारत मिशन से जुड़े रहेंगे, जिसे प्रधानमंत्री मोदी ने लॉन्च किया था।

बिहार पुलिस परीक्षा : धांधली के आरोप में 6 गिरफ्तार

प्रात : किरण

अरवल। बिहार पुलिस भर्ती परीक्षा से पहले पुलिस ने कई जगहों पर छापेमारी कर परीक्षा में धांधली करने वाले गिरोह के छह सदस्यों को गिरफ्तार किया है। शनिवार को देर रात डीएसपी राजीव रंजन के नेतृत्व में एक साथ जिले के कोहड़उल, खनपुरा, मोकरी और जिनपुरा समेत शहर के कई होटलों में अचानक छापेमारी की गई। जैसे ही छापेमारी दल के टीम होटल में पहुंची लोग हतप्रभ हो गए। होटल में छापेमारी कर दो लोगों को गिरफ्तार किया गया। कोहड़उल गांव के सौरभ, गौरव के मकान में छापेमारी कर भारी मात्रा में चेक बुक लैपटॉप 200 से अधिक लोगों को एडमिट कार्ड और शैक्षणिक प्रमाण पत्र बरामद किए गए हैं। हालांकि मौके से सौरभ और गौरव फरार हो गया। वही बख्तारी गांव में छापामारी कर राजकिशोर को गिरफ्तार किया गया है। राज किशोर के पास से कई कागजात बरामद हुई है। मोकरी गाँव मे छापेमारी कर विकास कुमार को गिरफ्तार किया इसके अलावा मोथा से अजित कुमार को गिरफ्तार किया गया है।

सिपाही बनाने का रेट 7 लाख रुपए फिक्स : पुलिस अधीक्षक मोहम्मद कासिम ने बताया कि पुलिस भर्ती परीक्षा में पास करने के लिए अभ्यर्थियों से 7 लाख तक वसूल करने की योजना रहती थी। परीक्षा पास करने के अलावा मेरिट की रुपए लिए जाते थे। इस बार तीन अलग-अलग डेट पर परीक्षा होनी है। ऐसे में शातिरों का प्लान करोड़ों में कमाने का था। लेकिन पुलिस ने उनके मंसूबे पर पानी फेर दिया। गिरफ्तार ठंगों ने पुलिस के समक्ष स्वीकार किया कि वे तीनों परीक्षा के दौरान कम से कम 5 करोड़ रुपए की कमाई करने वाले थे।

गिरोह में कई रसूखदार शामिल : गैंग में गिरफ्तार राजकिशोर प्रसाद के साथ कई रसूखदार लोग शामिल है। गिरोह के सदस्य पिंटू, राकेश, विकास अभ्यर्थियों को झांसे में लाते थे और उनसे रुपये की डिमांड करते थे।

छापामारी दल का मॉनिटरिंग एसपी मोहम्मद कासिम कर रहे थे। अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी राजीव रंजन के नेतृत्व में सदर थाना अध्यक्ष अवधेश कुमार पुलिस निरीक्षक दिनेश बहादुर सिंह उमाशंकर सिंह दिनेश कुमार मनोज कुमार डीआईउ प्रभारी सिंटू कुमार शामिल थे।

संक्षिप्त खबरें

विधायक अनिरूद्ध कुमार यादव की माताजी के श्राद्धकर्म में शामिल हुये मुख्यमंत्री

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार रविवार को बख्तियारपुर के सैदपुर हिदायतपुर रोड स्थित विधायक अनिरूद्ध कुमार यादव के आवास जाकर उनकी माताजी स्व सुदामा देवी के श्राद्धकर्म में शामिल हुये। मुख्यमंत्री ने स्व सुदामा देवी के चित्र पर पुष्प अर्पित कर अपनी श्रद्धांजलि दी। मुख्यमंत्री ने शोकाकुल परिजनों से मिलकर उन्हें सांत्वना भी दी। इस अवसर पर वित्त, वाणिज्य कर एवं संसदीय कार्य मंत्री विजय कुमार चौधरी, विधायक ज्ञानेन्द्र सिंह ज्ञानू, विधायक भाई वीरेन्द्र, विधायक विभा देवी, विधान पार्षद नीरज कुमार, विधान पार्षद रविन्द्र कुमार सिंह सहित अन्य जन प्रतिनिधिगण एवं गणमान्य व्यक्ति मौजूद थे।

वाइस एडमिरल तरुण सोबती ने नौसेना के उप प्रमुख का कार्यभार संभाला

नई दिल्ली। वाइस एडमिरल तरुण सोबती ने रविवार को नौसेना के उप प्रमुख का कार्यभार संभाल लिया। यह जानकारी अधिकारियों ने दी। अधिकारियों ने बताया कि सोबती ने वाइस एडमिरल संजय महेंद्रू की जगह ली है, जो 38 साल से अधिक की शानदार सेवा के बाद सेवानिवृत हुए। वाइस एडमिरल सोबती एक जुलाई 1988 को भारतीय नौसेना का हिस्सा बने थे। वह नौवहन विशेषज्ञ माने जाते हैं। वाइस एडमिरल तरुण सोबती ने 35 वर्षों के अपने करियर में नौसेना में कई अहम पदों पर सेवाएं दी हैं। सोबती, आईएनएस निशंक, आईएनएस कोरा और आईएनएस कोलकाता जैसे नौसेना के जहाजों को कमांड कर चुके हैं। सोबती डायरेक्टोरेट आफ स्टाफ रिक्वायरमेंट्स और डायरेक्टोरेट ऑफ पर्सनल जैसे अहम विभागों में भी अपनी सेवाएं दे चुके हैं। वाइस एडमिरल सोबती, मॉस्को स्थित भारतीय दूतावास में नेवल अताशे की जिम्मेदारी भी निभा चुके हैं।

रेल मंत्री ने गुड़गांव रेलवे स्टेशन पर किया श्रमदान

पटना। रेल, संचार और इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री अश्विनी वैष्णव ने रविवार को गुड़गांव रेलवे स्टेशन, हरियाणा में श्रमदान किया। उन्होंने रेलवे ट्रैक और स्टेशन परिसर के सफाई अभियान में हिस्सा लिया। श्री शोभन चौधुरी, महाप्रबंधक, उत्तर रेलवे, श्री सुखविंदर सिंह, मंडल रेल प्रबंधक, दिल्ली मंडल, रेलवे बोर्ड एवं उत्तर रेलवे के अन्य अधिकारियों ने भी स्वच्छता अभियान में भाग लिया। यह अभियान गांधी जयंती से एक दिन पहले 1 अक्टूबर को सुबह 10.00 बजे से शुरू होने वाले प्रधानमंत्री के राष्ट्रव्यापी महा स्वच्छता अभियान में सभी नागरिकों की भागीदारी के लिए एक तारीख एक घंटा एक साथ के आह्वान पर किया गया। तत्पश्चात, रेल मंत्री ने गुड़गांव रेलवे स्टेशन से 20977 अजमेर - दिल्ली कैंट वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेन में दिल्ली कैंट रेलवे स्टेशन तक की यात्रा की। उन्होंने ट्रेन में साफ-सफाई के स्तर का निरीक्षण किया और यात्रियों के साथ बातचीत की।

सूबे में सितंबर में डेंगू के 6,146 मामले सामने आए

पटना। सूबे में डेंगू के मामलों में चिंताजनक वृद्धि देखी जा रही है, इस साल सितंबर में इस बीमारी के 6,146 मामले सामने आए, यह आंकड़ा पिछले पांच वर्षों में इस महीने में सबसे अधिक है। बिहार के स्वास्थ्य विभाग के आंकड़ों के अनुसार राज्य में इस साल डेंगू के 6,421 मामले सामने आये, इनमें से 6,146 केवल सितंबर में सामने आये हैं। इसमें कहा गया है कि पिछले साल सितंबर में डेंगू के 1,896 मामले सामने आये थे। पिछले साल सितंबर की अपेक्षा इस साल सितंबर में यह आंकड़ा तीनगुना अधिक है। शुक्रवार को राज्य में डेंगू के 416 मामले सामने आए, जिनमें सबसे अधिक मामले पटना में 177, मुंगेर में 33, सारण में 28, भागलपुर में 27 और बेगुसराय में 17 सामने आये। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के नेशनल सेंटर फॉर वेक्टर बोर्न डिजीज कंट्रोल के अनुसार, इस साल 17 सितंबर तक बिहार में डेंगू से सात मौतें हुई हैं। स्वास्थ्य विभाग के आंकड़ों के मुताबिक, पिछले साल कुल 13,972 मामले सामने आए थे। 30 सितंबर तक 12 सरकारी अस्पतालों में 295 लोगों का इलाज चल रहा था।

तमिलनाडु में बस हादसे में नौ की मौत, पीएम ने जताया शोक

नीलगिरी (तमिलनाडु)/एजेंसी। तमिलनाडु के पहाड़ी जिले नीलगिरि में शनिवार को एक पर्यटक बस के खाई में गिरने की घटना में नौ लोगों की मौत हो गई। पुलिस ने रविवार को बताया कि हादसे में घायल हुए लोगों में यह महिला भी शामिल थी और उपचार के दौरान उसने दम तोड़ दिया। शनिवार को तेनकासी जाने वाली एक पर्यटक बस खाई में गिर गई थी, जिससे उसमें सवार आठ यात्रियों की की मौत हो गई थी। बस के चालक ने वाहन पर से नियंत्रण खो दिया था, जिसके बाद बस खाई में जा गिरी थी।

जिला प्रशासन ने जारी किए फोन नंबर : जिला प्रशासन ने दुर्घटना की जानकारी के लिए एक फोन लाइन 1077 स्थापित की है। दुर्घटना के बारे में और जानकारी 04233-2450034 पर भी उपलब्ध रहेगी। बताया जाता है कि पीड़ित तेनकासी

जिले के कदयम के रहने वाले थे। जब यह घटना हुई तो तब वे घर लौट रहे थे। अधिकांश घायलों को कोयंबटूर के अस्पताल में भर्ती कराया गया है। मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने हादसे पर शोक व्यक्त किया है। उन्होंने मृतकों के परिजनों को दो-दो लाख और गंभीर रूप से घायल लोगों के इलाज के लिए एक-एक लाख रुपये की राहत राशि देने की घोषणा की है। इसके साथ ही, जिन लोगों को मामूली चोटें आई हैं, उन्हें 50 हजार रुपये दिए जाएंगे।

राष्ट्रपति ने जताया हादसे पर शोक : राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने रविवार को कहा कि तमिलनाडु के नीलगिरि जिले में बस दुर्घटना में लोगों की मौत बेहद दुखद है और उन्होंने शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदनाएं जताई। राष्ट्रपति ने घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की भी कामना की।

प्रधानमंत्री मोदी ने जताया शोक : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने तमिलनाडु के नीलगिरि में बस दुर्घटना में लोगों की मौत पर रविवार को दुख जताया और मृतकों के परिजन को दो-दो लाख रुपये का मुआवजा देने की घोषणा की। प्रधानमंत्री ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर लिखा, तमिलनाडु के नीलगिरि जिले के कुन्नूर के पास बस दुर्घटना में लोगों की मौत से दुखी हूं। मेरी संवेदनाएं शोक संतप्त परिवार के साथ हैं। मैं घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करता हूं।

राहुल गांधी ने हिंदू धर्म पर लिखा लेख सोशल मीडिया पर किया साझा

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने भय, धर्म तथा अन्य पिछड़े वर्ग (ओबीसी) की राजनीतिक चर्चा के बीच सत्यम, शिवम, सुंदरम नाम से एक लेख रविवार को सोशल मीडिया पर साझा किया जिसमें पूर्वाग्रह तथा भय से मुक्त होकर सत्य एवं अहिंसा के मार्ग पर चलकर सबको आत्मसात करना ही हिन्दू होने का एकमात्र रास्ता बताया गया है। श्री गांधी ने हिन्दू होने का मतलब दार्शनिक अंदाज में समझाते हुए कहा, एक हिंदू अपने अस्तित्व में समस्त चराचर को करुणा और गरिमा के साथ उदारतापूर्वक आत्मसात करता है, क्योंकि वह जानता है कि जीवन रुपी इस महासागर में हम सब डूब-उतर रहे हैं। भय का जिक्र करते हुए उन्होंने लिखा जिस व्यक्ति में अपने भय की तह में जाकर इस महासागर को सत्यनिष्ठा से देखने

का साहस है- वहीं हिंदू है। एक हिंदू में अपने भय को गहनता में देखने और उसे स्वीकार करने का साहस होता है। जीवन की यात्रा में वह भय रुपी शत्रु को मित्र में बदलना सीखता है। भय उस पर कभी हावी नहीं हो पाता, वरन घनिष्ठ सखा बनकर उसे आगे की राह दिखाता है। एक हिंदू की आत्मा इतनी कमजोर नहीं होती कि वह अपने भय के वश में आकर किसी किस्म के क्रोध,घृणा या प्रतिहिंसा का माध्यम बन जाए। श्री गांधी ने जीवन के अर्थ को परिभाषित करते हुए अपने लेख में लिखा, कल्पना कीजिए, जिंदगी प्रेम और उल्लास का, भूख और भय का एक महासागर है और हम सब उसमें तैर रहे हैं।इसकी खूबसूरत और भयावह, शक्तिशाली और सतत परिवर्तनशील लहरों के बीचोंबीच हम जीने का प्रयत्न करते हैं। इस महासागर में जहां प्रेम, उल्लास और अथाह आनंद है- वहीं भय भी है। मृत्यु का भय, भूख का भय, दुखों का भय, लाभ-हानि का भय, भीड़ में खो जाने और असफल रह जाने का भय। इस महासागर में सामूहिक और निरंतर यात्रा का नाम जीवन है जिसकी भयावह गहराइयों में हम सब तैरते हैं। इसलिए, क्योंकि इस महासागर से आज तक न तो कोई बच पाया है, न ही बच पाएगा। कमजोर वर्ग यानी ओबीसी की राजनीति को साधते हुए उन्होंने कहा हिन्दू धर्म कमजोरों की मदद कर और सबको आत्मसात करता है। एक हिंदू अपने अस्तित्व में समस्त चराचर को करुणा और गरिमा के साथ उदारतापूर्वक आत्मसात करता है। क्योंकि वह जानता है कि जीवन रुपी इस महासागर में हम सब डूब-उतर रहे हैं. अस्तित्व के लिए संघर्षरत सभी प्राणियों की रक्षा वह आगे बढ़कर करता है। सबसे निर्बल चिंताओं और बेआवाज चीखों के प्रति भी वह सचेत रहता है।निर्बल की रक्षा का कर्तव्य ही उसका धर्म है। सत्य और अहिंसा की शक्ति से संसार की सबसे असहाय पुकारों को सुनना और उनका समाधान ढूंढना ही उसका धर्म है।एक हिंदू में अपने भय को गहनता में देखने और उसे स्वीकार करने का साहस होता है।जीवन की यात्रा में वह भय रुपी शत्रु को मित्र में बदलना सीखता है।भय उस पर कभी हावी नहीं हो पाता, वरन घनिष्ठ सखा बनकर उसे आगे की राह दिखाता है।

तरूण प्रकाश बने पूर्व मध्य रेल के नए अपर महाप्रबंधक

पटना। पूर्व मध्य रेल के अपर महाप्रबंधक के पद पर शुक्रवार को तरूण प्रकाश ने पदभार ग्रहण किया। तरुण दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, बिलासपुर में प्रधान मुख्य सिगनल एवं दूरसंचार इंजीनियर के पद पर पदस्थापित थे। भारतीय रेल सिगनल सेवा 1988 बैच के अधिकारी को रेलवे में विभिन्न वरिष्ठ पदों पर कार्य करने का गहन अनुभव है। उत्तर रेलवे, उत्तर मध्य रेलवे एवं दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे में सिगनल विभाग के विभिन्न पदों पर कार्य किया है। साथ ही उत्तर रेलवे में मुख्य सिग्नल इंजीनियर एवं मुख्य संरक्षा अधिकारी तथा उत्तर रेलवे के मुरादाबाद मंडल में डीआरएम पद पर अपनी महत्वपूर्ण सेवा दे चुके हैं। श्री प्रकाश आईआईटी, रूड़की से इलेक्ट्रॉनिक एंड कम्यूनिकेशन में बीटेक तथा आईआईटी, दिल्ली से कंप्यूटर साइंस में एम.टेक. की शिक्षा प्राप्त की है।

समारोह | दिल्ली छावनी में रक्षा लेखा विभाग के 276वें वार्षिक दिवस समारोह में बोलें रक्षा मंत्री

भारत को 2047 तक विकसित राष्ट्र बनने के लिए और अधिक मजबूत सशस्त्र बलों की जरूरत : राजनाथ

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने रविवार को कहा कि भारत को 2047 तक विकसित राष्ट्र बनने के लिए आधुनिक उपकरणों से लैस और अधिक मजबूत सशस्त्र बलों की जरूरत है तथा उन्होंने सेना के तीनों अंगों द्वारा वित्तीय संसाधनों के प्रभावी उपयोग की आवश्यकता पर जोर दिया। सिंह ने दिल्ली छावनी में रक्षा लेखा विभाग (डीएडी) के 276वें वार्षिक दिवस समारोह में उसकी कई डिजिटल पहल की शुरूआत करने के बाद ये टिप्पणियां कीं। डीएडी को रक्षा वित्त का संरक्षक बताते हुए उन्होंने आंतरिक सतर्कता तंत्र मजबूत करने की आवश्यकता पर जोर दिया, ताकि किसी भी संदिग्ध गतिविधि का तुरंत पता लगाया जा सके। उन्होंने कहा कि इससे न केवल समस्या से तुरंत निपटने में मदद मिलेगी बल्कि रक्षा लेखा विभाग पर लोगों का विश्वास भी बढ़ेगा।

सिंह ने कहा, अगर हम एक विकसित राष्ट्र बनाना चाहते हैं तो हमें आधुनिक हथियार तथा उपकरणों से लैस मजबूत सशस्त्र सेनाओं की आवश्यकता होगी। अतः हमारे पास उपलब्ध वित्तीय संसाधनों का प्रभावी उपयोग करना आवश्यक है। उन्होंने कहा, सेवाओं की मांग और उपलब्ध संसाधनों के आवंटन में अच्छा संतुलन होना चाहिए। रक्षा मंत्री ने डीएडी को एक आंतरिक स्थायी समिति बनाने का भी सुझाव दिया जो बाजार के बारे में

अध्ययन कर सके और जमीनी स्तर पर काम कर रहे अधिकरियों को बाजार के बारे में उच्च गुणवत्ता वाली सूचना उपलब्ध करा सके। सिंह ने अपने भाषण में पारदर्शी और प्रभावी वित्तीय प्रणाली के जरिए देश की रक्षा क्षमताएं बढ़ाने में संगठन के प्रयासों के लिए उसकी प्रशंसा की। लेखाविधि को किसी संगठन, व्यक्ति और राष्ट्र के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण बताते हुए उन्होंने कहा, हमारी इच्छा असीमित है लेकिन उपलब्ध संसाधन सीमित हैं।

रक्षा मंत्री ने जिन डिजिटल पहल की शुरूआत की, उनमें रक्षा मंत्रालय के लिए एकीकृत रक्षा वित्त डैशबोर्ड झ सारांश (रक्षा मंत्रालय के लिए खातों, बजट और व्यय का सारांश) और बिस्वास (बिल सूचना और कार्य विश्लेषण प्रणाली तथा ई-रक्षा आवास) शामिल हैं। सिंह ने कई डिजिटल पहल शुरू करने के लिए डीएडी की प्रशंसा की। उन्होंने लगातार बदलते वक्त से पैदा हुई जटिलताओं से निपटने के लिए अपनी पेशेवर क्षमताओं को विकसित करने का आह्वान किया। रक्षा मंत्रालय के अनुसार, राजनाथ सिंह ने इस बात पर ध्यान दिये जाने पर जोर दिया कि किसी उत्पाद को खरीदने की जरूरत है या नहीं और क्या इतने ही या इससे ज्यादा प्रभावकारिता के साथ ऐसा ही उत्पाद बाजार में कहीं और कम दाम पर उपलब्ध है। उन्होंने कहा कि इस समझ से वित्तीय सलाह की गुणवत्ता भी बढ़ेगी। इसके लिए उन्होंने अनुभवी लोगों के साथ एक स्थायी समिति बनाने का भी सुझाव दिया। रक्षा मंत्री ने बाजार की शर्तों के विस्तृत अध्ययन के लिए उद्योग संघों और बिजनेस स्कूल से साझेदारी करने की भी सिफारिश की।

संक्षिप्त खबरें

भाजपा कार्यकताओं ने चलाया सफाई अभियान

फतुहा। शहर के कटैया घाट पर रविवार को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के जन्मदिन सेवा पखबाड़ा और महात्मा गांधी जंयती के पूर्व रविवार को सुबह भाजपा कार्यकताओं के द्वारा सफाई अभियान फतुहा नगर मंडल अध्यक्ष श्याम सुंदर केशरी के नेतृत्व में चलाया गया। मौके पर भाजपा के वरिष्ठ नेता मुन्ना सिंह, भाजपा के प्रदेश नेता सुनीता पासवान, रजनीश झा, नगर महामंत्री अरूण कुमार झा, नगर मंत्री शैलेश गुप्ता, मीडीया प्रभारी अभिषेक अग्रवाल, भाजयुमों अध्यक्ष सुरजीत कुमार सहित दर्जनों मौजूद रहे।

अंग्रेजी शराब के साथ दो युवक गिरफ्तार

दानापुर खगौल रेल स्टेशन के अंतर्गत रविवार को स्टेशन पर आरपीएफ के साथ विशेष चेकिंग क्रम में प्लेटफार्म नंबर वन ए सीआईबी कार्यालय दानापुर के पूर्व दो व्यक्ति को पकड़ा गया जिसके पास से दो पिंटू बैग को चेक करने पर अंग्रेजी शराब बरामद किया गया गिरफ्तार व्यक्ति चंदन कुमार उम्र 27 वर्ष पिता नागेंद्र सिंह ग्राम बखरा मधुबनी थाना सरैया जिला मुजफ्फरपुर कुणाल कुमार उम्र 18 वर्ष पिता अर्जुन कुमार सिंह ग्राम रेवा राठौर टोला थाना सरैया जिला मुजफ्फरपुर के रहने वाले हैं इन दोनों के पास से अंग्रेजी शराब बरामद की गई जीआरपी थानाध्यक्ष रणधीर कुमार ने बताया की ब्लेंडर्स प्राइस व्हिस्की 8 बोतल रॉयल स्टैग सुपीरियर चार बोतल रॉयल स्टैग बैरल रिलैक्स चार बोतल आफ्टर डार्क ब्लू ग्रीन व्हिस्की एक बोतल पिट्ठू बैग से बरामद किया गया मामले की जांच करने के बाद युवक को न्यायिक हिरासत में भेजने की तैयारी की जा रही है

रणवीर नंदन के भाजपा में लौटने पर किया स्वागत

पटना सिटी (प्राकि)। अखिल भारतीय कायस्थ महासभा के प्रदेश उपाध्यक्ष एवं पूर्व निगम पार्षद अवधेश कुमार सिन्हा, भाजपा नेता संजय सिन्हा, संजीव सिन्हा एवं रितेश कुमार ने डॉक्टर रणवीर नंदन के भाजपा में घर वापसी का स्वागत किया है ' इन नेताओं ने कहा कि श्री रणबीर पूर्णतः सनातनी हैं। इनका तालमेल गैर सनातनी के साथ हो ही नहीं सकता। इसलिए विरोधाभास होना स्वाभाविक है। भाजपा में पहले भी अनेक पदों पर दायित्वों का निर्वहन उन्होंने मजबूती के साथ किया है, इसलिए पार्टी को इनसे लाभ मिलेगा।

वृद्धजनों ने साझा किया सुख-दुख

पटना सिटी (प्राकि)। वरिष्ठ नागरिक मंच की बैठक अल्पसंख्यक आयोग के पूर्व उपाध्यक्ष सरदार चरण सिंह की अध्यक्षता में हुई। संचालन जयकृष्ण प्रसाद चंद्रवंशी ने करते हुए अंतरराष्ट्रीय वृद्ध दिवस पर आपस में सुख-दुख साझा किया। इसमें रेलवे में वरीय नागरिकों का आरक्षण में कोटा, टिकट में रियायत, और तीर्थस्थल भ्रमण कराने, पेंशन राशि हजार रुपया करने, वृद्धाश्रम बनाने समेत अन्य मांगों को उठाया गया। बैठक में शिवलाल शर्मा, राजेंद्र प्रसाद यादव, सच्चितानंद शर्मा, बैद्यनाथ महतो, बालेश्वर प्रसाद चंद्रवंशी, ललिता देवी, लक्षमीनिया देवी आदि उपस्थित थे।

गुजरता गद्दी पर रखा गया अखंड पाठ

पटना सिटी (प्राकि)। तख्तश्री हरिमंदिर जी पटना साहिब में द्वितीय गुरु श्री अंगद देव जी की गुरुता गद्दी दिवस पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब का अखंड पाठ अतिरिक्ति मुख्य ग्रंथी ज्ञानी दिलीप सिंह की देखरेख में रखा गया। रविवार को रखें गए अखंड पाठ का समापन मंगलवार को होगा। उसी दिन विशेष दीवान सजेगा। इसके अलावा प्रथम गुरु श्री नानकदेव जी महाराज के ज्योति जोत पर्व पर नौ अक्तूबर को विशेष दीवान सजेगा। इसे लेकर तैयारी की जा रही है।

अध्यक्ष ने मैनेजर हरजीत को दी अतिरिक्त जिम्मेदारी

पटना सिटी (प्राकि)। तख्तश्री हरिमंदिर जी प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष जगजोत सिंह सोही ने मैनेजर हरजीत सिंह को अतिरिक्त जिम्मेदारी सौंपी है। श्री सोही के हस्ताक्षर से जारी पत्र में मैनेजर हरजीत सिंह को कहा गया है कि अपनी जिम्मेवारी के साथ-साथ नोटिस मिलने के बाद संगत की सुविधा को ध्यान में रखते हुए लंगर और नाश्ता लंगर से संबंधित कार्य, सफाई से संबंधित कार्य और चल रही कारसेवा से संबंधित काम आदि की जिम्मेवारी आप निभाएंगे। यह भी कहा गया कि इस संबंध में आप और बेहतर मैनेजर एवं कार्य करने के संबंध में योग्य कार्रवाई करेंगे।

बापू के स्वच्छ भारत के सपने को साकार कर रहे पीएम मोदी : नंदकिशोर

खाजेकलां घाट व अनेक स्थान पर चला स्वच्छता अभियान

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

भाजपा के वरिष्ठ नेता एवं पटना साहिब विस क्षेत्र के विधायक नंदकिशोर यादव के नेतृत्व में रविवार को खाजेकलां घाट पर स्वच्छता अभियान चलाया गया। इसमें श्री यादव के अलावा अमित सिंह, राजेश राय, प्रभाकर मिश्र, नितिन कुमार, मुरारी राय, विनय केसरी, राजेश साह, सुजीत गुप्ता, संतोष ठाकुर, शशिकांत शुक्ला, सुमित कुमार, सज्जन ठाकुर, मनोरंजन सिंह, मुकेश कसेरा, संजय कसेरा, विकास गुप्ता, अभय कु अतुल सहित पार्टी के पदाधिकारी व कार्यकताओं ने भाग लिया। झाड़ू, बेलचा, हाथ ठेला गाड़ी व सफाई के अन्य उपकरणों से लैस भाजपा कार्यकताओं की टोली ने विधायक श्री यादव के नेतृत्व में सफाई कार्य किया। घाट पर झाड़ू लगाई, कचरे को हटाया व ठेला गाड़ी पर लाद दूर फेंका। मौके पर विधायक नंदकिशोर यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आह्वान पर देशव्यापी स्वच्छता अभियान गांधी जयंती के एक दिन पूर्व चलाया गया। यह अभियान वास्तव में राष्ट्रपिता के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है। इधर पटना सहिब स्टेशन पर भी सफाई अभियान की कमान स्टेशन मास्टर उपेंद्र कुमार संभाल रखे थे। यहां डीईईओ टीआरडी विनीत गुप्ता, एसईई टीआरपी एसके राम, मृत्युंजय कुमार, संतोष कुमार, नितिन व्यास, तख्तश्री कमेटी के महासचिव इंद्रजीत सिंह, अधीक्षक दलजीत सिंह, प्रबंधक दिलीप सिंह पटेल आदि ने स्टेशन परिसर और बाहर में अभियान चलाया। सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय भारत सरकार द्वारा श्रमदान का आयोजन गायघाट सब्जी मंडी से अशोक राजपथ तक किया गया। महात्मा गांधी सेतु के समानांतर नया सेतु का निर्माण कराया जा रहा है। स्वच्छता कार्यक्रम में कार्यपालक अभियंता मो. शादाब इमाम, जयशंकर, दीपक कुमार, विकाश मिश्रा एवं दुर्गा मंदिर गायघाट परिवार के ओर से विजय कुमार, गंगाधर गिरी, मोहन प्रसाद, गोपाल कुमार, छोटू गिरी, रश्मि भारती के साथ आमजनों ने सहयोग दिया। पाटलिपुत्रा नगर विकास समिति के सदस्यों रितेश कुमार बबलू, अंजनी कुमार, गौरभ पोद्दार, छोटे भैया ने सुबह साढ़े चार बजे से बकरी मंडी से रामपुर संप हाउस तक करीब आधा किमी तक सफाई अभियान चलाया। समिति द्वारा लगाए गए पेड़-पौधों को पानी डाल सींचते हुए देखभाल की गई। समिति अपने क्षेत्र के लिए सजग है और यह अभियान क्षेत्र मे लगातार जारी रहेगा।सती सावित्री सत्यवान मंडल में अध्यक्ष अखिलेश मेहता की अध्यक्षता में महानगर उपाध्यक्ष सुरेश सिंह पटेल, दिलीप पासवान, ओमनाथ मंडल, कमलकांत शर्मा, सूरज ठाकुर, नरेश मनीष मिश्र। आदि शामिल थे। भाजपा किसान मोर्चा के प्रदेश उपाध्यक्ष संजीव यादव की अध्यक्षता में मंगल तालाब परिसर में भी स्वच्छता अभियान चलाया गया। चौक मंडल में अध्यक्ष नवल किशोर सिन्हा, अमित कानोडिया, रामनाथ सुमन, सुनीता गुप्ता, नित्यानंद चंद्रवंशी, दयानंद ने मंगल तालाब परिसर में चलाया। स्वच्छता अभियान के तहत अगमकुआं स्थित राजेंद्र स्मारक चिकित्सा विज्ञान अनुसंधान संस्थान में निदेशक डॉ कृष्णा पांडेय की अध्यक्षता में स्वच्छता अभियान चला पौधारोपण किया गया। केंद्रीय होम्योपैथी अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली की चिकित्सा सत्यापन इकाई होम्योपैथी की ओर से श्री गुरु गोविंद सिंह अस्पताल परिसर और मितन घाट में अभियान प्रभारी अधिकारी डॉ केके अविनाश की अध्यक्षता में चला। इसमें नोडल पदाधिकारी अमन जी, कार्यालय अधीक्षक गोपाल मिस्त्री, पार्षद प्रतिनिधि संजीव कुमार उर्फ लड्डू चंद्रवंशी, वीरेंद्र कुमार आदि शामिल हुए। गुलजारबाग स्टेशन पर स्टेशन प्रबंधक बिंदू कुमार की देखरेख में अभियान चला। अगमकुआं स्थित क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान के द्वारा शीतला माता मंदिर में श्रमदान कर मंदिर परिसर में स्वच्छता अभियान में संस्थान के प्रभारी, डॉक्टर व कर्मी शामिल थे।

दशहरा पर दुबई का बुर्ज खलीफा पर तिरंगा लहराता तोरण द्वार दिखेगा

प्रात :किरण संवाददाता

पटना सिटी। सऊदी अरब के शहर दुबई में बुर्ज खलीफा को स्वतंत्रता दिवस के दिन तिरंगा से सजाया गया था। यह हर भारतीयों को सऊदी अरब के द्वारा सम्मान दिया गया। उसी सम्मान का ख्याल रखते हुए इस बार दशहरा के अवसर पर श्रीश्री बड़ी दुर्गा पूजा समिति, टेढ़ी घाट अशोक राजपथ के मच्छरहट्टा के पास बुर्ज खलीफा तोरण द्वार के रूप में पेश करेगी। जिस पर तिरंगा लहराता दिखेगा। यह बात प्रेस कांफ्रेंस के दौरान समिति के अध्यक्ष प्रभाकर मिश्रा, महासचिव सज्जन कुमार और कोषाध्यक्ष विवेक कुमार ने रविवार को कही। इस दौरान बताया गया कि इसकी ऊंचाई सड़क से करीब 80 फीट होगी। टेढ़ी घाट के पूर्वी छोर पर देवी द्वार दशार्या जाएगा। समिति पिछले 90 साल से पूजा का आयोजन करती आ रही है और तरह-तरह के तोरण द्वार लोगों के समक्ष पेश करती रही है। यह सब पश्चिम बंगाल के चंदन नगर के मशहूर बिजली डेकोरेटर सौरभ शाह के द्वारा किया जा रहा है। माता की विधिवत पूजा कलश स्थापना के दिन से शुरू होकर नवमी तक होती है। सप्तमी के दिन माता का पट भक्तों के दर्शनार्थ खुलता है। महाअष्टमी को निशा आरती होती है और महाप्रसाद के रूप में माता को खिचड़ी का भोग लगाया जाता है। महानवमी को विधि-विधान के अनुसार हवन के बाद माता को हलवा, पुरी और चना का भोग लगाया जाता है। अष्टमी और नवमी के दिन श्रद्धालुओं की खासा भीड़ भगवती दुर्गा देवी की प्रतिमा और सजावट देखने के लिए उमड़ती है। नौ दिन की पूजा के बाद एकादशी के दिन भव्य विसर्जन शोभायात्रा के साथ भगवती दुर्गा देवी को विदाई दी जाती है। शांति पूजा के बाद आसपास के सभी प्रतिष्ठानों एवं घरों तक प्रसाद वितरण किया जाता है। संवाददाता सम्मेलन के दौरान राजीव यादव, चंदन पटेल, अजय ठाकुर, परम यादव, जूली रजक, चंदन यादव, राज गर्ग, टिंकू मालाकार, कर्मवीर कुमार, शुक्ला राम आदि मौजूद थे।

कब तक नारकीय जीवन जीने को मजबूर रहेगी जनता

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

भारतीय जनता पार्टी बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ पटना महानगर के संयोजक संजय चंद्रवंशी ने वार्ड 60 के मोगलपुरा पीपल तल में महीनों से रहे जलजमाव पर चिंता जताई है। इससे निबटने के लिए पटना नगर निगम के आयुक्त से पुनः आग्रह किया गया है। उन्होंने बताया कि लोग परेशान, हताश और निराश हैं। सड़कों पर गंदे पानी में घुस कर आना और जाना पड़ता है, लेकिन इस समस्या के समाधान के लिए कोई आगे नहीं आ रहा है। स्कूल-कालेज जाने वाले छात्र उसी नाले के पानी के बीच से जा रहे हैं। बीमार, बुजुर्ग, महिलाओं, दिव्यांग को अधिक परेशानी है। संजय ने बताया कि अनेक बार नगर आयुक्त को इस समस्या से अवगत कराया गया है, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं की गई। हिंदुओं का पर्व दुगार्पूजा, दिवाली, छठ कुछ दिनों में शुरू होगा। ऐसे में उन सबों की आस्था को खासा ठेस पहुंचेगी। अजीमाबाद अंचल के वार्ड वार्ड 60 की समस्या से छोटी बाजार, टिकिया टोली, शेखा का रोजा, जलवा टोली, छत्ता तल के निवासियों के लिए एकमात्र रास्ता मोगलपुरा पीपल तल से होकर अशोक राजपथ एवं श्री गुरु गोविंद सिंह अस्पताल जाती है। उसी रास्ते से हजारों की संख्या में स्कूली बच्चे आते-जाते हैं। मरीजों को भी उसी रास्ते से जाना होता है। पास में ही पीपल तल में स्थित सरकारी स्कूल महिला चरखा विद्यालय में सैकड़ों की संख्या में छात्रा पढ़ाई करने उसी नर्क से होकर गुजरती हैं। अब तो इस विकराल समस्या के कारण छात्राएं स्कूल जाने से कतराने लगी हैं। इधर लगातार हो रही बारिश से भी जलजमाव की स्थिति कायम है। बरसात से पाटी गली की स्थिति भी ठीक नहीं है। यहां भी लोगों को नाला के पानी के बीच से ही गुजर कर हर काम करना मजबूरी बन गया है।

अवैध बालू कारोबारी के बीच फायरिंग मैं 9 लोग गिरफ्तार

दानापुर। दानापुर नगर के मनेर थाना क्षेत्र के अंतर्गत शनिवार को सूअरमरवा गांव में देर रात पुलिस और अवैध बालू कारोबारी के बीच फायरिंग हुई।दोनों ओर से हुई फायरिंग होने से आसपास के लोगों में दहशत व्याप्त हो गई।आधा पौन घंटे हुई फायरिंग के बाद पुलिस ने घेराबंदी करते हुए नौ लोगों को गिरफ्तार करते हुए एक बंदुक,एक राइफल, 213 गोली, दस मोबाइल बरामद किया। जबकि मुख्य सरगना उमाशंकर राय उर्फ सिपाही राय समेत नौ लोग भागने में सफल रहे।

सिटी एसपी पश्चिम राजेश कुमार ने संवाददाताओं को बताया कि शनिवार को देर रात में गुप्त खबर मिली कि सुअरमरवा घाट पर सिपाही राय,अनिश कुमार,अमर कुमार के गैंग द्वारा अवैध बालू खनन व परिवहन को लेकर अवैध वसूली और रंगदारी ली जा रही है। जिसको देखते हुए एएसपी अभिनव धीमान के नेतृत्व में घाट पर छापेमारी की गई।पुलिस बल को देखते हुए गैग के लोगों ने अंधाधुंध फायरिंग करने लगे।

करें रक्त का दान व बचाएं लोगों की जान : नंदकिशोर

रेडक्रॉस सोसाइटी व तेरापंथ युवक परिषद ने किया आयोजन

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

इंडियन रेडक्रॉस सोसायटी की पटना सिटी शाखा के द्वारा सेवा पखवारा के तहत रविवार को रेडक्रॉस भवन के परिसर में आयोजित रक्तदान शिविर का उद्घाटन पूर्व मंत्री सह विधायक नंदकिशोर यादव ने किया। उन्होंने कहा कि रक्तदान से बढ़कर आज कोई बड़ा दान नहीं है। लोगों के द्वारा किए गए रक्तदान से किसी गंभीर मरीज को जीवन मिल सकता है, उसकी जान बचाई जा सकती है। आज विभिन्न तरह की बीमारियों का प्रकोप बढ़ा है, जिसमें खून की जरूरत लगभग बढ़ गई है। ऐसे में जरूरत है कि मांग के अनुरूप लोग आगे बढ़कर रक्त का दान करें और लोगों की जान बचाएं। शाखा के चेयरमैन गोविन्द कानोडिया ने बताया कि इसमें युवा, बच्चे एवं बच्चियों ने बढ़-चढ़कर कर हिस्सा ले समाज में जागरुकता पैदा करने का काम किया। रक्तदान करने वालों में शैलजा गोयनका, तुलसी ड्रोलिया, स्नेहा जैन, रचना कुमारी, संगीता जैन, संजय ड्रोलिया, राजकुमार गोयनका, संजय बूबना, ब्रजेश कुमार, नवीनत कानोडिया, प्रफुल्ल पांडेय, गिरधर कानोडिया, प्रशांत बागला, राजेश कानोडिया, मनीष सिन्हा, विष्णु ड्रोलिया, मंगल सिंह आदि थे। शिविर के संयोजक डॉ विमल कारक, सचिव सुमन पोद्दार, नरेश सुल्तानिया, अमित कानोडिया, अशोक राजगढ़िया, प्रभाकर मिश्रा, राकेश ड्रोलिया, कृष्णा सर्राफ, रविशंकर आदि का सहयोग रहा। दूसरी ओर अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद की सिटी शाखा तेरापंथ युवक परिषद के द्वारा चौक स्थित भामाशाह ट्रस्ट भवन एवं हाजीगंज के कलाबिंद अपार्टमेंट में किया गया। संस्था को आशीर्वाद देने के लिए पतंजलि योगपीठ के प्रसिद्ध आयुर्वेदिक एवं एक्यूप्रेशर चिकित्सक डॉ नितेश कुमार ने जैन णमोकार महामंत्र के उच्चारण के साथ शिविर का उद्घाटन किया। उन्होंने रक्त की अनेकानेक बातें लोगों को समझाए। साथ ही कहा कि ऐसे कार्य निरंतर होते रहना चाहिए। मानव सेवा में रक्तदान से बड़ा आज कोई कार्य नहीं है। आज की सामाजिक स्थिति में जहां एक ओर लोग एक-दूसरे के खून के प्यासे हैं, वहीं तेरापंथ युवक परिषद रक्तदान कर लोगों को हिंसा के क्षेत्र से दूर होने का संदेश भी दे रही है। उन्होंने अपनी शुभकामनाएं तो दी और कहा जब भी संस्था को उनकी आवश्यकता होगी, वह हर तरह से मदद को तैयार हैं। तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष अरिहंत चौरड़िया ने रक्तदान की विशेषता बताई और डॉ नितेश के बारे में उन्होंने कहा कि आज के इस युग में आयुर्वेद को जीवंत करने का प्रयास सराहनीय है। कार्यक्रम में विशाल डुगर, विकास जैन, नितेश जैन, चेतन चंडालिया, सिद्धार्थ घोड़ावत, अरिहंत गोलछा और जैन श्वेतांबर तेरापंथ सभा पटना सिटी के अध्यक्ष बसंत सिंघी, महिला मंडल से सोनू गोलछा, सरिता दुग्गड़ एवं मीडिया प्रभारी विकास वैद आदि मुख्य रूप से सम्मिलित हुए।

भारतीय सूढी उत्थान संगठन की साप्ताहिक बैठक संपन्न

महिलाओं को मुहिम पर साथ लाने पर दिया गया जोर

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

पटना सिटी। भारतीय सूढी उत्थान संगठन पटना बिहार रविवार को कन्हैयालाल धर्मशाला चुटकिया बाजार नगला में ससमय मनोज जी की अध्यक्षता में हुई।

एक ही उद्देश्य अति पिछड़ा वर्ग में लाने हेतु संघर्ष एवं विचार विमर्श किया गया। अध्यक्ष विनोद शौण्डिक ने सूढी समाज के एकता मंच के इस कार्यक्रम में महिला शक्ति को भी शिक्षा,मेडिकल, अन्य कार्यक्रम में शामिल करने की बात कही। महिला शक्ति को इस क्रांतिकारी मुहिम में आने के लिए दो पंतिया भी समर्पित की । "सर उठाकर जीना तेरा स्वाभिमान है। अदम्य उत्साह ही तेरी पहचान है। तेरी ललकार से तुफान थम जाते है यूवा तू महान है तू महान है।" महासचिव दिलीप कुमार ने अपनी बातो को रखते हुए कहा की हमें अपने समाज के घर घर जाकर लोगों से मिलकर जनांदोलन की ओर अग्रसर करना होगा। तभी भविष्य में एक विशाल जनसभा का रूप रेखा तैयार हो पाएगा। संरक्षक डॉ अविनाश प्रसाद हर संभव प्रयास कर लोगों से अपील कर एक नई दिशा दी। कोषाध्यक्ष महेंद्र प्रसाद सत्येंद्र नारायण, महावीर, बैजनाथ, अभय नारायण, उमेश, धीरज,डोमन जी सुमन नागेन्द्र पवन, अजीत हरि जी कुंदन, रवि शंकर,राजा गुप्ता, दिपक राजा कुमार , रमाकांत, अन्य लोग उपस्थित हुए।

जनपक्षधरता से ही रचनाएं बनती हैं कालजयी : जियालाल आर्य

जन लेखक संघ बिहार राज्य का पंचम वार्षिक सम्मेलन संपन्न

पटना, प्रात :किरण संवाददाता

भारतीय प्रशासनिक सेवा के अवकाशप्राप्त अधिकारी, वरिष्ठ लेखक व साहित्यकार जियालाल आर्य ने कहा है कि लेखक की जनपक्षधरता ही उसकी रचना को कालजयी बनाती है। सच्चा लेखक- साहित्यकार वही है, जो स्वांतः सुखाय के बजाए जन सरोकार से जुड़े मुद्दों को लेखन में प्राथमिकता देते हैं और सामाजिक विसंगतियों पर कठोरता से प्रहार करते हैं कवे कभी जनता के पथ प्रदर्शक के रूप में, तो कभी सत्ता के शीर्ष पर बैठे लोगों को ललकार कर आम आदमी की जनाकांक्षाओं को पूरा करने में सहयोगी बनते रहे हैं कवे रविवार को कालिदास रंगालय स्थित अनुसूइया सभागार में जन लेखक संघ के बिहार राज्य के पंचम वार्षिक सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए राज्य के विभिन्न जिलों से आए लेखक व साहित्यकारों को संबोधित कर रहे थे। कपूर्री ठाकुर साहित्य शिखर सम्मान, डॉ बीआर अम्बेडकर सम्मान, हिन्दी रत्न और नई धारा रचना सम्मान से सम्मानित श्री आर्य ने कहा कि गांव - कसबों में भी स्तरीय और उपयोगी साहित्य लिखा जा रहा है। जरूरत है ऐसे रचनाकारों को मुख्यधारा से जोड़ने की। संघ के राष्ट्रीय महासचिव महेंद्र नारायण पंकज ने कहा कि समतामूलक समाज के निर्माण में लेखक व साहित्यकारों की अहम भूमिका है। लेखकों को यह जिम्मेदारी निर्भीकता से उठानी होगी। जयपुर के साहित्यकार हरदान हर्ष ने कहा कि विसमतामूलक समाज में शोषण के विरुद्ध साहित्य प्रतिरोध का स्वर है। अध्यक्षता करते प्रदेश अध्यक्ष डॉ ध्रुव कुमार ने कहा कि साहित्य का मूल स्वर प्रतिरोध ही है और यह समतामूलक समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। कबीर, रैदास, महात्मा फूले और डॉ अम्बेडकर से हमें प्रेरणा लेनी होगी। जन लेखक संघ की वार्षिक पत्रिका जन आकांक्षा का अतिथियों ने लोकार्पण किया। इस दौरान लघु कथाकार व चित्रकार सिद्धेश्वर, सुबोध कुमार नंदन, प्रभात कुमार धवन, डॉ सुनील कुमार प्रियबच्चन, अमलेंदु अस्थाना, डॉ लीना, डॉ अनुजा अमेरी, मो नसीम अख्तर, एआर हाशमी, डॉ नम्रता कुमारी, जयपुर के हरदान हर्ष एवं कटिहार के मुल्कराज आनंद को उनकी उत्कृष्ट साहित्य साधना एवं सेवा के लिए सम्मानित किया गया। सम्मेलन में मधेपुरा के बृज किशोर यादव, भारतीय सूचना सेवा के वरिष्ठ अधिकारी संजय कुमार, चितरंजन भारती, अनिल रश्मि, डॉ लीना, श्रीकांत व्यास, आलोक चोपड़ा, हाजीपुर के सुधांशु कुमार चक्रवर्ती ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

दानापुर मंडल में किया गया स्वच्छता के लिए एक घंटे का श्रमदान

दानापुर खगौल। रविवार को स्वच्छता पखवाड़े के अंतर्गत दानापुर स्टेशन पर स्वच्छता ही सेवा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर टछउ निवेदिता सिंह, मंडल रेल प्रबंधक जयंत कुमार चौधरी के साथ दानापुर मंडल के सभी शाखा अधिकारी , ठ्रूड के सदस्य बड़ी तादाद में रेल कर्मचारियों की उपस्थिति रहे। वहीं नीजी स्कूल तथा केंद्रीय विद्यालय के बच्चों द्वारा पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छता मिशन तथा स्वच्छता ही सेवा के थीम पर कई कार्यक्रम प्रस्तुत किये। बच्चों द्वारा स्वच्छता गीत,स्वच्छता नृत्य तथा हमारा पर्यावरण नाम से एक बहुत ही शिक्षाप्रद नुक्कड़ नाटक का मंचन किया गया। निवेदिता सिंह टछउ, जयंत कुमार चौधरी मंडल रेल प्रबंधक एवं सभी शाखा अधिकारियों, स्काउट गाइड तथा एनजीओ के सदस्यों द्वारा एक घंटे का श्रमदान दानापुर स्टेशन के रेल परिसर यार्ड में किया गया।

कुशवाहा समाज का प्रशिक्षण सह सम्मान समारोह संपन्न

समाज के विकास के लिए एकता की जरूरत : नागमणि

प्रात :किरण संवाददाता

पटना। अखिल भारतीय युवा कुशवाहा समाज (भारत) के तत्वाधान में आयोजित पदाधिकारियों का प्रशिक्षण सह सम्मान समारोह राजपुर खुर्द में आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता व संचालन दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष जितेंद्र कुशवाहा ने किया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि नागमणि कुशवाहा राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिल भारतीय युवा कुशवाहा समाज(भारत) ने कहा कि किसी भी समाज का विकास तभी हो सकता है जब वह संगठित होगा। हमें अपनी ताकत का एहसास नहीं है जिस दिन हम लोगों को इसका एहसास होगा उस दिन कोई भी परिणाम प्राप्त कर सकते हैं साथ ही कहा कि हमारे पूर्वजों ने इतने लंबे समय तक शासन किया, फिर भी हम उस मुकाम तक नहीं पहुंच रहे हैं। इसके लिए जनचेतना जगाने का प्रयास करना चाहिये। राष्ट्रीय सचिव(संगठन) जयप्रकाश मौर्या ने कहा कि संगठन समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचकर उनकी प्रत्येक समस्याओं का समाधान करने का प्रयास करेगा। प्रदेश अध्यक्ष, बिहार हरिओम कुशवाहा ने कहा कि कुशवाहा जाति के लोगों शिक्षित,संगठित होने पर जोर दें। दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष जितेंद्र कुशवाहा ने समाज के विकास पर व्यापक चर्चा की साथ ही समाज की एकजुटता पर बल देते हुए कहा कि समाज के सम्मान के लिए यदि सड़को पर संघर्ष करना होगा तो किया जाएगा। आए हुए अतिथियों का स्वागत फूल मालाओं एवं अंगवस्त्र देकर किया गया। मौके पर दिल्ली प्रदेश के गठित नव मनोनीत पदाधिकारियों को मनोयन पत्र दिया गया है।इस अवसर पर राष्ट्रीय सचिव सौरभ कुशवाहा, राष्ट्रीय आई टी प्रभारी राज कुशवाहा,शिवचंद्र महतो ,हेमंत कुशवाहा,मुकेश मौर्या,सुशील कुशवाहा, राकेश कुशवाहा,राघवेंद्र कुशवाहा, नरेंद्र कुशवाहा,सुनील कुमार कुशवाहा,सौरभ सक्सेना,समेत सैकड़ो गणमान्य सदस्य उपस्थित हुए।

एल्युमिनाई मीट: पुरानी यादों को दोबारा जीने की तमन्ना लिए मिले पुराने दोस्त, खूब हुआ याराना

प्रात :किरण संवाददाता

दानापुर। खगौल नगर के सीनियर सेकेंडरी स्कूल मे एल्युमिनाई मीट का आयोजन किया गया जिसमें पूर्व छात्र गर्मजोशी से गले मिलकर भावुक हो गए। उसके बाद शुरू हुआ छात्र जीवन की यादों को ताजा करने का सिलसिला। वह यादें जो वर्षो से दिल में संजोए हुए थे। यह दृष्य था ईस्ट सेन्ट्रल रेलवे सीनियर सेकेन्ड्री स्कूल, दानापुर का। रविवार को एल्युमिनाई मीट का शुभारंभ दानापुर रेल मंडल के मंडल रेल प्रबंधक जयंत चौधरी, डीएफसीसीआईएल के जीएम एचआर सह स्कूल के पूर्ववर्ती छात्र मनीष चन्द्र, सीनियर डीपीओ अशोक कुमार एवं प्राचार्य ज्ञानेश्वर ने द्वीप प्रज्वलित कर किया। इस मौके पर पूर्ववर्ती छात्रों द्वारा लिखित स्मारिका का विमोचन करते हुए रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुति किया गया। जिसमे पूर्ववर्ती छात्रों द्वारा संगीत के साथ नाटक 'बापू की हत्या हजारवी बार' की भी प्रस्तुति की गई। दिनभर चले इस कार्यक्रम में एक से बढ़कर एक कार्यक्रम की प्रस्तुति में मौजूद छात्रों ने खूब मस्ती की। एल्युमिनाई मीट के अध्यक्ष सुशील कुमार ने बताया कि रेलवे स्कूल 134 वर्ष पुराना है। 1955 से लेकर 2023 तक के पास आउट 500 से अधिक छात्र देश व विदेशों से आकर एक जगह इकट्ठा हुए है। कई वर्षो से बिछड़े दोस्तों के इस पुनर्मिलन समारोह ने सबको भावुक कर दिया। यह स्कूल की बहुत बड़ी उपलब्धि है। इस एलुमिनाई मीट में शामिल होने वाले सबसे वरिष्ठ पूर्व छात्र ने 68 वर्ष पूर्व मैट्रिक पास किया था। स्कूल के गोल्डेन जुबिली, सिल्वर जुबिली और डिकेड बैच के छात्रों में स्कूल के दिनों जैसा उत्साह देखने को मिला। कार्यक्रम के दौरान रह-रह कर उनके बीच से उठ रही उल्लासपूर्ण गूंज इस उत्साह की गवाही थी।

वे सभी उस समय क्लासरूम के दौरान की गई हंसी-ठिठोली वाली गतिविधियों की चर्चा करते रहे। सेल्फी के जरिये यादों को संजोने का सिलसिला भी खूब चला।

गांधी जयंती के अवसर पर आगाज कार्यक्रम का होगा योजना : डायरेक्टर

छपरा। गांधी जयंती के अवसर पर शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी संस्था अवंती क्लासेज द्वारा सात दिवसीय आगाज कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें १३ अलग-अलग इवेंट में संस्थान के 1000 छात्र- छात्राएं शामिल होंगे। रविवार को शहर के हरिमोहन गली स्थित अवंती क्लासेज के डायरेक्टर कुमार सौरभ ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में दी। प्रेस मीडिया को जानकारी देते हुए डायरेक्टर कुमार सौरभ ने बताया कि संस्थान द्वारा अगले साल भी इस तरह का कार्यक्रम आयोजन किया गया था। जिसका परिणाम बेहतर आया था, अवंती क्लासेज द्वारा इस बार भी गांधी जयंती के अवसर पर आगज कार्यक्रम का शुभारंभ किया जा रहा है ' इस तरह के कार्यक्रम का आयोजन का मुख्य उद्देश्य शिक्षा के साथ -साथ छात्रों में छुपी अंदर की प्रतिभाओं को सामने लाना है ' उन्होंने कहा कि संस्थान छात्रों को एक प्लेटफार्म उपलब्ध करा रही है, इसके माध्यम से हुनममंद छात्रों को स्किल निखारने का अवसर मिलेगा। डायरेक्टर कुमार सौरभ ने मीडिया को यह भी बताया कि आगज कार्यक्रम 6 दिन अवंती क्लासेज के सभागार में चलेगा। जबकि कार्यक्रम का फाईनल 8 अक्टूबर को डाक बंगला रोड स्थित राजकीयकृत कन्या उच्च विद्यालय के प्रांगण में बने नई ऑडिटोरियम के सभागार में होगा।

नीतीश कुमार ने जननायक के अधूरे सपनों को किया पूरा : उमेश

प्रदेश अध्यक्ष ने बांका जिले में आयोजित कर्पूरी चर्चा कार्यक्रम को किया संबोधित

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

जदयू के प्रदेश अध्यक्ष उमेश सिंह कुशवाहा ने कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने अपने 18 वर्षों के शासनकाल के दौरान जननायक के अधूरे सपनों को पूरा करने का काम किया है। सामाजिक न्याय के साथ समावेशी विकास की अवधारणा को केंद्रबिंदु मानकर उन्होंने समाज के शोषित, वंचित और कमजोर वर्गों को विकास की मुख्यधारा में जोड़ा है। प्रदेश अध्यक्ष ने रविवार को बांका जिला के धौरैया विधानसभा में जनता दल यू द्वारा एकदिवसीय कपूर्री चर्चा कार्यक्रम को संबोधित किया। इस अवसर पर श्री कुशवाहा ने कहा कि नीतीश कुमार ने अतिपिछड़ा समाज को सशक्त बनाने के लिए शिक्षा के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण योजनाएं की शुरूआत की जिसका परिणाम है कि आज अतिपिछड़ा समाज की बेटे-बेटियां अपनी योग्यता का परचम पुरे देश में लहरा रही है। सात निश्चय योजना के तहत भी अतिपिछड़ा समाज के टोलो और मोहल्ले को पक्की सड़कों के साथ जोड़ा गया, उनके घरों तक शुद्ध पेयजल पहुंचाया

बोलें- भाजपा को केंद्र की गद्दी से हटाने का लेना है प्रण

गया। उन्होने कहा कि बीते 12 वर्षो के अंतराल में पिछड़ा-अतिपिछड़ा कल्याण बजट 42 करोड़ से बढ़कर 20 अरब के करीब पहुंच गया है। यह रिकॉर्ड वृद्धि दशार्ता है कि हमारे नेता पिछड़ा और अतिपिछड़ा समाज को सशक्त बनाने के लिए कितने संवेदनशील और गंभीर हैं। साथ ही प्रदेश अध्यक्ष ने भाजपा पर भी तीखा हमला बोलते हुए कहा कि भाजपा ने देश की भोली-भाली जनता को ठगने का काम किया है। केंद्र में प्रधानमंत्री मोदी की सरकार बनने के बाद केवल चंद उद्योगपतियों एवं पूंजीपतियों के ही अच्छे दिन आए हैं। मोदी सरकार को देश के गरीबो, किसानों, महिलाओ, युवाओं और छोटे व्यापारियों की कोई चिंता नहीं है। भारतीय जनता पार्टी को केवल सत्ता की भूख है, और अब देश की जनता भी इस बात को समझ चुकी है। श्री नीतीश कुमार की अगुवाई में बने इंडिया गठबंधन पूरे देश से पार जनसमर्थन प्राप्त हो रहा है और भाजपा इसी बात से घबराई हुई है। प्रदेश अध्यक्ष ने कहा की भाजपा अगर पुनः केन्द्र की सत्ता में आती है तो अनुसूचित जाति, जनजाति और पिछड़ा समाज के आरक्षण को हमेशा के लिए खत्म कर दिया जाएगा इसलिए हमें 2024 में सजग और सतर्क रहने की आवश्यकता है। हम सभी को मिलकर देशहित के लिए भाजपा को केंद्र की गद्दी से हटाने का प्रण लेना है। इतिहास गवाह है, बिहार जब-जब अंगड़ाई लेता है देश की राजनीति अपना रुख बदलती है। आज फिर से समय आ गया है कि हमें अपनी वोट की ताकत और राजनीतिक तजुर्बों का इस्तेमाल कर संविधान विरोधी भाजपा को केंद्र की गद्दी से अपदस्थ करें। कार्यक्रम की अध्यक्षता बांका के जिलाध्यक्ष अमरेंद्र कुमार सिंह एवं मंच संचालन पूर्व विधायक मनीष कुमार ने किया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से समाज कल्याण मंत्री मदन सहनी, लघु एवं जल संसाधन मंत्री जयंत राज, माननीय सांसद गिरधारी यादव, सांसद अजय मंडल, विधानपार्षद सह पार्टी के कोषाध्यक्ष ललन सर्राफ, पूर्व राज्यसभा सांसद सह रास्ट्रीय महासचिव कहकशा परवीन, विधायक मनोज यादव सहित बड़ी संख्या में पार्टी के अन्य कार्यकर्ता एवं पदाधिकारी उपस्थित रहे।

केन्द्र का अतिपिछड़ों के विकास में रूचि नहीं : राजीव

पटना। जदयू के राष्ट्रीय महासचिव व प्रवक्ता राजीव रंजन ने आज कहा है कि याद करें तो आजादी के बाद संविधान में सिर्फ पिछड़े वर्ग का जिक्र था, लेकिन बाद में इस समाज के कुछ वर्गों की अत्यंत खराब शैक्षणिक, आर्थिक व सामजिक हालातों को देखते हुए देश के 5 राज्यों यानी बिहार, कर्नाटक, महाराष्ट्र, तमिलनाडू व केरल ने इसे पिछड़े और अतिपिछड़े समाज में विभाजित किया और उसी अनुरूप आगे काम किया. आज इतने वर्षों बाद भी इन 5 राज्यों के अलावा देश के किसी अन्य राज्य ने ऐसी व्यवस्था कायम नहीं की है, जिससे देशव्यापी स्तर पर अतिपिछड़ी जातियों की स्थिति में कोई खास परिवर्तन नहीं आ रहा है। बिहार का उदहारण देते हुए जदयू महासचिव ने कहा कि बिहार जिसने अतिपिछड़ों की व्यथा को समझा और आजादी के बाद ही पिछड़े वर्ग को दो भागों में बांटते हुए अतिपिछड़ों को स्कुल-कॉलेजों के एडमिशन में आरक्षण दिया। जदयू प्रवक्ता ने कहा कि अंतिम जातीय जनगणना को अगर ठीक से पढ़ा जाए तो देश में अतिपिछड़ों की संख्या लगभग 31 प्रतिशत है। केंद्र सरकार को समझना चाहिए कि बिना अतिपिछड़ों का विकास किये देश के विकास का उनका वादा कभी पूरा हो ही नहीं सकता।

स्वच्छता पखवाड़ा : राजभवन के पदाधिकारियों एवं कर्मियों ने विशेष स्वच्छता अभियान में लियाभाग

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

स्वच्छता पखवाड़ा - स्वच्छता ही सेवा अभियान-2023 के तहत राजभवन के पदाधिकारियों एवं कर्मियों ने श्रमदान करते हुए एक साथ सफाई कार्य किया। इस अवसर पर राज्यपाल के प्रधान सचिव रॉबर्ट एल चोंग्थू सहित राज्यपाल सचिवालय के पदाधिकारीगण एवं कर्मीगण उपस्थित थे।

महागठबंधन की सरकार तरक़्क़ी का मॉडल है : एजाज

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

प्रदेश राष्ट्रीय जनता दल के प्रवक्ता एजाज अहमद ने कहा कि बिहार में महागठबंधन सरकार ने नौकरी और रोजगार देने का जो वादा किया उस संकल्प को सरजमीन पर उतारने का काम किया है। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और उपमुख्यमंत्री तेजस्वी प्रसाद यादव लगातार नौकरी और रोजगार देने का कार्य करके युवाओं के चेहरे पर जो मुस्कान लाया है। इसकी सभी सराहना कर रहे हैं। चारों ओर नौकरियों की बहार दिख रही है। शिक्षा विभाग में शिक्षक पद की 1,74000 नौकरियों के लिए परीक्षा ली जा चुकी है। जिसका परीक्षा परिणाम जल्दी जारी किया जाएगा।

सिपाही भर्ती के लिए 21,000 पदों पर परीक्षा ली जा रही है और बिहार सरकार जल्द ही पुलिसकर्मियों के 24,000 नए पदों के लिए विज्ञापन

● सरकार ने जो वादा किया, उसे निभा रही है

भी जल्द ही जारी करेगी। इन्होंने आगे कहा कि शिक्षकों के परीक्षा परिणाम आते ही 70,000 शिक्षकों के नए पदों के लिए अक्टूबर में फिर बहाली प्रक्रिया शुरू की जाएगी। साथ ही स्वास्थ्य विभाग में भी 75,000 पदों के लिए जल्द ही विज्ञापन जारी होंगे। बिहार कर्मचारी चयन आयोग (इररउ) की ओर से 11000 पदों पर नियुक्ति कर रहा है। इसी तरह से बिहार तकनीकी सेवा आयोग विभिन्न विभागों के तकनीकी पदों पर 20660 पदों पर बहाली करने जा रहा है। बीपीएससी 1700 ऑफिसर्स की 67वीं, 68वीं, 69वीं बहाली जल्दी करेगा। बिहार विधान परिषद 170 तथा सिविल कोर्ट 7,692 की बहाली की जाएगी। कहा कि यह बिहार के रोजगार और नौकरी का मॉडल है, जिसमें युवा नेतृत्व का सोच सम्मिलित है। बिहार में महागठबंधन सरकार का यह नीतीश -तेजस्वी के खुशहाली और तरक़्क़ी का मॉडल है। नीतीश के नेतृत्व वाली समाजवादी सरकार का रोजगार मॉडल और तेजस्वी का नौकरी मॉडल देश के लिए एक मिसाल बना है। जो महागठबंधन सरकार ने वादा किया, उसे राज्य सरकार निभा रही है । आज सरकारी नौकरी देने में बिहार देश का एकमात्र अग्रणी राज्य है। और महागठबंधन सरकार का संकल्प है नफरत के खिलाफ रोजगारपरक राजनीति जो मजबूती से आगे बढ़ रहा है।

अपर महाप्रबंधक तरूण प्रकाश ने पाटलिपुत्र रेल परिसर में किया श्रमदान

● पांचों मंडलों में भी विभिन्न स्थानों पर रेलकर्मियों द्वारा किया गया श्रमदान

हाजीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

पूर्व मध्य रेल के महाप्रबंधक तरूण प्रकाश ने अधिकारियों एवं कर्मचारियों के साथ रविवार को प्रातः 10.00 बजे पाटलिपुत्र रेल परिसर में सामूहिक रूप से स्वच्छता हेतु श्रमदान किया गया। इसके साथ ही पांचों मंडलों में भी मंडल रेल प्रबंधकों ने भी विभिन्न स्थलों पर श्रमदान करते हुए स्वच्छता अभियान में भाग लिया। साथ ही विभिन्न स्टेशनों पर भी स्वच्छता अभियान के तहत आज रेलकर्मियों द्वारा श्रमदान किया गया। विदित हो कि यह अभियान गांधी जयंती से एक दिन पहले 1 अक्टूबर को सुबह 10.00 बजे से शुरू होने वाले प्रधानमंत्री के राष्ट्रव्यापी महा स्वच्छता अभियान में सभी नागरिकों की भागीदारी के लिए एक तारीख एक घंटा एक साथ के आह्वान पर किया गया। इसी कड़ी में सांसद पशुपति नाथ सिंह एवं विधायक राज सिन्हा ने धनबाद मंडल के मंडल रेल प्रबंधक तथा अन्य अधिकारियों के साथ आज धनबाद स्टेशन परिसर में स्वच्छता हेतु श्रमदान किया। इसके साथ ही डालटनगंज स्टेशन पर सांसद विष्णु दयाल राम द्वारा तथा गोमो स्टेशन पर विधायक मथुरा प्रसाद महतो द्वारा श्रमदान कर लोगों को स्वच्छता का संदेश दिया। इसी तरह सदस्य बिहार विधान परिषद निवेदिता सिंह एवं मंडल रेल प्रबंधक, दानापुर जयंत कुमार चौधरी तथा अन्य अधिकारियों ने दानापुर स्टेशन पर श्रमदान कर रेल यात्रियों को स्वच्छता का संदेश दिया। स्वच्छता ही सेवा का संदेश देते हुए सेंट्रल सुपर स्पेशियलिटी हॉस्पिटल, पटना के सभी चिकित्सकों और पैरामेडिकल स्टाफ द्वारा भी स्वच्छता के लिए श्रमदान किया गया। सांसद गोपाल जी ठाकुर ने रविवार को लहेरियासराय स्टेशन परिसर में स्वच्छता हेतु श्रमदान किये जबकि मंडल रेल प्रबंधक, समस्तीपुर श्री विनय श्रीवास्तव एवं अन्य अधिकारियों व कर्मचारियों द्वारा रेलवे कालोनी समस्तीपुर में श्रमदान कर स्वच्छता का संदेश दिया गया। स्वच्छता अभियान के अवसर पर आज सोनपुर के मंडल रेल प्रबंधक विवेक भूषण सूद एवं अन्य अधिकारियों द्वारा सोनपुर स्टेशन पर श्रमदान कर रेल यात्रियों को स्वच्छता का संदेश दिया गया। स्वच्छता ही सेवा का संदेश देते हुए पं.दीनदयाल उपाध्याय मंडल के गया जं. पर माननीय विधायक डॉ. प्रेम कुमार तथा भभुआ रोड स्टेशन पर माननीय सदस्य, बिहार विधान परिषद संतोष कुमार सिंह एवं अन्य गणमान्य लोगों द्वारा श्रमदान करते हुए स्वच्छता का संदेश दिया गया। इसके साथ आज पं.दीनदयाल उपाध्याय मंडल के मंडल रेल प्रबंधक राजेश गुप्ता के साथ रेलकर्मियों द्वारा मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय परिसर में स्वच्छता के लिए श्रमदान किया गया।

जिला विधिक सेवा प्राधिकार ने चलाया स्वच्छता अभियान

● सार्वजनिक स्थलों को साफ सुथरा रखना हमारी जिम्मेदारी : प्रहलाद

पटना। बिहार राज्य विधिक सेवा प्राधिकार के निदेश पर विशेष अभियान के तहत स्वच्छता हेतु 15 सितंबर से 02 अक्टूबर तक स्वेच्छा से स्वच्छता हेतु श्रम दान अभियान चलाया जा रहा है। इस अभियान के तहत जिला विधिक सेवा प्राधिकार पटना के द्वारा रविवार को प्रातः 10:00 बजे व्यवहार न्यायालय पटना के परिसर में सचिव प्रहलाद कुमार के नेतृत्व में स्वच्छता अभियान चलाया गया। इस क्रम में जिला विधिक सेवा प्राधिकार एवं व्यवहार न्यायालय परिसर में घूम-घूम कर स्वच्छता अभियान चलाया गया। इस स्वच्छता अभियान में उपस्थित सभी लोगों ने स्वेच्छा से न्यायालय परिसर में साफ-सफाई करके अभियान को सफल बनाने का प्रयास किया। इस अवसर पर सचिव प्रहलाद कुमार ने कहा की जिस प्रकार अपने घरों को साफ-सुथरा बनाकर रखते है, उसी प्रकार अपने आसपास अपने अन्य सार्वजनिक स्थलों को साफ-सुथरा बनाएं रखना हमलोगों की जिम्मेवारी है। आपलोगों से आग्रह है कि इस अभियान को केवल एक पखवाड़े तक ही नहीं, बल्कि नियमित रूप से प्रतिदिन इस अभियान को बनाए रखने की जरूरत है। स्वच्छता से लोगों का मन प्रसन्न रहता है तथा कई तरह के गंभीर बीमारियों से मुक्त रहते हैं। आज के इस अभियान में सचिव के साथ जिला विधिक सेवा प्राधिकार के पैनल अधिवक्ता गणेश तिवारी, संतोष कुमार, कन्हैया, कशिश चौहान, सपना रानी व अन्य अधिवक्तागणों के साथ-साथ पारा विधिक स्वयं सेवक एवं कर्मचारीगण इस अभियान में बढ़-चढ़कर भाग लिए।

सफाई कर्मियों की हड़ताल समाप्त करने की पहल हो : भाकपा

पटना। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के राज्य सचिव रामनरेश पाण्डेय ने पटना नगर निगम के सफाईकर्मियों की जारी हड़ताल का समर्थन करते हुए राज्य सरकार से उनकी जायज मांगों को वार्त्ता के जरिए अविलम्ब स्वीकार कर हड़ताल को समाप्त कराने की मांग की है। उन्होंने नगर विकास एवं आवास विभाग के प्रधान सचिव और पटना नगर निगम के आयुक्त से अपील की है कि पटना में डेंगू का कहर कई गुना बढ़ गया है। सफाईकर्मियों के हड़ताल पर जाने से स्थिति और भी भयावह होती जा रही है। भाकपा राज्य सचिव ने कहा कि हमारी पार्टी संविदा व आउटसार्स कर्मियों के नियमितीकरण, समान काम के लिए समान वेतन, ठेका प्रथा की समाप्ति आदि मांगों के पक्ष में हमेशा से खड़ी रही है। सरकार आंदोलनकारियों की जायज मांगों को मानते हुए अविलम्ब हड़ताल को समाप्त करावे।

जनगणना कार्य निदेशालय ने कई इलाकों में चलाया स्वच्छता अभियान

पटना। स्वच्छता ही सेवा 2023स्वच्छता अभियान के अंतर्गत गांधी जयंती के मद्देनजर जनगणना कार्य निदेशालय पटना के निदेशक, जनगणना कार्य-सह-नागरिक निबंधन के नेतृत्व में रविवार को सुबह कपूर्री ठाकुर सदन, मुख्य गेट से आशियाना दीघा रोड में राजीव नगर नाला(पुलिया) तक बृहत स्तर पर साफ सफाई का कार्यक्रम आयोजित किया गया। स्वच्छता ही सेवा 2023 के तहत साफ सफाई कार्यक्रम का शुभारंभ एम रामचंद्रूडु, आईएएस निदेशक के द्वारा किया गया। साफ सफाई कार्यक्रम में जनगणना निदेशालय बिहार पटना के सभी संयुक्त निदेशक, उप निदेशक, सहायक निदेशक एवं सभी अधिकारियों,कर्मचारियों और सहयोगियों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। इस अवसर पर निदेशालय के महिलाकर्मियों ने भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। साफ सफाई के लिए सभी अधिकारियों एवं कर्मियों के लिए मास्क, सेनीटाइजर, हैन्डवॉश, झाड़ू, डस्टबीन इत्यादि की उत्तम व्यवस्था की गई थी। सफाई के दौरान इकट्ठा किए गए कूडे को नगर निगम के निकटतम डस्टबीन में डिसपोज किया गया। सूक्ष्मतम स्तर पर की गई सफाई के इस कार्यक्रम का 11.00 बजे पूर्वाहन में निदेशक का सभी अधिकारियों एवं कर्मियों को सम्बोधन एवं धन्यवाद देने के साथ समापन हुआ।

अन्तर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस के अवसर पर डीएम ने वरिष्ठ मतदाताओं को किया सम्मानित

जागरूक मतदाता हमारे समृद्ध लोकतंत्र की रीढ़ : डीएम

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

जिला निर्वाचन पदाधिकारी-सह-जिला पदाधिकारी, पटना डॉ. चन्द्रशेखर सिंह ने कहा है कि वरिष्ठ मतदाताओं का लोकतंत्र की मजबूती में अहम योगदान है। इनसे प्रेरणा लेकर सभी मतदाताओं को संविधान द्वारा प्रदत्त वयस्क मताधिकार का अवश्य प्रयोग करना चाहिए। वे रविवार को समाहरणालय स्थित सभाकक्ष में भारत निर्वाचन आयोग के निदेश के अनुसार अन्तर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस के अवसर पर आयोजित एक कार्यक्रम में वरिष्ठ मतदाताओं एवं पदाधिकारियों को संबोधित कर रहे थे। जिला निर्वाचन कार्यालय द्वारा इसका आयोजन किया गया था। डीएम डॉ. सिंह ने वरिष्ठ मतदाताओं का हार्दिक अभिनंदन करते हुए कहा कि आपका योगदान हमसब के लिए अमूल्य है। इस कार्यक्रम में डीएम डॉ. सिंह द्वारा वरिष्ठ मतदाताओं (80 प्लस आयु वर्ग) को सम्मानित किया गया। इसके पूर्व उप विकास आयुक्त तनय सुल्तानिया द्वारा जिला निर्वाचन पदाधिकारी के संदेश को पढ़ कर सुनाया गया तथा संदेश-पत्र की एक प्रति उपलब्ध करायी गयी।

सम्मानित वरिष्ठ मतदाता : पशुराम शाह, गांगा दयाल प्रसाद, राम प्रवेश यादव, कमला देवी, लाल बाबू सिंह, जगतारण देवी, छेदी मंडल, राम कली मुस्मात, रामा शंकर सिंह, राधा देवी, सुमित्रा देवी, विनोद राय, प्रेम राउत, धानो देवी, जय कलिया देवी, ताहिरा खातुन, रामविलास ठाकुर, सरस्वती देवी,शांति मुखर्जी, तारा देवी, एन.के. मुखर्जी, स्नेहलता देवी, मिश्री सिंह, मुकेश सिंह, मो हाशिम। विदित हो कि अन्तर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस के अवसर पर आज बीएलओ, सहायक निर्वाचक निबंधन पदाधिकारियों एवं निर्वाचक निबंधन पदाधिकारियों द्वारा भी इन कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। निर्वाचन प्रक्रिया में उनकी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने हेतु 80 प्लस आयु के मतदाताओं तथा 100 वर्ष से अधिक आयु के मतदाताओं को सम्मानित किया गया है। निर्वाचन साक्षरता क्लब तथा चुनाव पाठशाला पर आधारित गतिविधियों का भी आयोजन किया जा रहा है। डीएम डॉ. सिंह ने कहा कि चुनावों में उच्चतर मतदान प्रतिशत हमारे जैसे समृद्ध लोकतंत्र को एक नया आयाम देगा। सभी वयस्क नागरिकों को निर्वाचन में अपने मताधिकार का प्रयोग कर इसमें अहम योगदान देना चाहिए। डीएम डॉ. सिंह ने कहा कि जागरूक मतदाता हमारे समृद्ध लोकतंत्र की रीढ़ हैं। मतदाता ही लोकतंत्र के संरक्षक हैं।

मनोज झा के बयान को तोड़-मरोड़ कर किया जा रहा पेश : पप्पू

बोलें- पूरा खेल जाति की अस्मिता का नहीं, राजनीति की अस्मिता का है

पटना। संसद में राजद के राज्यसभा सांसद मनोज झा द्वारा पढ़ी गई कविता पर उठे विवाद के बीच जन अधिकार पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष व पूर्व सांसद पप्पू यादव उनके समर्थन में सामने आए हैं। उन्होंने कहा कि मनोज झा ने किसी जाति पर बयान नहीं दिया है। वहीं, देश के एक बड़े दल के लोग और धर्म व जाती की राजनीति करने वाले वर्ग ने झा के बयान को तोड़-मरोड़ कर पेश किया है। पूरा खेल जाति की अस्मिता का नहीं, राजनीति की अस्मिता का है। लोगों के बयानों से समाज की विकृतियां सामने आ रही हैं। अस्मिता पर आधारित राजनीति का स्वरूप बदल रहा है, उसमें भी हिंसा का अंश बढ़ रहा है। पप्पू यादव ने सांसद मनोज झा को जान से मारने वालों को नसीहत देते हुए कहा कि जन अधिकार पार्टी सांसद मनोज झा के साथ खड़ी हैं। कोई इनका कुछ नहीं बिगाड़ सकता हैं। पप्पू यादव ने कहा कि मनोज झा एक प्रोफेसर भी हैं। सर्वश्रेष्ठ सांसद के रूप में चुने गए हैं। उनकी बातों में विद्वता दिखती है। मनोज झा ने आज के संदर्भ में ओम प्रकाश वाल्मीकि की कविता को पढ़ा है। हम लोग समाजवादी लोग हैं। ठाकुर तो कपूर्री ठाकुर भी लिखते थे। ये कोई जात की बात नहीं है। हम लोग यादव सरनेम लिखते हैं, लेकिन चौधरी, राय, प्रसाद भी यादव लोग लिखते हैं। चंद लोग समाज में लाभ नहीं उठाएं, सबको बराबरी का मौका मिले। उसके कहने का संदर्भ यही था। पप्पू यादव ने अपने इतिहास और संस्कृति को याद करने को कहा जहां कृष्ण, सुदामा, वालमीकि से लेकर महात्मा गांधी, नेहरू, आजाद से लेकर नेल्सन मंडेला तक ने जाति और धर्म से परे समाज और देश की एकता और सद्भावना के लिए कार्य किया। पप्पू यादव ने कहा कि बीजेपी के सांसद सदन में किसको उग्रवादी कहकर धमकी दे रहे थे। बीजेपी के नेता जीभ काट देने, गर्दन काट देने जैसी बात कर रहे थे। तुच्छ लाभ और बाटने की राजनीति को लेकर लोग अमानवीय और अभ्रद आचरण कर रहे हैं।

प्रेरणा सम्मान से विभूषित किए गए डा अनिल सुलभ एवं विजय प्रकाश

अभिलाषा ज्योति फाउंडेशन द्वारा वृद्धजन दिवस पर आयोजित हुआ भव्य कार्यक्रम

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष डा अनिल सुलभ को उनके अनुशासित, कल्याणकारी और प्रेरणास्पद व्यक्तित्व और विशद साहित्यिक अवदान के लिए, प्रेरणा सम्मान से विभूषित किया गया है। भारतीय प्रशासनिक सेवा के अवकाश प्राप्त अधिकारी और बिहार विद्यापीठ के अध्यक्ष डा विजय प्रकाश को भी इसी अलंकरण से विभूषित किया गया। इन्हें वरिष्ठ नागरिकों की सुचर्चित संस्था अभिलाषा फाउंडेशन के तत्वावधान में विश्व वृद्धजन दिवस पर रविवार को आयोजित समारोह में मुख्य अतिथि और सुविख्यात चिकित्सक पद्मश्री डा गोपाल प्रसाद और भारतीय प्रशासनिक सेवा के अवकाश प्राप्त अधिकारी श्यामजी सहाय ने संयुक्त रूप से प्रदान किया। संस्था के सचिव और बिहार प्रशासनिक सेवा के अवकाश प्राप्त अधिकारी आनन्द बिहारी प्रसाद ने अतिथियों का स्वागत करते हुए, संस्था के उद्देश्यों और गत एक दशक की उपलब्धियों की चर्चा की। इस अवसर पर, बेउर स्थित इंडियन इंस्टिच्युट ऑफ हेल्थ एडुकेशन ऐंड रिसर्च के विद्यार्थियों ने वृद्धावस्था

की समस्याओं और उनकी पीड़ा को दशार्ती एक मार्मिक लघु-नाटिका एक और आ गया की प्रस्तुति भी की गयी। संतोष कुमार सिंह के निर्देशन में प्रभावशाली अभिनय के लिए महिमा शर्मा, अमीषा कुमारी, सौरभ कुमार, प्रताप कुमार, अभिषेक सिंह, अंशु कुमार राय, सैलाब सागर, धीरज कुमार आदि कलाकारों को दर्शकों का भरपूर प्यार मिला। मुख्य अतिथि के रूप में अपना विचार रखते हुए, डा गोपाल प्रसाद ने कहा कि वृद्धजनों की अनेक समस्याओं में स्वास्थ्य की समस्या सबसे बड़ी होती है। उन्हें अपने स्वास्थ्य का ध्यान सबसे पहले रखना चाहिए । बुजुर्गों को सम्मान मिलना चाहिए और उनके अनुभवों का लाभ नयी पीढ़ी को प्राप्त करना चाहिए। बुजुर्ग बोझ नहीं नयी पीढ़ी के लिए बौद्धिक पूँजी होते हैं। संस्था की अध्यक्ष ज्योति श्रीवास्तव, मृदुला प्रकाश, सुशील कुमार लाल, एस एन पाण्डेय, राम नारायण सिंह, रेणु गुप्ता, प्रभात कुमार, निवेदिता, मनोज कुमार सौमित्र, डा नामित कुमार, डा पूनम आनन्द, मीरा श्रीवास्तव, पूनम देवा, संजय कुमार सिंह, विवेक रंजन, शांति शर्मा, मधुरेश नारायण, छोटेलाल गुप्ता, विभा रानी श्रीवास्तव आदि ने भी अपने विचार रखे । मंच का संचालन शिवानी गौड़ ने किया। इस अवसर पर, इन्दु उपाध्याय , डा शालिनी पाण्डेय, मधु रानी लाल आदि बड़ी संख्या में तीनों पीढ़ियों के लोग उपस्थित थे। सबने वृद्धों की समस्याओं को जाना और वरीय नागरिकों के प्रति अपने कर्तव्यों को स्मरण किया।

स्वच्छता ही सेवा अभियान के तहत पीआईबी एवं सीबीसी ने किया एक घंटे का श्रमदान

जागरूकता के तहत बापू का सपना नामक नुक्कड़ नाटक की हुई प्रस्तुति

पटना। महात्मा गांधी की जयंती के एक दिन पूर्व रविवार को स्वच्छता को एक जन आंदोलन के रूप में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आह्वान पर सुबह 10 बजे से एक साथ एक घंटे स्वच्छता के लिए श्रमदान का आयोजन केन्द्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के पटना स्थित पत्र सूचना कार्यालय(पीआईबी) एवं केन्द्रीय संचार ब्यूरो(सीबीसी) द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। इस महाअभियान के तहत आशियाना-दीघा रोड स्थित कपूर्री ठाकुर केन्द्रीय परिसर से एलएनजेपी आवासीय परिसर तक स्वच्छता अभियान चलाया गया, जिसमें पीआईबी एवं सीबीसी के अपर महानिदेशक एस के मालवीय के नेतृत्व में कार्यालय परिसर के साथ-साथ मुख्य सड़क एवं सार्वजनिक स्थानों पर व्यापक रूप से स्वच्छता अभीयन का आयोजन किया गया। इस दौरान उपनिदेशक संजय कुमार सहित विभाग के सभी अधिकारी एवं सहयोगियों ने इस

अभियान में शामिल हो कर सूखे एवं गीले कचरे को अलग अलग डस्टबिन में एकत्रित कर उसका निस्तारण किया गया। इस अवसर पर अपर महानिदेशक एस के मालवीय ने कहा कि महात्मा गांधी का कथन है स्वच्छता राजनीतिक स्वतंत्रता से अधिक महत्वपूर्ण है। उनके इस कथन को मूर्त रूप देने के लिए स्वच्छता श्रमदान का आयोजन हम सभी कर रहे हैं। मौके पर केन्द्रीय संचार ब्यूरो के पंजीकृत दल प्रस्तुति द्वारा कपूर्री ठाकुर केन्द्रीय परिसर के मुख्य द्वार पर स्वच्छता जागरूकता के तहत बापू का सपना नामक नुक्कड़ नाटक की प्रस्तुति की गई। इस अवसर उपनिदेशक संजय कुमार, सहायक निदेशक एन एन झा, कार्यक्रम प्रमुख पवन कुमार, सूचना अधिकारी इफतेखार आलम, क्षेत्रीय प्रचार सहायक नवल किशोर झा, सर्वजित सिंह, अमरेन्द्र मोहन सहित सभी अधिकारी एवं सहयोगी उपस्थित थे ।

पटना ज़िला में ईवीएम एवं वीवीपैट के एफएलसी की शुरूआत

भारत निर्वाचन आयोग द्वारा निर्धारित प्रोटोकॉल का किया जा रहा अनुपालन : डीएम

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

भारत निर्वाचन आयोग द्वारा निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार आगामी लोक सभा आम निर्वाचन 2024 के लिए रविवार को पटना ज़िला में ईवीएम एवं वीवीपैट के प्रथम स्तरीय जाँच (एफएलसी) कार्य की शुरूआत की गई। जिला निर्वाचन पदाधिकारी-सह-जिला पदाधिकारी, पटना डॉ चंद्रशेखर सिंह तथा मान्यता प्राप्त राजनैतिक दलों के प्रतिनिधियों की उपस्थिति में यह कार्य फुलवारीशरीफ प्रखण्ड परिसर अवस्थित ईवीएम-वीवीपैट वेयरहाउस में किया गया। इलेक्ट्रॉनिक्स कॉपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड के बीस अभियंताओं को एफएलसी कार्य में लगाया गया है। डीएम डॉ. सिंह ने कहा कि भारत निर्वाचन आयोग के निदेशों के अनुरूप इलेक्ट्रॉनिक्स कॉपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (ईसीआईएल), हैदराबाद निर्मित ट3 ईवीएम एवं वीवीपैट का प्रयोग लोक सभा आम निर्वाचन, 2024

हेतु किया जाना है। पटना जिला को कुल 13,000 बीयू; 6,500 सीयू तथा 6,900 वीवीपैट आवंटित है जो फुलवारीशरीफ प्रखण्ड परिसर अवस्थित ईवीएम-वीवीपैट वेयरहाउस में संधारित है। एफएलसी कार्य प्रतिदिन (अवकाश दिवस सहित) सुबह 09.00 बजे से आरंभ होकर 07.00 बजे दोपहर तक किया जायेगा। आयोग द्वारा निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार यह 34 दिन चलेगा। डीएम डॉ. सिंह ने कहा कि एफएलसी कार्य में भारत निर्वाचन आयोग द्वारा निर्धारित मानक संचालन प्रक्रिया का अक्षरशः अनुपालन सुनिश्चित किया जा रहा है। मैनुअल ऑन इलेक्ट्रोनिक वोटिंग मशीन के अनुसार सभी आवश्यक कार्रवाई की गई है। हॉल के अंदर प्रवेश करने वाले सभी व्यक्तियों यथा इंजीनियर, प्रतिनियुक्त पदाधिकारी एवं कर्मी, वेबकास्टिंग टीम, राजनैतिक दलों के प्रतिनिधि एवं अन्य का पहचान पत्र निर्गत किया गया है। हॉल में प्रवेश करने के पूर्व मुख्य द्वार पर पंजी में उनकी उपस्थिति अंकित की जा रही है। आयोग द्वारा निर्धारित मापदण्डों के अनुसार सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित की गई है। दण्डाधिकारियों तथा पुलिस पदाधिकारियों को प्रतिनियुक्त किया गया है। सीसीटीवी से लगातार मॉनिटरिंग की जा रही है। अनुमंडल पदाधिकारी, पटना सदर तथा अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी, फुलवारीशरीफ को नियमित पर्यवेक्षण करने का निदेश दिया गया है। डीएम डॉ. सिंह ने कहा कि आयोग द्वारा विहित रीति के अनुसार इस प्रक्रिया की पूरी निगरानी की जा रही है। संपूर्ण एफएलसी प्रक्रिया का मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी, बिहार के कार्यालय द्वारा लाइव वेबकास्टिंग के माध्यम से सतत अनुश्रवण किया जा रहा है। निर्धारित समय-सीमा 05 नवमबर तक एफएलसी कार्य पूर्ण कर लिया जाएगा। इस अवसर पर अनुमंडल पदाधिकारी, पटना सदर श्रीकान्त कुन्डलिक खाण्डेकर, अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी, फुलवारीशरीफ, नोडल पदाधिकारी कुमारिल सत्यानन्दन, अवर निर्वाचन पदाधिकारी, पटना सिटी सिखा सिन्हा एवं अन्य भी उपस्थित थे।

जदयू में लगातार बढ़ता जा रहा असंतोष : चिराग

पटना। लोक जनशक्ति पार्टी रामविलास के राष्ट्रीय अध्यक्ष चिराग पासवान ने कहा है कि जदयू में लगातार असंतोष बढ़ता जा रहा है और वह दिन दूर नहीं जब यह पार्टी खंड-खंड में बटेंगी और इसके अस्तित्व को संभालनेवाला कोई नहीं होगा। पार्टी के प्रदेश मीडिया प्रभारी निशांत मिश्रा ने यह जानकारी देते हुए बताया की चिराग ने रविवार को पटना हवाई अ

संक्षिप्त खबरें

सदर एसडीपीओ ने किया थाना का निरीक्षण

सरायरंजन, समस्तीपुर। मुसरीघरारी थाना का सदर डीएसपी संजय कुमार पांडे ने शनिवार की देर शाम वार्षिक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान थानाध्यक्ष पंकज कुमार को निर्देश देते हुए क्षेत्र में शराब कारोबारी पर करी नजर रखने को कहा साथ ही थाना में मौजूद कई कांडों का अवलोकन किया। निरीक्षण के दौरान सदर एसडीपीओ ने लंबित कांडों का ससमय निष्पादन करने का भी निर्देश दिए हैं।

शतायु समाजसेवी का निधन

सरायरंजन, समस्तीपुर। सरायरंजन प्रखंड के रुपौली बुजुर्ग के हुरहिया निवासी वयोवृद्ध समाजसेवी जच्चन राय (102 वर्ष) का रविवार की सुबह निधन हो गया। वे नेकदिल एवं सरल स्वभाव के इंसान थे। सामाजिक कार्यों में वे बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते थे। वहीं आजादी की लड़ाई में भी उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। वे अपने पीछे चार पुत्र-पुत्रियों एवं चार पौत्र-पौत्रियों से भरा पूरा परिवार छोड़ गए हैं। वयोवृद्ध समाजसेवी के निधन पर मुखिया संदीप राय, सरपंच मो० राशिद, राम इकबाल राय, मो० रियाज, राम बहादुर राय, राम बालक राय, बिंदेश्वर राय, रामाशीष राय, रामचंद्र राय, शंकर राय, शिव लाल साह आदि ने शोक जताया है।

मारपीट की थाने में दिया आवेदन

विभूतिपुर, समस्तीपुर। विभूतिपुर थाना क्षेत्र के साखमोहन गंगौली निवासी सियाराम साह का पुत्र प्रहलाद कुमार साह ने मारपीट की घटना को लेकर थाने में आवेदन दिया है। जिसमें पीड़ित ने बताया कि 25 सितंबर की सुबह गांव के ही कृष्ण गोपाल साह, दीपक साह, विट्टू साह हथियार से लैस होकर दरवाजे पर पहुंचकर गाली-गलौज करते हुए घर में घुसकर मुझे बाहर निकाला। तथा लाठी-डंडे व पिस्तौल से मारपीट किया।

गांधी जयंती से पूर्व समर्था में चलाया गया स्वच्छता अभियान

विभूतिपुर, समस्तीपुर। गांधी जयंती से पूर्व देशव्यापी स्वच्छता अभियान के तहत प्रखंड के कल्याणपुर दक्षिण पंचायत समर्था वार्ड 13 में भी स्वच्छता अभियान चलाया गया। जिसमें पूर्व प्रखंड प्रमुख तरुण कुमार सिंह, पैक्स अध्यक्ष राकेश कुमार सिंह उर्फ मंटून शिवसेना, प्रणय कुमार, नवीन कुमार सिंह, अवनींद्र कुमार सिंह उर्फ चीकू सिंह, रूपेश कुमार सिंह, राजेश कुमार सिंह, रमेश कुमार, सुरेंद्र कुमार ठाकुर आदि शामिल थे।

कल्याणपुर प्रखंड राजद की हुई बैठक

कल्याणपुर, समस्तीपुर। कल्याणपुर प्रखंड राजद कार्यकताओं की बैठक जर्नादनपुर गांव में रविवार को हुई। वहीं बैठक की अध्यक्षता राजद महासचिव रामबाबू महतो ने किया। वहीं बैठक में संगठन की मजबूती करने पर विचार किया गया। साथ ही बुथ स्तर पर कमेटी गठन करने का निर्णय लिया गया। साथ ही बुथ कमेटी गठन को लेकर प्रखंड को चार भागों में बांट गया है। चार प्रभारी की नियुक्ति की गई। जिसमें सभी को बुथ कमेटी के गठन करने पर जोर देते हुए अविलंब बूथ कमेटी गठन करने का निर्देश दिया गया। मौके पर राजद जिलाध्यक्ष रोमा भारती, सुशील कुमार यादव, रामनाथ राय, मो० अनसार, रुपेश कुमार राय उर्फ भोला, बबन राय एवं बच्ची झा सहित अन्य राजद कार्यकर्ता मौजूद थे।

मौत की खबर सुनते ही पतैलिया में छाया सन्नाटा

विभूतिपुर, समस्तीपुर। करनाल के मंडी में एक मजदूर की संदिग्ध मौत हो गई। मौत की खबर सुनते ही विभूतिपुर थाना क्षेत्र के पतैलिया में मातमी सन्नाटा छा गया। मृतक की पहचान पतैलिया वार्ड 02 निवासी बौए लाल महतो के पुत्र सुमन कुमार के रूप में किया गया है। घटना के संबंध में बताया जाता है कि सुमन करनाल के अनाज मंडी में 8 दिन पहले घर से मजदूरी करने गया था। जहां शनिवार की रात्री संदिग्ध मौत हो गई। बता दें कि मृतक चार भाईयों में सबसे बड़ा था। वहीं मौत की खबर सुनते ही परिजनों का रो रो कर बुरा हाल हो रहा था। परिजन शव आने के इंतजार में टकटकी लगाते हुए है।

स्वास्थ्य विभाग के कर्मी लोगों को करे सहयोग व जागरूक : विधायक

प्रात : किरण संवाददाता

अलीगंज। इस्लामनगर अलीगंज प्रखंड क्षेत्र के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र अलीगंज मे प्रखंड चिकित्सा पदाधिकारी मो साजिद हुसैन की अध्यक्षता मे प्रखंड क्षेत्र के विभिन्न पंचायत के जनप्रतिनिधियो व स्वास्थ्य कर्मियो के साथ बैठक आयोजित किया गया। बैठक मे स्थानीय विधायक प्रफुल कुमार माझी ने सिविल सर्जन जमुई एवं प्रखंड प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी को निर्देशित करते हुए कहा कि जमुई जिले के अलीगंज प्रखंड क्षेत्र मे डेंगू पीड़ित मरीजो की हाट स्पाट बन गया है। डेंगू पीड़ित मरीज व वायरल बुखार के मरीजो को बचाव तथा उसके सुरक्षा के लिए सख्ती से निपटा जाय। विधायक ने कहा कि इस बीमारी से निपटने के लिए मेरे स्तर से जो सहयोग की जरूरत होगी मै हर संभव मदद करूंगा। और जब से अलीगंज बाजार सहित अन्य गांव मे डेंगू प्रकोप व वायरल बुखार की शिकायत मिली है।तब से मै प्रखंड प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी व सिविल सर्जन से प्रतिदान रोगियो की फीड बैक लेता रहा हू। इसलिए आज अलीगंज पीएचसी मे सिविल सर्जन व प्रखंड प्रभारी तथा विभिन्न जनप्रतिनिधियो के साथ बैठक कर उनके समस्याओ के निष्पादन के लिए विचार विमर्श किया। उन्होने कहा कि फोगिग के बडा मशीन एक सप्ताह के लिए अलीगंज पीएचसी को उपलब्ध करा दिया जाएगा। सिविल सर्जन डा महेन्द्र प्रताप ने बताया कि अलीगंज बाजार मे डेंगू की शिकायत मिली थी तब से उसके रोकथाम के लिए अलीगंज मे स्वास्थ्य टीम लगातार डेंगू वार्ड बनाकर पीड़ित मरीज के लिए हर संभव स्वास्थ्य विभाग के द्वारा दवा व फोगिग तथा थेमस व डीडीटी पावडर स्प्रे करवाकर कंट्रोल किया गया। प्रखंड प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डा मो साजिद हुसैन ने कहा कि अलीगंज बाजार सहित अन्य गांव मे काफी तेजी से डेंगू पीड़ित की शिकायत मिला और सीएस महोदय के निदेर्शानुसार टीम गठन कर दवा छिड़काव कर प्रभावित गांव मे फोगिग करवाकर हद तक कन्ट्रोल किया गया है। और भी कई गांव मे फोगिग व थेमस तथा डीडीटी पावडर छिड़काव करवाया जा रहा है। बैठक मे अलीगंज बाजार मे लोगो ने विधायक से सार्वजनिक शौचालय के साथ पीएचसी मे चिकित्सक पदस्थापित कराने की मांग किया। मौके पर जदयू प्रखंड अध्यक्ष शीतल मेहता,मुखिया जनार्दन यादव , समाजसेवी मो अनवर इकबाल, चंद्रशेखर आजाद,जदयू के मो शहनवाज आलम,मो शमीम, धर्मेन्द्र कुशवाहा मूखिया प्रतिनिधि लोजपा के बाईपी सुमन,गोपाल सिंह,पैक्स अध्यक्ष नंदकिशोर सिंह,अजय सिंह,पूर्व प्रमुख मो शेख हजारी,मो शमीम,अशोक कुमार साव,सुरेन्द्र मांझी के अलावे कई गणमान्य लोग व जनप्रतिनिधि मौजूद थे।

स्वच्छता पखवाड़ा के तहत रेल भंडार डिपो में चलाया सफाई अभियान

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

भारत सरकार द्वारा चलाए जा रहे स्वच्छता पखवाड़ा अभियान के तहत रविवार को रेलवे भंडार डिपो में वरिष्ठ मंडल सामग्री प्रबंधक (प्रशा०) गौरव कुमार सिंह के नेतृत्व में श्रमदान कर रेल कर्मियों ने डिपो परिसर की साफ-सफाई की। इस अवसर पर एएमएम अनिल कुमार सिंह, सीडीएमएसजी केके राय एवं सरफराज, सुजीत कुमार, दशरथ महतो व समस्त कर्मियों ने साफ-सफाई में अपना श्रमदान दिया। वहीं महिला कर्मी शैल कुमारी देवी, माधवीलता, विनिता, प्रियंका एवं सीता देवी ने भी बढ़-चढ़ कर श्रमदान में अपना सहयोग दिया।

अंतर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस के अवसर पर समस्तीपुर विकास मंच ने किया बुजुर्गों को सम्मानित

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

अंतर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस के अवसर पर समस्तीपुर विकास मंच के द्वारा रविवार को एक दर्जन से अधिक बुजुर्गों को विशनपुर तथा जितवारपुर में सम्मानित किया गया। समाजसेवी राकेश कुमार ठाकुर ने उन्हें पाग, चादर, माला, कलम तथा मोमेंटो से सम्मानित किया। सम्मान समारोह को सम्बोधित करते हुए राकेश कुमार ठाकुर ने कहा कि जिस समाज में बुजुर्गों का सम्मान नहीं होता वह समाज विकास नहीं कर सकता है। इसलिए यह जरूरी है कि बुजुर्ग का सम्मान करें। उन्होंने कहा, वृद्ध समाज की अनुपम धरोहर हैं, इनकी सेवा ईश्वर की सेवा जैसी है। वृद्धजनों का हमें सम्मान करना चाहिए तथा उनके जीवन अनुभवों से युवा पीढ़ी को सीख लेनी चाहिए। सम्मानित होने वाले वृद्धजनों में विशनपुर पंचायत के निवासी व अवकाशप्राप्त रेलवे लोको पायलट मो० तनवीर तथा मो० गुलाम शाहिद व जितवारपुर वार्ड संख्या 17 के निवासी सह अवकाशप्राप्त रेलवे गार्ड गणपत राय सहित एक दर्जन से अधिक वृद्ध शामिल हैं। मौके पर समाजसेवी ई० राजेश कुमार, उत्कर्ष बैंक के वरीय प्रबंधक रवि आनंद, अधिवक्ता मो० शाहिद हुसैन, समाजसेवी मो० आसिफ इकबाल, मो० तनवीर, मो० गुलाम शाहिद, मो० रूहुल्लाह खान गुड्डू, रंजीत कुमार रम्भू, मनोज कुमार राय, विजय कुमार राय, जयलाल राय, ज्योतिष महतो, रविन्द्र कुमार रवि, मनोज पटेल, प्रमोद कुमार पप्पू, जगदीश राय, शम्भू राय, राहुल कुमार आदि मौजूद थे।

स्वच्छता ही सेवा के तहत शर्मदान का हुआ आयोजन

रोसड़ा, प्रात : किरण संवाददाता

समस्तीपुर जिले के बिथान प्रखंड के विभिन्न पंचायतों में स्वच्छता ही सेवा, कचड़ा मुक्त भारत अभियान के तहत निर्धारित एक अक्टूबर को विशेष शिविर का आयोजित कर शर्मदान दिया गया। प्रखंड विकास पदाधिकारी मो. आफताब आलम ने बताया कि ग्राम पंचायत कराची में स्वच्छता कर्मी, वार्ड सदस्य के बैठक उपरांत ग्रामीण को जागरूकता अभियान पर विशेष प्रकाश डाले। बताते चलें कि प्रखंड विकास पदाधिकारी के द्वारा जानकारी दिया गया कि पंचायत बिथाना, मरथुआ, सखवा समेत कई पंचायत का भ्रमण किया गया। बैठक में उपस्थित स्वच्छता के प्रखंड समन्वयक विजय कुमार, उप प्रमुख चन्द्रशेखर सिंह, मुखिया गजेन्द्र प्रसाद, उपेन्द्र यादव, कृष्णा देवी, राजेश यादव हरिदेव मुखिया, पूनम देवी, राजेश कुमार, पंचायत सचिव मो. इरफान अंसारी, राकेश कुमार, स्वच्छता पर्यवेक्षक मुकेश कुमार, अनिरुद्ध कुमार दिलखुश कुमार, खुशबू देवी, रोहित कुमार, वार्ड सदस्य गंगाराम पटेल, सोहराव आलम, अच्छे कुमार फरहत प्रवीण, ग्रामीण रामपदारथ राय समेत अन्य ग्रामीण मौजूद थे।

खुदकुशी मामले में फर्द बयान पर एफआईआर दर्ज, माता-पिता के आने के बाद हुआ पोस्टमार्टम

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

समस्तीपुर नगर थाना क्षेत्र के अंबेदकरनगर मोहल्ले में दो बहनों के सुसाइड करने के मामले में सदर अस्पताल में इलाजरत बड़ी बहन शालू कुमारी के फर्द बयान पर नगर थाना में मामला दर्ज किया गया है। अपने फर्द बयान में शालू ने अपने चाचा-चाची पर बहन की हत्या का आरोप लगाया है। वहीं इसके माता-पिता के आने के बाद शनिवार की देर शाम मृतका खुशी कुमारी का पोस्टमार्टम कराने उपरांत शव परिजनों को सौंप दिया गया। वहीं नगर थानाध्यक्ष विक्रम आचार्य ने बताया कि फर्द बयान के आधार पर मामला दर्ज कर पुलिस मामले की जांच में जुटी हुई है।

झोलाछाप डॉक्टर से इलाज के दौरान महिला की मौत, आक्रोशित लोगों ने विरोध में किया सड़क जाम

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

मुफ्फसिल थाना क्षेत्र के मोरदीवा पंचायत के रसलपुर में झोलाछाप डॉक्टर से इलाज कराने के बाद शनिवार को एक महिला की मौत हो गई। इसके विरोध में रविवार की सुबह आक्रोशित लोगों ने मुआवजे की मांग को लेकर समस्तीपुर-अंगारघाट बांध बाईपास सड़क को जाम कर दिया। वहीं बताया गया कि घटना के बाद से आरोपी झोलाछाप डॉक्टर फरार है। स्थानीय स्तर पर मामले को सुलझाने को लेकर लोग लगे हुए थे। वहीं घटना की सूचना पर पुलिस भी पहुंची लेकिन स्थानीय स्तर पर मामला सुलझता हुआ देख वह वापस चली गई। मृत महिला की पहचान मोरदीवा रसलपुर वार्ड 10 निवासी संतोष चौधरी की पत्नी किरण सहनी के रूप में हुई है। घटना के संबंध में बताया गया कि तबियत खराब होने पर गांव का ही एक झोलाछाप डॉक्टर उसका इलाज कर रहा था। इलाज के क्रम में शनिवार को उसकी मृत्यु हो गई। महिला की एक तीन साल की दिव्यांग बेटी है। वहीं मुफ्फसिल थानाध्यक्ष सुरेंद्र कुमार सिंह ने बताया कि मामले की सूचना पर पुलिस टीम को भेजा गया था। जहां बताया गया कि मामला स्थानीय स्तर पर सुलझा लिया गया है। मामले के संबंध में आवेदन प्राप्त होने के बाद पुलिस आगे की कार्रवाई करेगी।

29 लाख 82 हजार 426 रुपए की लागत से बनने वाली दो सड़कों का हुआ शिलान्यास

विभूतिपुर, प्रात : किरण संवाददाता

विभूतिपुर विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत विधायक अजय कुमार ने दो अलग-अलग जगहों पर बनने वाली पीसीसी सड़क का शिलान्यास किया। एक ओर जहां कल्याणपुर उत्तर पंचायत में एस एच 88 मां भगवती कोल्ड स्टोरेज से रामचंद्र राय के घर के निकट तक मुख्यमंत्री क्षेत्र विकास योजना के अंतर्गत 14 लाख 91 हजार 341 रुपये की लागत से बनने वाली पीसीसी सड़क का शिलान्यास किया गया। वहीं कल्याणपुर दक्षिण पंचायत वार्ड 10 में राम स्वार्थ राय के घर से रामाश्रय राय के घर तक सड़क में पीसीसी 14 लाख 91 हजार 85 रुपए की लागत से निर्माण कार्य का शिलान्यास किया गया। मौके पर जिला कमिटी सदस्य सिया प्रसाद यादव, महेश कुमार, विद्यानंद विद्यार्थी, अशोक कुमार, राजेश कुमार, ललित कुमार, शंभू पंडित, नित्यानंद, राम कुमार राय, राम स्वार्थ राय, सरपंच गणेश पासवान, अनिरुद्ध सिंह, विकास कुमार यादव, अजय साहू, उपेंद्र भगत, सागर राय आदि उपस्थित थे।

रोटरी क्लब ने शहर में चलाया स्वच्छता कार्यक्रम, कई जगहों पर प्रतिस्थापित किया कचरे का नीला डिब्बा

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

रोटरी क्लब ऑफ समस्तीपुर सिटी ने गांधी जयन्ती के अवसर पर चल रहे स्वच्छता ही सेवा अभियान के तहत रविवार को शहर में स्वच्छता कार्यक्रम चला कर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को स्वच्छतांजली दी। इसके तहत रोटरी क्लब डिस्ट्रिक्ट 3250 की एजी डॉ अमृता कुमारी एवं रोटरी समस्तीपुर की प्रेसिडेंट डॉ कनुप्रिया मिश्रा के नेतृत्व में उपस्थित रोटेरियन ने एसपी आवास रोड, हॉस्पीटल रोड, एसडीओ कार्यालय एवं आसपास, थानेश्वर स्थान रोड, बस पडाव आदि जगहों पर कचरे का नीला डिब्बा प्रतिस्थापित करते हुए आसपास के क्षेत्र में सफाई किया और लोगों को स्वच्छता अपनाने के लिए जागरूक किया। इस दौरान डॉ अमृता ने कहा कि अपने आसपास स्वच्छता का ध्यान रख कर हम पर्यावरण और अपने परिवार के साथ-साथ पड़ोसी को भी स्वस्थ रख सकते हैं। इसलिए आसपास की सफाई पर ध्यान रखने को दिनचर्या में शामिल करें। वहीं डॉ मिश्रा ने रोटेरियन का उत्साह वर्धन करते हुए कहा कि कहा जाता है स्वच्छता में भगवान का वास है और स्वच्छता से स्वतः समृद्धि आती है। अपने आस-पड़ोस में साफ-सफाई करने से पर्यावरण भी स्वच्छ रहेगा और हम भी स्वस्थ रहेंगे। इस अवसर पर एसडीओ दिलीप कुमार, आरसी समस्तीपुर के सेक्रेटरी विमल केडिया, पास्ट सेक्रेटरी सुजीत खेमका, रोटेरियन अजीत पॉल, मनोज कुमार गुड्डू, अमित कुमार वर्मा, पंकज कुमार, राजू पासवान सहित कई लोग मौजूद थे।

स्वछता ही सेवा के तहत कार्यक्रम आयोजित

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

गांधी जयन्ती के अवसर पर स्वच्छता ही सेवा अभियान के अंतर्गत स्वछता पखवाड़े के तहत प्रखंड कार्यालय एवं नगर पंचायत सरायरंजन तथा कस्तूरबा गांधी विद्यालय बथुआ बुजुर्ग में रविवार को अग्रणी जिला प्रबंधक पीके सिंह के नेतृत्व में स्वच्छता कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर यूनियन बैंक क्षेत्र प्रमुख समीर कुमार साई, प्रखंड प्रमुख वीणा कुमारी, उप प्रमुख संजीव कुमार ठाकुर, मुख्य पार्षद पूजा कुमारी, उप मुख्य पार्षद सुष्मिता कुमारी, बीडीओ नीतू प्रियदर्शी सहित जन प्रतिनिधियों, बैंककर्मियों, स्वयं सहायता समूह की महिलाएं एवं ग्रामीण स्वरोजगार संस्थान से प्रशिक्षण प्राप्त प्रक्षिणार्थियों के अलावा सभी स्वछता पर्यवेक्षक एवं स्वच्छताकर्मियों ने भी श्रमदान किया एवं स्वच्छता का ध्यान रखने और लोगों को इसके लिये जागरूक करने का संकल्प लिया। इस अवसर पर एलडीएम श्री सिंह ने कहा कि स्वच्छता आरोग्य का मास्टर की है। आस पड़ोस की स्वच्छता का ध्यान रखने से पर्यावरण स्वच्छ और स्वस्थ होगा, इससे हम और हमारा परिवार ही नहीं बल्कि हमारे पड़ोसी भी स्वस्थ रहेंगे। इसलिए स्वच्छता को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनायें। इस अवसर पर अच्छे कार्य करने के लिए सफाई कर्मियों को सम्मानित किया गया।

थाली और ताली बजाकर लोगों को किया गया जागरूक

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

सरायरंजन प्रखंड क्षेत्र के गंगसारा पंचायत के अहमदपुर पोखर पर बसे लोगों के बीच स्कूल चलो तुम अभियान के तहत थाली और ताली पीटकर लोगों को जागरूक किया गया। वहीं लोगों को जागरूक करते हुए स्थानीय पूर्व पंचायत समित सदस्य सह युवा समाजसेवी बागी संजीव कुमार ने लोगों से कहा कि सरकार ने नया कानून लाया है, कि जो भी बच्चा विद्यालय को बिना कारण सूचना दिए लगातार तीन दिन तक स्कूल नहीं जाएगा तो वैसे बच्चे का नाम स्वतः विद्यालय से काट दिया जाएगा और जो भी अविभावक अपने तथा अपने आस-पास के बच्चों को विद्यालय नहीं भेजेगा वैसे अविभावक को सरकार सरकारी सुविधाओं से वंचित कर देगी। उन्होंने यह भी कहा कि जो भी बच्चे नशापान करते हुए या जूआ-तास खेलते हुए पाया गया तो फिर वैसे बच्चे तथा उसके अभिभावक अथवा जूआ-तास खेलने वाले, नशापान करने वाले व्यक्ति का नाम सरकार के द्वारा मिलने वाली मूलभूत सुविधाओं से वंचित कर दिया जाएगा। अतः आप समस्त लोगों से हाथ जोड़कर आग्रह विनती करते हैं कि आप लोग अपने-बच्चों का ख्याल रखिए और स्कूल भेजिए। जिससे बच्चों में शिक्षा के साथ संस्कार बढेगा और देश भी आगे बढेगा।

झमटिया घाट में डूबे किशोर की लाश बन्हैती गांव आते ही मचा कोहराम

विभूतिपुर, प्रात : किरण संवाददाता

झमटिया घाट गंगा नदी में डूबने से एक किशोर की मौत हो गई। पोस्टमार्टम के बाद विभूतिपुर थाना क्षेत्र के बन्हैती गांव लाश पहुंचते ही कोहराम मच गया। मृतक की पहचान चोरा टभका पंचायत के बन्हैती वार्ड 16 निवासी संजीत कुमार के 15 वर्षीय पुत्र अंकित कुमार के रूप में किया गया। अंकित दशम् वर्ग का छात्र था। घटना के संबंध में बताया जाता है कि अंकित 30 सितंबर शनिवार को गांव के ही एक व्यक्ति के दाह संस्कार में शामिल होने बछवाड़ा के झमटिया घाट गया था। जहां स्नान करने के दौरान वे लापता हो गए। गोताखोर के मदद से रविवार को अहले सुबह अंकित का शव बाहर निकाला गया। पोस्टमार्टम के बाद शव को बन्हैती स्थित घर लाया गया। शव पहुंचते ही गांव में कोहराम मच गया। माता सविता देवी सहित परिजनों का रो- रोकर बुरा हाल हो रहा था। बता दें कि मृतक तीन भाई सुबोध कुमार और अमरजीत कुमार से बड़ा था।

बिहार पुलिस सिपाही भर्ती परीक्षा को लेकर डीएम और एसपी ने परीक्षा केंद्र का किया निरीक्षण

प्रात : किरण संवाददाता

झाझा-बिहार पुलिस सिपाही भर्ती परीक्षा झाझा मे बनाये गये तीनों केंद्रो पर शांतिपूर्ण रूप से संपन्न किया गया।महात्मा गांधी प्लस टू उच्च विद्यालय,आदर्श मध्य विद्यालय एवं बालिका उच्च विद्यालय को परीक्षा केंद्र बनाया गया।जहां परीक्षार्थी ससमय परीक्षा केंद्र पर पहुँच गये थे और केंद्राधिक्षक के द्वारा परीक्षाथीर्यों को प्रवेश पत्र की जांच के साथ कदाचार मुक्त परीक्षा हो इसको लेकर परीक्षाथीर्यो की बारिकी से जांच किया गया और उसके बाद परीक्षा केंद्र के अंदर प्रवेश करने के लिये दिया गया।वही तीनो जगहो पर संचालित हो रहे सिपाही भर्ती परीक्षा को लेकर जमुई जिलाधिकारी राकेश कुमार और एसपी डॉ.शौर्य सुमन परीक्षा केंद्र पर पहुँचकर परीक्षा का जायजा लिया।इस दौरान जिलाधकारी और एसपी परीक्षा केंद्र पर तैनात पुलिस पदाधिकारी,केंद्राधिक्षक एवं दंडाधिकारी को कई आवश्यक दिशा निर्देश दिया। परीक्षा को लेकर पुलिस परीक्षा केंद्र के चारो तरफ मुस्तैद दिखाई दिये और परीक्षा केंद्र से परीक्षार्थी के अभिभावको को दूर रखा गया।तीनो केंद्रो पर दोनो पालियों मे शांतिपूर्ण तरीके से परीक्षा को संपन्न किया गया।

प्रखंड में स्वछता पखवाड़े के तहत चला स्वच्छता अभियान

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

सरायरंजन प्रखंड परिसर समेत भिन्न-भिन्न पंचायत में रविवार को स्वच्छता पखवाड़े के तहत स्वच्छता अभियान चलाया गया। जिसमें सभी स्वछता पर्यवेक्षक एवं सभी कर्मी उपस्थित हुए। जिस दौरान उपस्थित सभी कर्मी के द्वारा सामूहिक रूप से श्रमदान किया गया एवं अच्छे कार्य करने के लिए सफाई कर्मियों को सम्मानित भी किया गया। मौके पर प्रखंड विकास पदाधिकारी नीतू प्रियदर्शनी गुप्ता, प्रमुख विणा कुमारी, उप प्रमुख संजीव ठाकुर, मुख्य पार्षद पूजा कुमारी उप मुख्य पार्षद समेत नगर पंचायत क्षेत्र के सभी कर्मी मौजूद थे। इधर भाजपा के सरायरंजन दक्षिणी मंडल अध्यक्ष बबलू झा की अध्यक्षता में भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आह्वान पर स्वच्छ भारत अभियान कार्यक्रम के तहत आज मणिकपुर शक्तिकेंद्र के वार्ड 3 में मां दुर्गा स्थान, जगदीशपुर शनिदेव स्थान, अरमौली डीहवार स्थान पर स्वच्छता अभियान चलाया गया। मौके पर किसान मोर्चा के प्रदेशमंत्री शशिधर झा, सुदर्शन साह, चंदेश्वर राय, विष्णु महतो, शिव कुमार झा, कुन्दन सिंह, कपिल सिंह, रजनीश सिंह, संजीत राय, कुंवर कुमार झा समेत दर्जनों कार्यकर्ता शामिल हुए। इधर भाजपा के ही सरायरंजन उत्तरी मंडल के रुपौली बुजुर्ग शक्ति केंद्र में दुर्गा मंदिर परिसर, महादेव मठ परिसर में मंडल अध्यक्ष बलवंत सिंह राठौर, मंडल महामंत्री पवन शर्मा, शक्ति केंद्र प्रमुख शिवराम चौधरी के देखरेख में स्वच्छता अभियान कार्यक्रम चलाया गया। मौके पर रूपेश कुमार, मुकेश यादव, मनोज झा, विंदेश्वर सहनी, विष्णु देव शाह, गुड्डू कुमार सिंह, प्रवीण ईश्वर, पंडित विनय झा, सूर्यकांत गिरी उपस्थित थे। सरायरंजन पश्चिमी शक्ति केंद्र में महिला मोर्चा अध्यक्षा मीना देवी के देखरेख में स्वकछता कार्यक्रम आयोजित किया गया।

अति पिछड़ा आरक्षण बचाओ संघर्ष मोर्चा का बैठक

रोसड़ा, प्रात : किरण संवाददाता

प्राथमिक शिक्षक संघ भवन रोसड़ा में तेली, तमोली, दांगी जाति को मूल अति पिछड़ा में पृथक करने, अति पिछड़ा अत्याचार निवारण कानून बनाने, अति पिछड़ा का आरक्षण को 20 प्रतिशत से बढ़ाकर 33 प्रतिशत करने जैसी मांगों को लेकर 2 अक्टूबर से 7 अक्टूबर तक जननायक कपूर्री ठाकुर जन्म स्थली से पद यात्रा प्रारंभ होगी। यह यात्रा समस्तीपुर जिला से मिलर स्कूल मैदान पटना तक जाकर सभा में बदल जायेगी। इस की तैयारी को लेकर संघर्ष मोर्चा शाखा रोसड़ा की बैठक हुई। अध्यक्षता अधिवक्ता कपिल देव सहनी ने किया। मंच संचालन राजेंद्र सहनी ने किया। जिसमें सैकड़ों की संख्या में अति पिछड़ा वर्ग के लोग उपस्थित हुए मूल अति पिछड़ा वर्ग के लोगों की दुर्दशा पर चिंता व्यक्त की गई। प्रदेश नेता प्रोफेसर अनिल कुमार साहनी, नागेंद्र सहनी, विजय कुमार चौधरी, राजेंद्र साहनी अपने-अपने उद्बोधन में कहा कि बिहार सरकार ने मूल अति पिछड़ा वर्ग के आरक्षण में तेली तमोली दांगी जाति को अलग से देने की मांग किया गया। इस मौके पर रामस्वरूप सहनी, अरविंद कुमार सहनी उर्फ मुन्ना, सुरेश सहनी, वार्ड पार्षद बिरजू सहनी, मिथिलेश सहनी, समिति सदस्य गरीब लाल सहनी, मनीष कुमार सहनी, रामचंद्र सहनी, अशोक सहनी, राम आशीष सहनी, शंकर सहनी, बैजू सहनी, प्रभु सहनी, धर्म सहनी, गौतम कुमार, संजय कुमार महतो, सुरेश सहनी, अधिवक्ता राजेंद्र सहनी, अधिवक्ता कपिल सहनी, अधिवक्ता विनोद सहनी, सरपंच पति मिथिलेश सहनी, प्रीतम कुमारी एवं मीरा देवी इत्यादि लोग मौजूद थे।

संक्षिप्त खबरें

अवैध मादक पदार्थ के खिलाफ भोजपुर पुलिस ने की बड़ी कार्रवाई

गड़हनी (भोजपुर) अवैध मादक पदार्थ के खिलाफ भोजपुर पुलिस की बड़ी कार्रवाई ।गांजा अवैध अग्नेयास्त्र तथा कारतूस के साथ गड़हनी थाना का टॉप 10 अपराधकर्मी गिरफ्तार। दिन शनिवार को शाम में गुप्त सूचना के आधार पर गड़हनी पुलिस एवम सशस्त्र बलो द्वारा थाना प्रभारी प्रियंका गुप्ता के नेतृत्व में गठित टीम के द्वारा बडॉरा गांव मेंछापामारी कर 203.790 ग्राम गांजा एवम एक देशी कट्टा 02 जिंदा कारतूस के साथ एक गांजा तस्कर को गिरफ्तार कर लिया गया ।जिसके बाद गडहनी थाना कांड संख्या 156/23 आर्म्स एक्ट के तहत मामला दर्ज कर अभियुक्त बडौरा गांव निवासी विनय यादव के पुत्र विकाश यादव को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया।

केन्द्रीय विद्यालय 2 में प्राचार्य ने किया स्वच्छता अभियान

गया ।रविवार को केंद्रीय विद्यालय क्रमांक 2 गया के प्रभारी प्राचार्य उमेश पाण्डेय के संरक्षण में विद्यालय के शिक्षक एवं शिक्षकेत्तर कर्मचारियों ने स्वच्छता ही सेवा एक तारीख एक घंटा कार्यक्रम में सोत्साह भाग लिया है ।विद्यालय के सभी कर्मचारी, एन. सी.सी. कैडेट्स, एवं भारत स्काउट एवं गाइड के विद्यार्थियों ने इस कार्यक्रम कि शुरूआत विद्यालय परिसर में एकत्रित होने के पश्चात ओ.टी.ए. परिसर के पब्लिक शॉपिंग काम्प्लेक्स में चिन्हित स्थान तक पदयात्रा कि तत्पश्चात वहां चिन्हित क्षेत्र में फैले कुडों का एकत्रीकरण एवं अनचाहे घास एवं पौधों को हटाकर सफाई की है ।इस कार्यक्रम के सफलता पूर्वक आयोजन हेतु समन्वयक के रूप में मुक्तार अंसारी एन.सी.सी. प्रभारी, डॉ. अनिल कुमार प्रभारी भा.स्का.गा., डी.बी.पंकजप्र.स्नात.शि.शारीरिक शिक्ष, एस.के. पाण्डेय, एवं सभी शिक्षक एवं शिक्षकेत्तर कर्मचारियों ने अपना योगदान दिया।

तेलपा पुलिस ने किया पिस्टल के साथ किशोर को गिरफ्तार

करपी (अरवल) ।शहर तेलपा ओपी मुख्यालय के निकट खडासीन रोड में पइन के पास पिस्टल के साथ 16 वर्षीय किशोर को शहर तेलपा पुलिस ने गिरफ्तार किया ।पुलिस सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार शनिवार की देर शाम शहर तेलपा खड़ासीन सडक में पईन के निकट पिस्तौल लेकर एक किशोर को घूमने की सूचना पुलिस को मिली। सूचना मिलते ही ओपी अध्यक्ष विवेक कुमार ने गस्ती कर रहे पुलिस अवर निरीक्षक बबलू कुमार सिंह को दी। सूचना मिलते ही पुलिस अवर निरीक्षक ने नाटकीय ढंग से पईन के निकट पहुंचकर उक्त किशोर को गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार किशोर शहर तेलपा निवासी छोटन रविदास का 16 वर्षीय पुत्र बताया जाता है। गिरफ्तारी के बाद इस किशोर से पूछताछ की गई है। पूछताछ में कई अहम जानकारी किशोर के द्वारा पुलिस को मुहैया कराई गई है जिसके आधार पर शहर तेलपा पुलिस आगे की कार्रवाई में जुटी हुई है।

सामाजिक कार्यकर्ता के 5वीं पुण्यतिथि पर प्रतिमा का अनावरण

करपी (अरवल) । प्रखंड के शहर तेलपा ओपी अंतर्गत रामपुर चाय गांव निवासी सामजिक व राजनैतिक कार्यकर्ता स्व भोला शर्मा की 5वीं पुण्यतिथि के मौके पर प्रतिमा अनावरण किया गया !स्व भोला शर्मा के पूण्यतिथि व प्रतिमा अनावरण के अवसर पर पंचायती राज मंत्री (बिहार सरकार)मुरारी गौतम, कांग्रेस राज्यसभा सांसद सह बिहार प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष डॉ अखिलेश प्रसाद सिंह ,नीतू सिंह (विधायक, हिसुआ)अरवल के पूर्व विधायक चितरंजन कुमार, जिप अध्यक्ष अरवल संध्या देवी ,कांग्रेस जिला अध्यक्ष जहानाबाद गोपाल शर्मा ,कांग्रेस जिला अध्यक्ष अरवल धनंजय शर्मा ,मुखिया संघ अध्यक्ष अरवल अभिषेक रंजन ,अरविंद शर्मा ,भाजपा नेता पियूष कांत ,सामाजिक कार्यकर्ता व जिप अध्यक्ष अरवल प्रतिनिधि सुधीर शर्मा ,माले नेता त्रिभुवन शर्मा सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित रहे! कार्यक्रम में सर्वप्रथम बिहार कांग्रेस अध्यक्ष डॉ अखिलेश प्रसाद सिंह के द्वारा आदमकद प्रतिमा का अनावरण किया गया तत्पश्चात उपस्थित सभी गणमान्य लोगों के द्वारा स्वर्गीय भोला शर्मा के प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की गई! स्वर्गीय भोला शर्मा के 5वीं पुण्यतिथि पर उपस्थित जनमानस को संबोधित करते हुए पंचायती राज मंत्री मुरारी गौतम ने कहा कि समाज से अच्छे लोगों चले जाने के बाद उनकी कमी का भरपाई करना तो बड़ा मुश्किल हो जाता है लेकिन हम लोगों को यह चाहिए कि उस अच्छे व्यक्ति की पद चिन्ह पर चलते हुए उनके द्वारा छोड़े हुए कार्यों को हम पूर्ण रूप दें !कार्यक्रम को संबोधित करते हुए राज्यसभा सांसद सह बिहार प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष डॉ अखिलेश शर्मा ने स्वर्गीय भोला शर्मा के साथ अपने पारिवारिक सामाजिक एवं राजनैतिक संबंधों की चर्चा की।

आपसी सौहार्द बनाने को लेकर सिटी एसपी ने शेरघाटी थाना परिसर मे किया बैठक

प्रात : किरण संवाददाता

शेरघाटी। थाना परिसर मे रविवार को आपसी सौहार्द बेहतर बनाने को लेकर गया सिटी एसपी हिमांशु कुमार के नेतृत्व में बैठक आयोजित किया गया, जिसमे शहर के गण्यमन लोग के. आलावा दोनों पक्ष के लोग शामिल रहे, बैठक के दौरान आपसी सौहार्द बेहतर बनाने को लेकर पहल की गई मालूम हो कि शहर में बीते 15 दिनों से दो पक्षों में हो रहे लगातार मारपीट मामले को लेकर पुलिस द्वारा करवाई नहीं करने व थानाध्यक्ष के द्वारा पहल नहीं करने पर काफी नाराजगी जताया। जिसके कारण शहर वासी काफी चिंतित है उक्त मुद्दे को दोनों पक्ष के लोगो के साथ बैठक करते हुए कहा की वैसे लोग जो समाज मे आपसी सौहार्द को बिगड़ना चाहते है उनके खिलाफ सख्त करवाई किया जायेगा। उक्त बैठक के दौरान एसडीओ अनुग्रह नारायण सिंह, डीएसपी राजकिशोर सिंह,नगर परिषद अध्यक्ष प्रतिनिधि पवन किशोर,थानाध्यक्ष विमल कुमार, शम्भू कुमार आदि बैठक मे शामिल रहे। यह बैठक शहर वासियो के पहल पर किया गया जिसमे बीते दिनों से हो रहे मारपीट को लेकर लोग काफी चिंतित थे.जिससे दिन दर दिन शरारती तत्व के लोग आपसी सौहार्द बिगड़ने का प्रयाश कर रहे थे, बैठक के दौरान सिटी एसपी ने लोगों को सख्त निर्देश देते हुए कहा कि वैसे लोग नहीं बक्शे जायेंगे जो आपसी सौहार्द को बिगड़ने के लिए कार्य कर रहे हैं और जिनके खिलाफ कार्रवाई हुई है उसे जल्द ही गिरफ्तार कर जेल भेज दिया जाएगा, बैठक के दौरान दीनानाथ पांडे,राम लखन पासवान, राजेश सिंह, रामबदन सिंह,संतोष सिंह, मोहम्मद जॉनी, वसीम अकरम,आबिद इमाम, वसीम राजा, धर्मेंद्र सिंह, सोनू सिंह समेत सैकड़ो के तादाद में दोनों पक्ष से लोग उपस्थित थे।

पंजाब नैशनल बैंक मण्डल कार्यालय, आरा द्वारा स्वच्छता अभियान चलाया गया

प्रात : किरण संवाददाता

आरा : पंजाब नैशनल बैंक मण्डल कार्यालय, आरा द्वारा स्वच्छता के लिए हेतु श्रमदान हेतु मण्डल प्रमुख संदीप डोंगरे के नेतृत्व में आरा कलेक्टेरियट घाट, आरा रमना मैदान स्थित महावीर मंदीर, गौशाला एवं महाराजा कॉलेज की स्वच्छता हेतु श्रमदान दिया गया। स्वच्छता हेतु श्रमदान दो दलों का गठन किया गया जिसमें दूसरे दल का नेतृत्व उप मण्डल प्रमुख आर के राय ने की। स्वच्छता हेतु श्रमदान में मुख्य प्रबन्धक श्री अजीत कुमार, आशिष कुमार एवं राजेश कुमार के साथ-साथ वरीय प्रबन्धक नरेश प्रसाद, अमिशक सौरभ, सुमित कुमार श्रवण कुमार, राहुल कुमार राणा, जितेन्द्र कुमार, सुधांशु कुमार, टून टून कुमार, दीपक कुमार, अर्जुन कुमार, धर्मेन्द्र कुमार तथा सुनिल चैधरी एवं अन्य ने भी अपनी उपस्थित होकर अपना श्रमदान किये।

व्यवहार न्यायालय परिसर में हुआ स्वच्छता अभियान

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा। कार्यालय। स्वच्छता अभियान के अंतर्गत छपरा व्यवहार न्यायालय के न्याय सदन में जिला विधिक सेवा प्राधिकार के अध्यक्ष सह जिला एवं सत्र न्यायाधीश बिरेंद्र कुमार मिश्रा एवं सचिव सह ए सी जे एम जिगर साह के नेतृत्व में सफाई अभियान चलाया गया । अध्यक्ष एवम सचिव के नेतृत्व मे एक स्वच्छता रैली भी निकाली गई ।जिसमें विभिन्न स्कूलों के स्काउट के लड़कों और लड़कियों ने स्वच्छ भारत, स्वच्छ शहर का नारा लगाते हुए प्रभात फेरी किया ।जिला एवं सत्र न्यायाधीश ने इस अवसर पर कहा कि कहा की हम सभी को स्वच्छता पर विशेष ध्यान देना चाहिए केवल हर एक व्यक्ति अगर अपने घर और घर के अगल-बगल को स्वच्छ रखें तो हमारा वातावरण भी स्वच्छ रहेगा। जिसके कारण हमारी मानसिकता भी स्वस्थ रहेगी हम सभी का ध्यान कभी गलत कार्यो पर नही जायेगा।

इसलिए अपने शहर को स्वच्छ रखें। स्वच्छता मिशन के अवसर पर सचिव ने कहा कि हम लोग अगर अपने घर के साथ-साथ अपने घर के अगल-बगल मोहल्ले ,मुख्य सड़कों पर थोड़ी सी सफाई पर ध्यान दें तो हम सब स्वच्छता के साथ-साथ हम लोगों का अपना स्वास्थ्य भी ठीक रहेगा। समाज में रहने वाले लोगों के भी स्वभाव तथा मानसिकता पर भी इसका असर पड़ेगा । न्याय सदन से स्वच्छता अभियान प्रारंभ करते हुए जिला जज के साथ परिवार न्यायालय के प्रधान न्यायाधीश अजय कुमार शर्मा अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश नीरज कुमार सुशील कुमार त्रिपाठी रघुवंश नारायण राजेश कुमार त्रिपाठी सुधीर सिंहा सुरेश कुमार श्रीवास्तव प्रभात कुमार श्रीवास्तव अतुल वीर सिंह सत्य प्रकाश संजीत कुमार राय सहित मुख्य न्यायाधीश दंडाधिकारी एस डी जे एम प्रमोद कुमार शर्मा अपर मुख्य न्यायाधीश दंडाधिकारी धर्मेंद्र कुमार पांडे अनुपमा सहित सभी अपर मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी सभी न्यायिक दंडाधिकारी अधिकारी पदाधिकारी ने स्वच्छता अभियान में भाग लिया साथ ही व्यवहार न्यायालय के एवं न्याय सदन के सभी कर्मचारी सहित कोर्ट मैनेजर ने भी स्वच्छता अभियान में भाग लिया।

स्वच्छता ही सेवा-2023 कार्यक्रम के तहत एक तारीख, एक घंटा का आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। जिला जल एवं स्वच्छता समिति भोजपुर , जिला गंगा समिति,भोजपुर ,नगर निगम,आरा के संयुक्त तत्वावधान में स्वच्छता हेतु श्रमदान, स्वच्छता रैली और स्वच्छता शपथ कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि रूप में आरा नगर निगम की महापौर ,जिला जल और स्वक्षता के समन्वयक रंजय बैठा, अमित कुमार सिंह जिला परियोजना अधिकारी जिला गंगा समिति नमामि गंगे , रोशन कुमार सूचना शिक्षा एवम संचार के जिला समन्वयक भोजपुर, विनय कुमार और जिले और ठउउ के वरीय अधिकारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ जिला मुख्यालय से किया गया। नगर निगम महापौर इंदु देवी ने कहा की स्वच्छता एक भाव जो सेवा के रूप में किया जा सकता हैं और सुनिश्चित नहीं है बल्कि आमजन की सहभागिता है एक नई शुरूआत कर सकती है। रंजन बैठने बताया कि आज यह कार्यक्रम पूरे भारतवर्ष में आयोजित किया जा रहा है और उसका मूल उद्देश्य यही है कि कार्यक्रम से लोगों को जोड़ा जाए और जन जन को जागरूक किया जाय ।जिला परियोजना अधिकारी अमित कुमार सिंह ने बताया कि यह स्वच्छता कार्यक्रम केवल कर मुख्यालय एवं गांव तक नहीं बल्कि जिले के प्रत्येक प्रमुख गंगा घाटों पर आयोजित किया गया है।

गया जिलाधिकारी ने चंद चौराहा से विष्णुपद मंदिर तक पैदल निरीक्षण किया

प्रात : किरण संवाददाता

गया। पितृपक्ष मेला के अवसर पर देश-विदेश से आने वाले तीर्थ यात्रियों के सुविधा के लिये जिला पदाधिकारी गया डॉ० त्यागराजन एसएम एवं वरीय पुलिस अधीक्षक आशीष भारती द्वारा संयुक्त रूप से चंद चौराहा से विष्णुपद मंदिर तक पैदल निरीक्षण किया गया है। आसपास के सभी शिविरों एवं रास्तो में उपस्थित दंडाधिकारियों पुलिस पदाधिकारी को प्रॉपर ड्यूटी करने का निर्देश दिए हैं। आसपास घूम रहे तीर्थ यात्रियों को उनकी समस्या की जानकारी लेते रहने का निर्देश दिए हैं। विष्णुपद संवास सदन के समीप से ही यात्रियों के कतारबद्ध लाइन की भीड़ को देख कर डीएम खुद ही यात्रियों को लाइन में लगाने लगे। डीएम ने स्वयं रुककर यात्रियों को मंदिर में जाने हेतु लाइन में लगने एवं बाहर निकास हेतु विभिन्न रास्तो से निकलने की बात को बताते चले। सीधे संकीर्ण गलियों से होते हुए देवघाट पहुचे। रास्ते मे स्काउट गाइड के बच्चे से हाथ मिलाया एवं उन बच्चो को हौसला अफजाई किया उनसे हाल चाल पूछा। देवघाट में उपस्थित पुलिस पदाधिकारी को माइक से लगातार भीड़ प्रबंधन हेतु अनाउंसमेंट करवाने का निर्देश दिए है। देवघाट पर एक ही ओर भीड़ न रहे इसे लेकर डैम की ओर से शमशान घाट तक लोगो को डाइवर्ट करवाते रहने का निर्देश दिए हैं।

घाट पर आए यात्रियों की निकासी हर हाल में शमसान घाट से ही करवाने को कहा, ताकि भीड़ प्रबंधन में कोई समस्या न होवे ।नाव के माध्यम से करीब एक घंटे तक भीड़ प्रबंधन का जायजा लेते रहे हैं। नदी की ओर नहा रहे यात्रियों को जरूरी निर्देश देते रहे हैं। मंदिर गर्भगृह पहुच कर सोलह वेदी के समीप यात्रियों के भीड़ को लाइन में कतारबद्ध करवाते रहे। यात्रियों को फिसलन न हो इसे लेकर लगातार सफाई करवाने का निर्देश दिये है। जोनल दंडाधिकारी को निर्देश दिया कि चिकितसिय शिविर में जरूरी दवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित रखे। मंदिर में आये यात्रियों को पूजा के बाद बाहर निकास हेतु हर हाल में दक्षिण की ओर वाले निकास द्वार का ही प्रयोग कर भीड़ को निकास करवाये।

निकास द्वार एव आस पास एरिया में व्यापक सिग्नेज लगवाने के निर्देश दिए हैं। विष्णुपद के समीप बने अस्थायी थाना में लगाये गए सीसीटीवी कंट्रोल पॉइंट का निरीक्षण किया गया, वहां कुछ यात्री वो अपने विभिन्न समस्याओं को लेकर आये हुए थे उनसे पूरी जानकारी लिया और उपस्थित पदाधिकारी को निर्देश दिया कि हर यात्रियों को पूरी मदद एव सहयोग करे। डीएम एव एसएसपी ने पितामहेश्वर पहुच कर व्यवस्थाओं का निरीक्षण किया हू। तेलांगना एव अमरावती से यात्रियों के आये जत्थे ने डीएम एव एसएसपी को कोटि कोटि धन्यवाद दिया कि पहले कभी इतनी वयापक तैयारी नही देखी, जितना इस वर्ष यात्रियों के हित मे सोच कर इतनी व्यवस्थाओ का इंतेजाम सरकार एवं प्रशासन ने किया है।

स्व कैलाशपति मिश्र जंयती पर बीजेपी अनुसूचित जाति मोर्चा के कार्यकर्ता बड़ी संख्या में होगें उपस्थित

प्रात : किरण संवाददाता

गया। बिहार प्रदेश भाजपा कार्यलय के कैलाशपति मिश्र सभागार में भाजपा अनुसूचित जाति मोर्चा की बैठक हुई है ।इस बैठक में मोर्चा के पदाधिकारी एवं जिलाध्यक्ष ने भाग लिया है ।इस बैठक की अध्यक्षता मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष सह पातेपुर विधायक लखेन्दर पासवान,ने अध्यक्षता किये है ।,इस बैठक के मुख्य अतिथि प्रदेश अध्यक्ष सम्राट चौधरी ने बैठक को सम्बोधित करते हुए कहा कि कैलाशपति मिश्र की 100 वां जयन्ती 5 अक्टूबर को बापू सभागार होना है। इस कार्यक्रम में राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा भाग लेंगे इस कार्यक्रम में भाजपा अनुसूचित जाति मोर्चा के कार्यकर्ता की संख्या सबसे ज्यादा उपस्थित होंगे ।इस बैठक में मोर्चा के प्रदेश प्रभारी प्रवीण दास ताँती, उपाध्यक्ष मनोज कुमार चौधरी, महामंत्री संजय दास, मिलन रजक,भोला भास्कर, आनन्द राम,भारती सुमन पासवान, कुवँर विजय पासवान, उमेश राम,ललित दास, सुनील दास, नरेश तुरी,सुनीता पासवान, राजकुमार पासवान, हरि बैठा, किरण देवी,ललित दास सहित सैकड़ों की संख्या में कार्यकर्ता उपस्थित हुए हैं।

स्वच्छता ही सेवा अभियान के तहत कचरा मुक्त स्वच्छ भारत का लिया संकल्प

करपी (अरवल) प्रखंड क्षेत्र के कई अलग-अलग पंचायतो में स्वच्छता ही सेवा अभियान कार्यक्रम आयोजन किया गया, राजकीय मध्य विद्यालय केयाल मे लोहिया स्वच्छ बिहार अभियान तृतीय चरण ठोस एवं तरल अपशिष्ट प्रबंधन स्वच्छता ही सेवा अभियान के तहत केयाल पंचायत के मुखिया रामईबाल साव ने श्रमदान किया गया , वही बम्भई पंचायत के मुखिया मंटू कुमार ने पंचायत क्षेत्र के बसन बिगहा मे स्वच्छता ही सेवा अभियान कार्यक्रम के तहत श्रमदान करते हुए स्वच्छता कर्मियों के साथ कचरा मुक्त स्वच्छ भारत का संकल्प लिया, मुखिया मंटू कुमार ने बताया कि स्वच्छता ही सेवा राष्ट्रपिता महात्मा गांधी बापू के चिन्हो पर चलते हुए सभी स्वास्थ्य कर्मी और बुद्धिजीवी लोगों कचरा मुक्त स्वच्छ भारत का संकल्प लिया।

जिला विधिक सेवा और एनवाईके ने किया श्रमदान

प्रात : किरण संवाददाता

भभुआ कैमूर । जिला विधिक सेवा प्राधिकार कैमूर के तत्वाधान में नेहरू युवा केंद्र,कैमूर के सहयोग से न्यायालय परिसर,भभुआ में स्वच्छता ही सेवा अंतर्गत स्वच्छ भारत जागरूकता अभियान के तहत एक घंटा स्वच्छता के लिए श्रमदान अभियान चलाया गया` यह स्वच्छता ही सेवा अभियान भारत सरकार द्वारा 15 सितंबर से 2 अक्टूबर 2023 तक "जन भागीदारी से जन आंदोलन"के तहत देश भर में चलाया जा रहा हैइस अभियान अंतर्गत देश भर में कई प्रकार के स्वच्छता संबंधी कार्यक्रमो का आयोजन कराया जाना है ,जिसका समापन 2 अक्टूबर 2023 को गांधी जयंती के अवसर पर भव्य रूप से किया जाएगा। कार्यक्रम में उद्घाटन के अवसर पर श्रीमती नम्रता तिवारी (एडीजे-3), शहरयार मोहम्मद अफजल (सचिव,जिला विधिक सेवा प्राधिकार,कैमूर) ,श्री मनोज कुमार (अपर मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी), श्री मनीष मिश्रा (न्यायिक दंडाधिकारी),श्री सुभाष कुमार (न्यायिक दंडाधिकारी), श्री सुशील कुमार श्रीवास्तव (अनुमंडलीय न्यायिक दंडाधिकारी सह प्रभारी प्रशासन व्यवहार न्यायालय,भभुआ) ,मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी, सुशील कुमार(नाजिर ,व्यवहार न्यायालय), विनीत कुमार, धीरज कुमार ,प्रदीप कुमार चौरसिया, रवि रंजन कुमार, रवि ओझा ,करण कुमार ,शंभू कुमार ,महेश कुमार ,स्वयंसेवक पिंटू मिश्रा समेत कई न्यायिक पदाधिकारीगढ़ तथा न्यायिक कर्मी मौजूद थे।

अंतराष्ट्रीय वृद्धजन दिवस पर वरिष्ठ वृद्धजन मतदाताओं को शॉल भेंट कर सम्मानित किया गया

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। समाहरणालय सभागार, भोजपुर में "अंतराष्ट्रीय वृद्धजन दिवस" के अवसर पर वरिष्ठ मतदाताओं यानि 80 + आयु के मतदाताओं को उप विकास आयुक्त, भोजपुर एवं उप निर्वाचन पदाधिकारी, भोजपुर द्वारा भारत निर्वाचन आयोग का संदेश की प्रति एवं शाल भेंट कर सम्मानित किया गया ।उक्त अवसर पर उप विकास आयुक्त, भोजपुर एवं उप निर्वाचन पदाधिकारी, भोजपुर द्वारा उपस्थित वरिष्ठ मतदाताओं को संबोधित किया गया। उप विकास आयुक्त, भोजपुर द्वारा अपने संबोधन में बताया गया कि देश की निर्वाचन प्रक्रिया में आपके निरंतर योगदान के लिए भारत निर्वाचन आयोग को अत्यधिक खुशी हो रही है। लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भाग लेकर और इस तरह भारतीय लोकतंत्र को सुदृढ़ करने के अपने जोश एवं समर्पण से आपने देश के युवाओं के लिए एक उदाहरण स्थापित किया है। आपके जैसे उत्तरदायी वरिष्ठ मतदाताओं के कारण ही हम एक लोकतंत्र के रूप में दुनिया में फल-फूल रहे है और आगे बढ़ रहे हैं। आप निर्वाचन प्रक्रिया को सदृढ़ करने और निर्वाचनों को सही मायनों में स्वतंत्र, निष्पक्ष, समावेशी, सुगम और सहभागी बनाने के लिए हमारे निरंतर प्रगतिशील तंत्र के भी साक्षी है। भारत निर्वाचन आयोग सभी वरिष्ठ नागरिकों से अनुरोध करते हैं कि सदैव की भांति अपना मत अवश्य डाले और युवा पीढ़ी के लिए भारतीय लोकतंत्र में सकारात्मक योगदान के निमित्त एक उदाहरण बने रहें । उप निर्वाचन पदाधिकारी, भोजपुर द्वारा बताया गया कि वरिष्ठ नागरिकों यानि 80+ आयु के मतदाताओं की अधिकतम भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए भारत निर्वाचन आयोग ने व्हीलचेयर, रँप, स्वयंसेवकों, आने-जाने की निःशुल्क परिवहन सुविधाओं, कतार रहित मतदान जैसी कई नई सुविधाओं की व्यवस्था की है। इतना ही नहीं इसके अतिरिक्त फॉर्म 12 । (पोस्टल बैलेट) भरकर अपने घर बैठे-बैठे मतदान कर सकते हैं। उक्त अवसर पर वरीष्ठ मतदाताओं के सहयोगी, जिला निर्वाचन कार्यालय, भोजपुर एवं संबंधित निर्वाचक निबंधन पदाधिकारी के कर्मी भी उपस्थित रहें।

अमरपुरा में अधिकारी व जन प्रतिनिधि ने किया श्रमदान

भभुआ कैमूर। कैमूर जिले के मोहनिया प्रखंड अंतर्गत बेलौंडी पंचायत के अमरपुरा गांव में जिले से आए अधिकारी, पंचायत के प्रतिनिधी व ग्रामीणों ने रविवार को सफाई अभियान चलाकर श्रमदान किया ।यह सफाई अभियान सुबह 10 बजे से लेकर लगभग 12 बजे तक चला ।जिसमे अधिकारी व जन प्रतिनिधी के अलावे दर्जनों सामाजिक कार्यकर्ता शामिल थे। जिले से आए मनरेगा के लोकपाल राजेश श्रीवास्तव के नेतृत्व में बेलौडी पंचायत के वार्ड 12 के सदस्य विवेक कुमार सिन्हा, राधेश्याम बारी, रामू गोंड, भोला बारी, विकास कुमार प्रजापति, सोनू कुशवाहा, अटल प्रजापति, दिनेश सेठ संदीप कुमार बारी, खुशी कुमारी, ज्योति कुमारी, फुलमती कुमारी, समेत कई लोग थे। बता दे की प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश के लोगों से अहवान किया है कि इस बार 2 अक्टूबर को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का जयंती के मौके पर स्वच्छता पखवाड़ा मनाया जाय। इस स्वच्छता पखवाड़ा पर 1 अक्टूबर को सभी अधिकारी, जनप्रतिनिधि व समाजसेवी सुबह 10 बजे से 11बजे तक 1घंटे तक श्रमदान कर देश को साफ व स्वच्छ रखें।

धर्म, जाति तथा महिलाओं पर अमर्यादित टिप्पणी दुर्भाग्यपूर्ण : अर्जुन गुप्ता

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। अखिल भारतीय सामाजिक न्याय मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष सह भाजपा नेता अर्जुन गुप्ता के नेतृत्व में मोर्चा के दर्जनों पदाधिकारी एवं सामाजिक कार्यकर्तओ ने आयकर गोलम्बर पर पुतला दहन कार्यक्रम का आयोजन किया। मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अर्जुन गुप्ता ने कहा कि आज जिस तरह से राजद के एक एक नेता धर्म जाति तथा महिलाओं पर अमर्यादित टिप्पणी कर रहे हैं। श्री गुप्ता ने कहा कि शिक्षा मंत्री चंद्रशेखर सिंह ने रामायण पर अपनी ओक्षी टिप्पणी कर धर्म के नाम पर उन्माद फैलाना चाहा। वहीं, सांसद में राजद के राज्यसभा सांसद मनोज झा द्वारा ठाकुरों पर कविता के माध्यम से अमर्यादित टिप्पणी किया जाना, साथ हीं राजद के पूर्व मंत्री अब्दुल बारी सिद्दीकी द्वारा महिलाओं पर अमर्यादित भाषा का प्रयोग किये जाने के बाद उनको पार्टी से नही निकालाना तथा उन पर पार्टी द्वारा कोई करवाई नही होना पार्टी की सहमति को दर्शाता है। आगे श्री गुप्ता ने कहा कि राजद सुप्रीमो लालू यादव इसी तरह के अमर्यादित टिप्पणी करा बिहार में धर्म के नाम पर तथा जाति के नाम पर उन्माद फैलाना चाहते है। लेकिन बिहार की जानता इनकी सारी रणनीति को समझ चुकी है। आने वाले समय मे इनको जवाब देने का काम करेगी मौके पर अखिल भारतीय सामाजिक न्याय मोर्चा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष प्रह्लाद वर्मा , राष्ट्रीय महासचिव राजकुमारी सिंह प्रीति पाठक अशोक सिंह राष्ट्रीय सचिव सिमा पांडेय, प्रदेश महासचिव मधुरेन्द्र गुप्ता, कंचन कुमारी, रूपा गुप्ता, ओम प्रकाश मिश्रा, रामबाबू सिंह आदि मौजूद थे।

टेकारी नगर भाजपा द्वारा स्वच्छता अभियान चलाया गया

प्रात : किरण संवाददाता

गया ।गांधी जयंती के पूर्व प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं जे.पी.नडडा के आह्वाहन पर भाजपा टिकारी नगर एवं टिकारी ग्रामीण दक्षिण मण्डल द्वारा रविवार को श्रमदान कर सफाई अभियान चलाया गया है ।टिकारी ग्रामीण दक्षिण मण्डल अध्यक्ष अनिल पासवान, नगर अध्यक्ष पुष्पा चौरसिया के नेतृत्व में चलाये गये स्वच्छता अभियान के तहत गोपालपुर ग्राम एवं नगर के पंचदेवता स्थित सूर्य मंदिर परिसर में सफाई अभियान चलाया गया है। मण्डल से जुड़े कार्यकताओं द्वारा पूरे परिसर की सफाई पूरे लगन से की गई है। कार्यकताओं द्वारा गोपालपुर ग्राम के दलित टोला एवं पचदेवता परिसर में निर्मित विवाह मंडप, आंगनबाड़ी केन्द्र व प्राथमिक विद्यालय एवं बरमादा की सफाई की गई है। साथ ही साथ आसपास रहने वाले लोगो को भी स्वच्छता बनाये रखने की अपील की है। मण्डल द्वारा आयोजित कार्यक्रम की सराहना आसपास रहने वाले लोगो ने भी किया है। सफाई अभियान के उपरांत मण्डल से जुड़े कार्यकताओं द्वारा बैठक कर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा स्वच्छता को लेकर ली गई संकल्प को दोहराया गया एवं संकल्प लिया गया कि लोगो को स्वच्छता के प्रति लगातार अपील किया जाता रहेगा।

एम्स पटना में आयुष्मान भव सेवा पखवाड़ा कार्यक्रम का हुआ हुआ समापन

अंगदान है महादान, मौत के बाद भी जिंदा रहते है अंगदाता : डॉ. जीके पाल

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। आयुष्मान भव सेवा पखवारा एम्स पटना द्वारा 17 सितंबर से 1 अक्टूबर तक कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम एम्स पटना में कार्यकारी निदेशक डॉ. जीके पाल के संरक्षण में आयोजित किया गया था, जिसे अंग दान को बढ़ावा देने के लिए स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा निर्देशित किया गया था। अंगदान पर सीएमई आयोजित करने के बाद रविवार को कार्यक्रम का समापन हुआ। इस सीएमई में लिवर ट्रांसप्लांट के बाहरी विशेषज्ञ डॉ. वी. पामेचा (आईएलबीएस, नई दिल्ली) ने एम्स पटना में सर्जिकल गैस्ट्रोएंटरोलॉजी टीम (डॉ. उत्पल, डॉ. कुणाल, डॉ. बसंत) से बातचीत की और मार्गदर्शन किया। उन्होंने भारत में लीवर प्रत्यारोपण की आवश्यकता और प्रशासन से समर्थन प्राप्त करके चुनौतियों पर काबू पाने पर जोर दिया। आईकेडीआर, अहमदाबाद के वरिष्ठ नेफ्रोलॉजिस्ट और आईएसओटी के सचिव डॉ. विवेक कुट्टे ने भारत में किडनी प्रत्यारोपण की स्थिति और सार्वजनिक क्षेत्र में किडनी प्रत्यारोपण को लागत प्रभावी बनाने के लिए धन की व्यवस्था कैसे की जाए, इस बारे में डॉ. कमलेश गुंजन और डॉ. विपिन से बात की। यह दो सप्ताह का कार्यक्रम था जिसमें लोगों को अंग दान के बारे में जागरूक करने के लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए थे। इस पहल में, सार्वजनिक बैठकें, नुक्कड़ नाटक (डॉ. अनिल और टीम द्वारा आयोजित), रंगोली बनाना (डॉ. कमलेश गुंजा द्वारा आयोजित), पोस्टर प्रस्तुति (डॉ. उत्पल आनंद), रैली (डॉ. अनिल और डॉ. अमित राज द्वारा आयोजित) और प्रश्नोत्तरी(राष्ट्र के आम लोगों में अंग दान की अवधारणा को बढ़ावा देने के लिए डॉ. संजीव द्वारा आयोजित) भी आयोजित किए गए थे। ये कार्यक्रम प्रोफेसर (डॉ.) प्रेम कुमार द्वारा संस्थान के सभी संकाय सदस्यों, छात्रों, निवासियों और कर्मचारियों को शामिल करते हुए विभिन्न स्थानों पर आयोजित किए गए थे। संस्थान के प्रमुख डॉ. जीके पाल ने कार्यक्रम की सराहना की और सभी हितधारकों और आम लोगों से अंग विफलता रोगिय

सम्पादकीय

और 9 वर्षों में जनांदोलन बन गया स्वच्छता मिशन

मनोज कुमार

स्वच्छता जीवन का हिस्सा है।स्वच्छता चाहे भीतर का हो या बाहर का, समस्त प्राणी जगत को प्रभावित करता है। स्वच्छ होना और स्वच्छता जीवन में दैनिक रूप से समाहित है। स्वच्छता जब स्वयं से निकलकर समूह की हो, तो घर के अलावा मुहल्ला से होते पूरा देश स्वच्छ हो जायेगा। सामूहिक प्रयास, योगदान के बिना यह संभव नहीं है। गांधी के इस सपने को साकार रूप देने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नौ साल पहले जो बीजारोपण किया, आज उसकी लताएं हर घर, हर मुहल्ले, हर प्रदेश में फैल चुकी हैं। उनके प्रयास का नतीजा है कि 9 साल बाद आज पूरे देश के करोड़ों लोगों ने एक समय, एक साथ सफाई अभियान से जुड़ गए। घर की सफाई से इतर अब आस-पास से लेकर देश को स्वच्छ बनाने के लिए जागरूक हो चुके हैं। यानी स्वच्छता मिशन अब जनांदोलन का रूप ले चुका है।

कोरोना महामारी ने हमें महसूस करा दिया कि स्वच्छता हमारे लिए कितना महत्वपूर्ण है। इसलिए आज के संदर्भ में हर किसी को महात्मा गांधी के स्वच्छता संबंधी विचारों को आत्मसात करना चाहिए। उनके जीवन में स्वच्छता इतना महत्वपूर्ण था कि वह इसे राजनीतिक स्वतंत्रता से भी ऊपर मानते थे। वह मानते थे कि स्वच्छ रहकर ही हम खुद को स्वस्थ रख सकते हैं और स्वस्थ राष्ट्र ही तेजी से प्रगति कर सकता है। वह अपने विचारों में ग्रामीण समाज को ऊपर रखते थे और स्वच्छता के मामले में वह कहते थे कि साफ-सफाई से ही भारत के गांवों को आदर्श बनाया जा सकता है। उनका मानना था कि स्वच्छता को अपने आचरण में इस तरह से अपना लेना चाहिए कि वह आदत बन जाये। महात्मा गांधी ने अपने आसपास के लोगों को स्वच्छता बनाये रखने संबंधी शिक्षा प्रदान कर राष्ट्र को एक उत्कृष्ट संदेश दिया था। उन्होंने ह्लस्वच्छ भारतह्व का सपना देखा था, जिसके लिए वह चाहते थे कि भारत के सभी नागरिक एक साथ मिलकर देश को स्वच्छ बनाने के लिए कार्य करें। महात्मा गांधी के स्वच्छ भारत के स्वप्न को पूरा करने और सार्वभौमिक स्वच्छता प्राप्त करने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गांधी जयंती 2 अक्टूबर 2014 को स्वच्छ भारत मिशन का आरंभ किया था। इसी कड़ी में केंद्र सरकार ने स्वच्छ भारत के तहत देश के स्वच्छता स्वप्न को आगे बढ़ाने को मद्देनजर रखते हुए सार्वजनिक स्थानों पर स्वच्छता अभियान चलाने के लिए बड़े पैमाने पर जनभागीदारी सुनिश्चित की। इस सिलसिले में 15 सितंबर से पखवाड़े भर चलने वाले कार्यक्रम के दौरान स्वच्छता अभियान और पहल के लिए स्वच्छता पखवाड़ा-स्वच्छता ही सेवा 2023 अभियान शुरू किया गया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मन की बात कार्यक्रम के 105वें एपिसोड में देशवासियों से एक अक्टूबर 2023 को सुबह 10 बजे एक तारीख, एक घंटा, एक साथ स्वच्छता अभियान में शामिल होने का आह्वान किया। पीएम ने संदेश में कहा, स्वच्छ भारत देश के सभी परिवारजनों की सामूहिक जिम्मेदारी है। इस दिशा में जनभागीदारी का हर एक प्रयास बहुत अहम है। आइए, एकजुट होकर एक घंटा स्वच्छता को समर्पित करें और देश के उज्ज्वल भविष्य के निर्माण में अपना हाथ बटाएं। जनता ने सरकार के प्रयासों का बड़े पैमाने पर स्वागत किया और बड़ी संख्या में संख्या में स्वच्छता आंदोलन को गति दी है। ह्यस्वच्छता के लिए श्रमदान अभियानह्व का आगाज हो गया है। पीएम मोदी ने नाम दिया है- ह्यएक तारीख, एक घंटा, एक साथ। महात्मा गांधी की 154वीं जयंती से एक दिन पहले देशभर में स्वच्छता ही सेवा अभियान के तहत श्रमदान किया गया। इसके तहत आम से खास तक ने श्रमदान कर सफाई का संदेश दिया।

केंद्र सरकार ने स्वच्छ भारत के तहत देश के स्वच्छता स्वप्न को आगे बढ़ाने को मद्देनजर रखते हुए सार्वजनिक स्थानों पर स्वच्छता अभियान चलाने के लिए बड़े पैमाने पर जनभागीदारी सुनिश्चित की है। इस सिलसिले में पखवाड़े भर चलने वाले कार्यक्रम के दौरान स्वच्छता अभियान और पहल के लिए स्वच्छता पखवाड़ा-स्वच्छता ही सेवा 2023 अभियान शुरू किया गया इन प्रयासों में लगभग 5300 समुद्र तटों की सफाई, 4300 नदी तटों और जलमार्गों को पुनर्जीवित करना, 10,700 से अधिक विरासत अपशिष्ट स्थलों का पुनरुद्धार करना, 2400 पर्यटन और प्रतिष्ठित स्थलों को बेहतर बनाना और 93,000 से अधिक सार्वजनिक स्थानों को बहाल करना शामिल है। इसके अतिरिक्त 12,000 से अधिक जल निकायों की सफाई की गई है, 60,000 से अधिक संस्थागत भवनों का कायाकल्प किया गया है, और लगभग 47,000 कचरा-संवेदनशील स्थलों को साफ किया गया है। ये आंकड़े तेजी से बदलाव लाने के लिए जन आंदोलन के दृढ़ समर्पण एवं शक्ति को दशार्ते हैं।

सादगी, सत्यनिष्ठा, कर्मठता की प्रतिमूर्ति थे लाल बहादुर शास्त्री

मुकेश तिवारी

लोग महान है जिन्होंने इस धरा पर सादगी, सत्यनिष्ठा, कर्मठता की प्रतिमूर्ति लाल बहादुर शास्त्री जी को देखा और सुना था, लालबहादुर शास्त्री जैसी शख्सियत सदियों में जन्म लेती है, लाल बहादुर शास्त्री का जन्म 02 अकटूबर 1904को उत्तर प्रदेश के मुगलसराय में हुआ था, इनके पिता का नाम मुंशी शारदा प्रसाद श्रीवास्तव और मां का नाम राम दुलारी देवी था, शास्त्री जी के पिता प्राथमिक विद्यालय में शिक्षक थे, उन्हे लोग मुंशी जी कहकर संबोधित करते थे, जब शास्त्री जी की आयु महज 18महिने की ही हुई थी, दुर्भाग्य से उनके पिता का निधन हो गया, तब उनकी मां रामदुलारी देवी अपने पिता हजारीलाल के घर मिजार्पुर आ गई। हालांकि कुछ समय बाद ही शास्त्री के नाना भी चल बसे ऐसी स्थिति में लालबहादुर शास्त्री की परवरिश करने में उनके मौसा मौसी ने उनकी मां की हर तरह से मदद की, इस सबके बावजूद वे उन सुनहरे दिनों से वंचित हो गए जिसके वे हकदार थे, खेलने खाने की आयु में उन्हें अभावों में जीवन यापन करने पर मजबूर होना पड़ा, यही अहम वजह थी कि उनमें स्वावलंबन की प्रवृत्ति बचपन से भरी हुई थी। वे बचपन से ही भोजन बनाने, कपड़े साफ करने से लेकर अपना सारा काम स्वयं ही करते थे, आगे चलकर स्वयं के सारे काम अपने हाथ से करना उनकी आदत बन गई थी, प्रधानमंत्री बनने पर भी कभी-कभी वह अपने कमरे की सफाई खुद सीकर लेते थे, उन्होंने किसी आवश्यक वस्तुओं की। अभिलाषा कभी नहीं रखी यह उनके व्यक्तित्व कि सबसे बड़ी खासियत थी। शास्त्री जी सदा आत्मसम्मान को बनाए रखने में विश्वास करते थे। पाकिस्तान द्वारा भारत पर आक्रमण कर देने पर शास्त्री जी ने सैनिकों का मनोबल बढ़ाया तथा किसानों को भी उनके बराबर का दर्जा दिया, जय जवान जय किसान का नारा देकर उन्होंने तत्कालीन परिस्थितियों में दोनों को आवश्यक माना, शास्त्री जी सैनिकों को सतत खान-आपूति सुनिश्चित करने के लिए हफ्ते में स्वयं एक दिन ब्रत रखते थे, साथ ही उन्होंने समूचे देशवासियों से भी एक दिन का व्रत रखने की अपील की, इसका सकारात्मक प्रभाव यह हुआ कि पूरा देश उनसे सहमत होकर एक दिवसीय उपवास रखने लगा और इस तरह उपवास से बचा राशन सीमा पर जूझ रहे जवानों को उपलब्ध होता रहा इसका सकारात्मक प्रभाव शास्त्री जी के जीवन पर यह पड़ा कि उनके हृदय में दीन-हीन, पिछड़े, शोषित तथा उपेक्षित वर्ग के लोगों के लिए करुणा का भाव उमड़ पड़ा था। अभावों ने उन्हें संयमशील, परिश्रमी कर्मशील, स्वाभिमानी व स्वावलंबी बनाया जो मरते दम तक उनकी पूजी रही। शास्त्री जी में ज्ञान प्राप्ति की इच्छा इतनी तीव्र थी कि उसके आगे अभाव रूपी बाधाएं बोनी पड़ जाती। पढ़ने की ललक और अभावों के मध्य जब अंतर्द्वंद्व छिड़ता तोअभाव ही सदैव पराजित होता। यह बात इस उदाहरण से स्पष्ट होती है कि जब शास्त्री जी के पास नाव चलाने वाले को देने के लि। इससे यह बात स्पष्ट होती है कि यदि किसी बात के लिए व्यक्ति दृढ़ संकल्प ले ले तो उसे अपने कार्य में सफलता अवश्य मिलती है। शास्त्री जी का व्यक्तित्व गलत बातों को कभी भी स्वीकार नहीं कर सका। प्रायः ऐसा होता है कि हम दूसरों को तो नसीहत देते हैं परंतु स्वयं उस नसीहत का पालन नहीं करते। शास्त्री जी स्वयं कोई कार्य करके। तब दूसरों को नसीहत देते थे। उदाहरणार्थ घर के भीतर टहलते हुए वे पुस्तकों, पेन, पेंसिल, रबर, कपड़ों आदि को यथा स्थान रख देते थे। इससे उनका तात्पर्य मात्र इतना ही था कि घर के अन्य सदस्य यह सीख ले कि वस्तुओं को यथा स्थान पर रखना चाहिए। हकीकत में सदस्यों को कुछ कहने सुनने की अपेक्षा उनके ऊपर इसका सकारात्मक प्रभाव पड़ता और वे मन ही मन यह दृढ़ निश्चय करते कि अब आगे से उन्हें वैसा करने का मौका नही देता।

रहती दुनिया तक प्रासंगिक रहेगा गांधी दर्शन

दुनिया के किसी भी देश में आज जब युद्ध विरोधी, शान्ति व अहिंसा की बातें होती हैं तो बड़े से बड़े नेता गांधी दर्शन को ही याद करते हैं। यही वजह है कि विश्व के 70 से भी अधिक देशों में शांति के इस महान पुजारी की एक या अनेक प्रतिमाएं स्थापित कर उन्हें सम्मान भी दिया गया है। उन देशों के लोग गांधी से प्रेरणा लेते हैं। यहाँ तक कि विश्व में जब कहीं कोई शांति मार्च निकलता है तो लोग गांधी की तस्वीरों व उनके सद्भावपूर्ण संदेशों से युक्त बैनर जुलूस के आगे लेकर चलते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि यह भारत का सौभाग्य है कि इतने महान विचारों वाला व्यक्ति हमारे देश में पैदा हुआ। सारी दुनिया भारत को गांधी के देश के रूप में ही जानती है। आज जबकि विश्व का बड़ा हिस्सा युद्ध, हिंसा, परस्पर मतभेद, बेरोजगारी, महंगाई, साम्प्रदायिकता जैसे तनावपूर्ण वातावरण के दौर से गुजर रहा है। पूरा विश्व बाहरी व भीतरी तौर पर राजनैतिक वर्चस्व की लड़ाई लड़ रहा है, ऐसे में खास तौर पर गांधी जयंती के अवसर पर हर बार चिंतकों द्वारा यह सवाल उठाया जाता है कि गांधी के सत्य व अहिंसा के सिद्धांत पर आधारित उनके दर्शन और विचारों की आज कितनी प्रासंगिकता महसूस की जा रही है? सितम्बर, 2019 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने संयुक्त राष्ट्र महासभा को संबोधित किया था।

तनवीर जाफरी
लेखक केंद्रीय राज्य मंत्री हैं

भारत ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जन्मतिथि 02 अक्टूबर को उन्हें याद किया जाता है। पूरा विश्व गांधीवाद व गांधी दर्शन का इसीलिये कायल है कि उन्होंने दुनिया को सत्य व अहिंसा के साथ साथ सर्वधर्म समभाव के मार्ग पर चलते हुये विश्व की बड़ी से बड़ी शक्ति से संघर्ष करने की प्रेरणा दी थी। मार्टिन लूथर किंग से लेकर नेल्सन मंडेला और बराक ओबामा तक न जाने कितने नेता हैं जो गांधी जी को अपना आदर्श मानते रहे हैं। दुनिया के किसी भी देश में आज जब युद्ध विरोधी, शान्ति व अहिंसा की बातें होती हैं तो बड़े से बड़े नेता गांधी दर्शन को ही याद करते हैं। यही वजह है कि विश्व के 70 से भी अधिक देशों में शांति के इस महान पुजारी की एक या अनेक प्रतिमाएं स्थापित कर उन्हें सम्मान भी दिया गया है। उन देशों के लोग गांधी से प्रेरणा लेते हैं। यहाँ तक कि विश्व में जब कहीं कोई शांति मार्च निकलता है तो लोग गांधी की तस्वीरों व उनके सद्भावपूर्ण संदेशों से युक्त बैनर जुलूस के आगे लेकर चलते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि यह भारत का सौभाग्य है कि इतने महान विचारों वाला व्यक्ति हमारे देश में पैदा हुआ। सारी दुनिया भारत को गांधी के देश के रूप में ही जानती है।

आज जबकि विश्व का बड़ा हिस्सा युद्ध, हिंसा, परस्पर मतभेद, बेरोजगारी, महंगाई, साम्प्रदायिकता जैसे तनावपूर्ण वातावरण के दौर से गुजर रहा है। पूरा विश्व बाहरी व भीतरी तौर पर राजनैतिक वर्चस्व की लड़ाई लड़ रहा है, ऐसे में खास तौर पर गांधी जयंती के अवसर पर हर बार चिंतकों द्वारा यह सवाल उठाया जाता है कि गांधी के सत्य व अहिंसा के सिद्धांत पर आधारित उनके दर्शन और विचारों की आज कितनी प्रासंगिकता महसूस की जा रही है? सितम्बर, 2019 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने संयुक्त राष्ट्र महासभा को संबोधित किया था। उस समय प्रधानमंत्री मोदी ने कहा था कि -यह अवसर इसलिये भी महत्वपूर्ण है कि इस वर्ष हम महात्मा गांधी की 150वीं जयंती मना रहे हैं। उस समय प्रधानमंत्री मोदी ने जहाँ और कई मुद्दे उठाये थे वहीं उन्होंने भारत का शांति-अहिंसा का संदेश प्रमुख रूप से विश्व को दिया था। संयुक्त राष्ट्र महासभा जैसे वैश्विक मंच से शांति का संदेश देते हुए उन्होंने कहा था कि -ह्व हमने दुनिया को शांति का पैगाम दिया। संयुक्त राष्ट्र के शांति अभियानों में सबसे बड़ा बलिदान अगर किसी देश ने दिया है, तो वह देश भारत है। हम उस देश के वासी हैं जिसने दुनिया को युद्ध नहीं बुद्ध दिये हैं, शांति का संदेश दिया हैह्व। गोया बुध और गांधी के शांति के संदेश ही ऐसे हैं जिनपर प्रत्येक भारतवासी गर्व करता है।

परन्तु इस दुर्भाग्यपूर्ण सत्य से भी इंकार नहीं किया जा सकता कि भले ही पूरा विश्व इस ह्यमहात्माह्व के समक्ष नतमस्तक होता हो, उन्हें अपना आदर्श व प्रेरणास्त्रोत मानता हो परन्तु गांधी व गांधीवाद का विरोध करने वालों में और किसी देश के लोग नहीं बल्कि अधिकांशतयाः केवल भारतवासी ही शामिल हैं। संकीर्ण मानसिकता रखने वालों, साम्प्रदायिकता वादियों ने गांधी को व उनके के विचारों की प्रासंगिकता को तब भी महसूस नहीं किया था जबकि वे जीवित थे। गांधी से असहमति के इसी उन्माद ने उनकी हत्या तो कर दी परन्तु आज गांधी के विचारों से मतभेद रखने वाली उन्हीं शक्तियों को भली-भांति यह महसूस होने लगा है कि गांधी अपने संकीर्ण व साम्प्रदायिकतावादी विरोधियों के लिए दरअसल जीते जी उतने हानिकारक नहीं थे जितना कि अपनी हत्या के बाद साबित हो रहे हैं। और इसकी वजह केवल यही है कि जैसे-जैसे विश्व हिंसा, आर्थिक मंदी, भूख, बेरोंजगारी और नफरत जैसी नकारात्मक परिस्थितियों का सामना करता जा रहा है व इनमें उलझता जा रहा है, वैसे-वैसे दुनिया को न केवल गांधी के दर्शन याद आ रहे हैं बल्कि विश्व को गांधी दर्शन को आत्मसात करने की आवश्यकता भी बड़ी शिद्दत से महसूस होने लगी है।

दूसरी तरफ पिछले एक दशक से गांधी के देश भारत में ही उन्हें अपमानित करने यहाँ तक कि सार्वजनिक रूप से खुलकर गालियां देने वालों की संख्या भी दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है। भारतीय संसद में ऐसे लोगों का प्रवेश हो चुका है जो गांधी को अपमानित करते हैं और उनके हत्यारे नाथू राम गोडसे व उसके वैचारिक सहयोगियों का महिमामंडन करते हैं। ऐसा इसीलिये है कि वर्तमान सत्ता उन्हें प्रश्रय देती है। ये लोग प्रायः सत्तारूढ़ दल के ही सदस्य या समर्थक हैं। आजतक गांधी को अपमानित करने व गोडसे का महिमामंडन करने यहां तक कि उसे राष्ट्रवादी बताने वालों के विरुद्ध कोई कार्रवाई नहीं की गयी। और तो और भाजपा के तत्कालीन राष्ट्रीय अधयक्ष और देश के वर्तमान गृह मंत्री अमितशाह ने भी जून 2017 में रायपुर (छत्तीसगढ़) के मेडिकल कॉलेज में आयोजित बुद्धिजीवियों की एक सभा में जब गांधी जी को याद किया तो उनके शब्द यह थे-ह्वमहात्मा गांधी बहुत चतुर बनिया था, ह्यउसकोह्व मालूम था कि आगे क्या होने वाला है। उसने आजादी के बाद तुरंत कहा था, कांग्रेस को बिखेर देना चाहिए। ह्व इस तरह की शब्दावली का प्रयोग करने वाले नेता की पार्टी के ही एक सांसद ने पिछले दिनों लोकसभा में जब एक मुस्लिम सांसद को घोर आपत्तिजनक बातें कहीं और उस पर साम्प्रदायिक व आपराधिक टिप्पणियां कीं तो उसी कांग्रेस पार्टी के सांसद राहुल गांधी उस पीड़ित सांसद के आंसू पोछने उनके निवास पर गये। यह कांग्रेस व गांधीवादी सोच ही थी जिसने राहुल गांधी को भेजकर सांत्वना देने को विवश किया। और वह गोडसेवादी विचार थे जो उस सांसद के मुंह से निकलते दुनिया को सुनाई दिये।

बहरहाल, पिछले दिनों महात्मा गांधी की वैश्विक स्वीकार्यता एक बार फिर पूरे विश्व ने देखी और महसूस की जबकि जी 20 देशों के शिखर सम्मेलन में शामिल होने के लिए दिल्ली आए अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन, ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ऋषि सुनक, ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री एंथनी अल्बनीज, कनाडाई प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो, संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस, विश्व बैंक के अध्यक्ष अजय बंगा, विश्व स्वास्थ्य संगठन के महानिदेशक टेड्रोस एडनॉम, एशियाई विकास बैंक के अध्यक्ष मासात्सुगु असाकावा, आईएमएफ की प्रबंध निदेशक क्रिस्टालिना जॉजीर्वा सहित लगभग सभी राष्ट्राध्यक्ष महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि देने के लिए उनकी समाधि स्थल राजघाट पहुंचे। इन सभी राष्ट्राध्यक्षों, सरकार के प्रमुखों और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के प्रमुखों ने वहां एक मिनट का मौन रखा और राष्ट्रपिता को श्रद्धांजलि व पुष्पांजलि अर्पित की। महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि देने के बाद जी 20 नेताओं ने ह्यलीडर्स लाउंजह्व में ह्यशांति दीवारह्व पर हस्ताक्षर भी किए। जी 20 के अगले मेजबान ब्राजील के राष्ट्रपति लुइज इनासियो ने इस अवसर पर कहा कि-ह्वजब हम महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि देने के लिए गए उस समय मैं बहुत भावुक हो उठा था। मेरे राजनीतिक जीवन में महात्मा गांधी का बहुत महत्व है क्योंकि अहिंसा का मैंने कई दशकों तक अनुसरण किया है, जब मैं श्रमिक आंदोलन के लिए लड़ा था। यही कारण है कि जब मैंने महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित की तो मैं भावुक हो उठा। ह्य ऐसे तमाम उदाहरण हैं जिनसे यह प्रमाणित होता है कि सत्य-अहिंसा व सर्वधर्म समभाव को अपने आप में समाहित करने वाला गांधी दर्शन कल भी प्रासंगिक था और रहती दुनिया तक प्रासंगिक रहेगा।

जिस धरती पर अपमान हुआ वही से शोहरत पाई महात्मा गांधी ने!

इसी परिवर्तन ने उनमें प्रतिवाद की शक्ति पैदा की और उन्हें अहिंसा का बेताज बादशाह बनाया। पीटरमारित्जबर्ग नाम के इस मामूली से रेलवे स्टेशन को देखकर लगता ही नहीं कि ये वह स्थान है, जिसने भारत को बदल डाला और दुनिया के इतिहास में एक नया स्वर्णिम पन्ना जोड़ दिया। यह घटना 7 जून सन 1893 की है। उस समय युवा बैरिस्टर रहे मोहनदास करमचंद गांधी रेलगाड़ी द्वारा डरबन से प्रिटोरिया जा रहे थे। वे अपने मुवक्किल अब्दुल्लाह के काम से वहां जा रहे थे। जब उनकी ट्रेन पीटरमारित्जबर्ग पर रुकी, तो ट्रेन के कंडक्टर ने उन्हें फर्स्ट क्लास के डिब्बे से निकल जाने को कहा। उस दौरान दक्षिण अफ्रीका में ट्रेन का पहला दर्जा गोरे लोगों के लिए रिजर्व हुआ करता था। ट्रेन के अंग्रेज कंडक्टर ने गांधी को निचले दर्जे के यात्रियों के डब्बे में जाने को कहा, जब गांधी ने कंडक्टर को अपना पहले दर्जे का टिकट दिखाया, तो भी वह नही माना और मोहनदास करमचंद गांधी को बेइज्जत कर के ट्रेन से धक्का देकर जबरदस्ती उतार दिया।

डॉ श्रीगोपाल नारसन
लेखक अमर शहीद जगदीश प्रसाद वत्स के भांजे व वरिष्ठ पत्रकार

दक्षिण अफ्रीका का पीटरमारित्जबर्ग रेलवे स्टेशन का वह खाली प्लेटफॉर्म, जो 19वीं सदी की विक्टोरियन स्टाइल की लाल ईंटों वाली इमारत का भाग है, उसकी जंग खा रही जालियां और लकड़ी की बनी टिकट खिड़की, आज भी उस युग की याद दिलाता है। जिस युग मे भारतीय बैरिस्टर मोहनदास करमचंद गांधी को स्वयं में परिवर्तन करने का अवसर मिला। इसी परिवर्तन ने उनमें प्रतिवाद की शक्ति पैदा की और उन्हें अहिंसा का बेताज बादशाह बनाया। पीटरमारित्जबर्ग नाम के इस मामूली से रेलवे स्टेशन को देखकर लगता ही नहीं कि ये वह स्थान है, जिसने भारत को बदल डाला और दुनिया के इतिहास में एक नया स्वर्णिम पन्ना जोड़ दिया। यह घटना 7 जून सन 1893 की है। उस समय युवा बैरिस्टर रहे मोहनदास करमचंद गांधी रेलगाड़ी द्वारा डरबन से प्रिटोरिया जा रहे थे। वे अपने मुवक्किल अब्दुल्लाह के काम से वहां जा रहे थे। जब उनकी ट्रेन पीटरमारित्जबर्ग पर रुकी, तो ट्रेन के कंडक्टर ने उन्हें फर्स्ट क्लास के डिब्बे से निकल जाने को कहा। उस दौरान दक्षिण अफ्रीका में ट्रेन का पहला दर्जा गोरे लोगों के लिए रिजर्व हुआ करता था। ट्रेन के अंग्रेज कंडक्टर ने गांधी को निचले दर्जे के यात्रियों के डब्बे में जाने को कहा, जब गांधी ने कंडक्टर को अपना पहले दर्जे का टिकट दिखाया, तो भी वह नही माना और मोहनदास करमचंद गांधी को बेइज्जत कर के ट्रेन से धक्का देकर जबरदस्ती उतार दिया। पीटरमारित्जबर्ग के प्लेटफॉर्म पर आज भी लगी एक तख़्ती ठीक उस जगह को बताती है, जहां पर गांधी जी को ट्रेन से धक्का देकर उतारा गया था। तख़्ती पर लिखा है कि, उस घटना ने महात्मा गांधी की ज़िंदगी का रुख मोड़ दिया था। महात्मा गांधी ने ट्रेन से उतार देने पर वह सर्द रात पीटरमारित्जबर्ग के वेटिंग रूम में गुजारी थी, जहां पर मौसम से बचने के लिए कोई इंतजाम नहीं था। महात्मा गांधी ने अपनी आत्मकथा में उक्त घटना का उल्लेख करते हुए, सत्य के साथ मेरे प्रयोग में लिखा है कि, मेरे संदूक में मेरा ओवरकोट भी रखा था, लेकिन मैंने इस डर से अपना ओवरकोट नहीं मांगा कि कहीं मुझे फिर से बेइज्जत न किया जाए।महात्मा गांधी बम्बई से सन 1893 में वकालत करने के लिए दक्षिण अफ्रीका गए थे। उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में रहने वाले भारतीय मूल के एक कारोबारी की कंपनी के साथ एक साल का वकालत के लिए करार किया था। ये कंपनी ट्रांसवाल इलाके में थी। ट्रांसवाल दक्षिण अफ्रीका का वह इलाका था, जहां 17वीं सदी में डच मूल के लोगों ने आकर कब्जा कर लिया था। ब्रिटेन ने ट्रांसवाल के दक्षिण में स्थित केप कॉलोनी को हॉलैंड के उपनिवेशवादियों से छीन लिया था, जिसके बाद वह मजबूर हो गए कि यहां आकर बस गए थे। सन 1860 में भारत सरकार के साथ हुए एक करार के तहत ट्रांसवाल की सरकार ने वहां भारतीयों को इस शर्त पर आकर बसने में सहयोग करने का वादा किया, कि भारतीय मूल के लोगों को वहां के गन्ने के खेतों में बंधुआ मजदूरी करनी होगी। मजदूरी का समय गुजार लेने पर भी भारतीय मूल के लोगों को समाज के अन्य वर्गों से मेल-जोल करने नहीं दिया जाता था। उन्हें बाहरी माना जाता था। उस समय गोरों की अल्पसंख्यक सरकार, भारतीयों पर सबसे ज्यादा टैक्स लगाती थी। इसी कारण दक्षिण अफ्रीका पहुंचने पर महात्मा गांधी को भी नस्लीय भेदभाव का शिकार होना पड़ा था। प्रिटोरिया जाने के दौरान यात्रा में पहले भी गांधी जी के साथ एक घटना डरबन में हुई थी। एक अदालत के जज ने उनसे पगड़ी उतारने को कहा था, जिसपर गांधी जी बिना पगड़ी उतारे अदालत से बाहर आ गए थे। लेकिन गांधी जी के जीवन में व्यापक बदलाव पीटरमारित्जबर्ग रेलवे स्टेशन पर हुई घटना के बाद ही आया।

तब महात्मा गांधी ने फैसला किया था कि वे दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के साथ रंगभेद के खिलाफ लड़ेंगे। अपनी आत्मकथा में महात्मा गांधी ने लिखा भी है कि, ऐसे मौके पर अपनी ज़िम्मेदारी निभाने के बजाय भारत लौटना कायरता होगी, यह रंगभेद की गंभीर बीमारी के लक्षण थे। उन्होंने तय किया था कि इस रंगभेद के खिलाफ आवाज उठाकर लोगों को रंगभेद की बीमारी से बचाने के लिए उन्हें कोशिश तो करनी ही चाहिए। शाइनी ब्राइट कहते हैं कि, महात्मा गांधी के लिए ये मौका ज्ञान प्राप्त करने का था। इससे पहले वह एक शांत और कमजोर इंसान थे, पीटरमारित्जबर्ग की घटना के बाद गांधी जी ने भेदभाव के आगे घुटने टेकने से इनकार कर दिया। वे शांतिपूर्ण और अहिंसक तरीके से रंगभेदी नीतियों के खिलाफ आंदोलन करने लगे थे। उन्होंने हड़ताल, विरोध-प्रदर्शन और धरनों के जरिए वोटिंग और काम करने में रंगभेद के खिलाफ आवाज बुलंद की, महात्मा गांधी को यकीन था कि दक्षिण अफ्रीका में रहकर ही उन्हें रंगभेद के सबसे खौफनाक चेहरे को देखने का मौका मिल सकता था। तभी वे इसका मुकाबला कर उस पर जीत हासिल कर सकते थे। दक्षिण अफ्रीका में अपने तजुर्बे के आधार पर ही गांधी जी ने अहिंसा के हथियार सत्याग्रह की शुरूआत की थी। जिसमें अहिंसक तरीकों से विरोध कर जीत हासिल करने की कोशिश होती थी। ताकि संघर्ष के दौरान दोनों पक्षों के बीच सौहार्द बना रहे। सन1907 में जब ट्रांसवाल की सरकार ने एशियाटिक लॉ अमेंडमेंट एक्ट बनाया तो गांधी जी ने इसके खिलाफ अहिंसक आंदोलन छेड़ दिया था। इस कानून के तहत भारतीयों को दक्षिण अफ्रीका में अपना रजिस्ट्रेशन कराना अनिवार्य कर दिया गया था। आंदोलन के दौरान गांधी को कई बार जेल जाना पड़ा था। लेकिन, आखिर में वह गोरों की सरकार से समझौता कराने में कामयाब हो गए थे। सन 1914 में इंडियन रिलीफ एक्ट पास कर के भारतीयों पर अलग से लगने वाला टैक्स भी खत्म किया गया, जो एक बड़ी जीत थी और इससे भारतीयों की शादी को भी सरकारी मान्यता मिलने लगी थी। सन 1914 में भारत लौटने के बाद महात्मा गांधी ने ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ सत्याग्रह शुरू कर भारतीयों के लिए अनिवार्य सैन्य सेवा खत्म कराई। इसे पहले विश्व युद्ध में भारतीयों को युद्ध लड़ने के लिए मजबूर किया जाता था। महात्मा गांधी के सविनय अवज्ञा आंदोलन का अमरीकी अश्वेत नेता मार्टिन लूथर किंग पर गहरा असर पड़ा था। नेल्सन मंडेला को भी गांधी से खास प्रेरणा मिली। पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम, मदर टेरेसा ही नही देश दुनिया की अनेक हस्तियों ने उनके अहिंसा मंत्र का लौहा माना। उनकी विराटता को स्वीकार करके ही महात्मा गांधी की याद में दक्षिण अफ्रीका ने फ्रीडम ऑफ पीटरमारित्जबर्ग नाम से पुरस्कार शुरू किया, इस पुरुस्कार को लेते हुए नेल्सन मंडेला ने कहा था, सहिष्णुता, आपसी सम्मान और एकता के जिन मूल्यों के लिए गांधी ने संघर्ष किया, उसने मेरे ऊपर गहरा असर डाला है। इसका हमारे स्वतंत्रता आंदोलन ही नहीं, मेरी सोच पर भी बहुत असर पड़ा। दक्षिण अफ्रीका का यह रेलवे स्टेशन भारतीयों के लिए एक तीर्थस्थल की तरह है। दक्षिण अफ्रीका आने वाले बहुत से भारतीय यहां गांधी को श्रद्धांजलि देना नही भूलते। आध्यात्मिक संत सतपाल महाराज ने तो इसी स्टेशन के उसी प्लेटफार्म पर गांधी जी की प्रतिमा लगवाई जहां कभी उनका अपमान हुआ था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सन 2016 में यहां मेहमानों की नोटबुक में लिखा कि, पीटरमारित्जबर्ग में हुई एक घटना ने भारत के इतिहास का रुख ही बदल दिया। स्टेशन के छोटे से वेटिंग रूम में उस घटना की याद में एक म्यूज़ियम बनाया गया है। इसके जरिए लोगों को सन 1893 की सर्द रात की उस घटना की दास्तान बतायी जाती है। यहां पर उस घटना से जुड़े दस्तावेज और गांधी की बैरिस्टर वाली तस्वीर भी मौजूद है। ब्राइट कहते हैं

अनुशासन और एकजुट कार्रवाई को लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्र के लिए ताकत का वास्तविक स्त्रोत मानते

मुरली मनोहर श्रीवास्तव

गांधी जी ने असहयोग आंदोलन में शामिल होने के लिए अपने देशवासियों से आह्वान किया था, इस समय लाल बहादुर शास्त्री केवल सोलह वर्ष के थे। उन्होंने महात्मा गांधी के इस आह्वान पर अपनी पढ़ाई छोड़ देने का निर्णय कर लिया था। उनके इस निर्णय ने उनकी मां की उम्मीदें तोड़ दीं। उनके परिवार ने उनके इस निर्णय को गलत बताते हुए उन्हें रोकने की बहुत कोशिश की लेकिन वे इसमें असफल रहे। लाल बहादुर ने अपना मन बना लिया था। उनके सभी करीबी लोगों को यह पता था कि एक बार मन बना लेने के बाद वे अपना निर्णय कभी नहीं बदलेंगें क्योंकि बाहर से विनम्र दिखने वाले लाल बहादुर अन्दर से चट्टान की तरह दृढ़ हैं।

अनुशासन और एकजुट कार्रवाई राष्ट्र के लिए ताकत का वास्तविक स्त्रोत है। हमें शांति के लिए बहादुरी से लड़ना चाहिए जैसे हम युद्ध में लड़े थे। जितना मैं दिखता हूँ उतना सरल नहीं हूँ। हम शांति और शांतिपूर्ण विकास में विश्वास करते हैं, न केवल अपने लिए बल्कि पूरी दुनिया के लोगों के लिए।

शास्त्री जी की एक सबसे बड़ी विशेषता थी कि वे एक सामान्य परिवार में पैदा हुए थे, सामान्य परिवार में ही उनकी परवरिश हुई और जब वे देश के प्रधानमंत्री जैसे महत्त्वपूर्ण पद पर पहुंचे, तब भी वह सामान्य ही बने रहे। विनम्रता सादगी और सरलता उनके व्यक्तित्व में एक विचित्र प्रकार का आकर्षण पैदा करती

संक्षिप्त खबरें

सोशल मीडिया पर अमर्यादित पोस्ट करने वाला गिरफ्तार

मुजफ्फरपुर ।सोशल मीडिया पर अमर्यादित टिप्पणी एवं धार्मिक भावना को ठेस पहुँचाने वाले एक अभियुक्त को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार अभियुक अकईब फरीद सकरा थाने के मुहम्मदपुर बदल का निवासी बताया गया है। उसपर आरोप है कि उसने सोशल मीडिया पर अमर्यादित टिप्पणी की थी। पुलिस ने उसका मोबाइल जप्त कर लिया है। जांच के दौरान आरोप सही पाए जाने पर सकरा थाने की पुलिस ने इस सन्दर्भ में सकरा थाना कांड सं0-486 / 23 दि0-29.09.23 धारा-153(अ) / 295(अ) / 505 भा0द0वि0 एवम् 66 आई0टी0 एक्ट के तहत मामला दर्ज किया गया है।

तीन वरिष्ठ नागरिक विशिष्ट नागरिक सम्मान से सम्मानित

मुजफ्फरपुर ।थियोसोफिकल लॉज के सभागार में हर वर्ष की भांति अंतर्राष्ट्रीय वरिष्ठ नागरिक दिवस के अवसर पर इस संस्थान द्वारा लोक हित में निः स्वार्थ भाव से किए गए उत्कृष्ट मानव मात्र की सेवाओं के लिए विशिष्ट नागरिक सम्मान से सम्मानित की जाता रहा है। इस वर्ष श्री नरेश कुमार वर्मा (अधिवक्ता), प्रो० मोती प्रसाद सिंह एवं ई० राजकिशोर प्रसाद वर्मा को संस्थान द्वारा आयोजित सम्मान से सम्मानित किया गया है। इस सम्मान समारोह के विशिष्ट अतिथि प्रो० डा० वेणु राय जी थे।इस अवसर पर हरिकिशोर प्रसाद सिंह,दीनबंधु ठाकुर, आलोक कुमार अभिषेक,सुनील कुमार सिन्हा, मधुमंगल ठाकुर, पुष्पा गुप्ता,रामचंद्र प्रसाद सिंह,शत्रुधन प्रसाद , शारदानंद प्रसाद सिंहा,अनुरेश चंद्र वर्मा,संतोष कुमार आदि उपस्थित थे।

पूण्यतिथि पर विधवाओं को दी गयी पेंशन एवं दवाईयां

आदापुर। नकरदेई थाना क्षेत्र के भवानीपुर पंचायत अंतर्गत राजस्व गांव कटकेनवा में माता तेतरी देवी की पूण्यतिथि पर कार्यक्रम आयोजित कर रविवार को विधवाओं को पेंशन एवं दवाईयां दी गयी। उक्त बाबत शिक्षक अवध बिहारी पटेल ने बताया कि हर वर्ष निज माता तेतरी देवी की पूण्यतिथि पर विधवाओं, असहायों, निर्धनों आदि को पेंशन, दवा, भोजन, वस्त्र आदि दी जाती है। बस आज पूण्यतिथि कार्यक्रम आयोजित कर लोगों की सेवा की गयी है। बता दें कि उक्त श्रद्धांजलि कार्यक्रम में एक मेडिकल कैम्प का आयोजन किया गया, जिसमें दिल्ली से आए डॉ.कुंजबिहारी पटेल, डॉ.बजरंग पटेल, डॉ. अरुण सिंह आदि शामिल थे। मौके पर जलेश्वरी, नैना कुंवर, मंजू, रामसवारी, सीमा खातून, रोजिया खातून, इमरतिया, मुनमुनिया आदि सहित तीन दर्जनों विधवाएं मौजूद थीं।

अज्ञात चोर पर बाईक चोरी का एफआईआर हुआ दर्ज

मधुबनी खजौली थानाक्षेत्र के खजौली गांव निवासी विपिन कुमार पासवान के लिखित आवेदन पर खजौली थाना में अज्ञात बाईक चोर पर बाईक चोरी का एफआईआर दर्ज कराया है.दर्ज एफआइआर के अनुसार वह अपना बाईक मंगती हटिया के समीप चूड़ा मील के पास खड़ाकर मेला देखने गया.उसी दौरान किसी अज्ञात व्यक्ति ने उसका बाईक चुरा ले गया.अपने स्तर से काफी खोजबीन की. नहीं मिलने पर खजौली थाना में केस दर्ज कराया है.थानाध्यक्ष सुरेंद्र पासवान ने बताया कि आवेदन के आधार पर केस दर्ज हुआ है.मामले की जांच की जा रही है।

सफाई कर लोगों ने बापू को दी स्वच्छ भारत की स्वच्छांजलि

आदापुर। नकरदेई थाना क्षेत्र के भवानीपुर पंचायत अंतर्गत कटकेनवा गांव के सातों माई मंदिर के प्रांगण में रविवार को स्वामी विवेकानंद युवा मंच के सौजन्य से लोगों ने प्रांगण की सफाई कर महात्मा गांधी को स्वच्छ भारत की स्वच्छांजलि दी।कार्यक्रम का नेतृत्व समाजसेवी किशोरी पटेल ने किया। मालूम हो कि सरकार के द्वारा राष्ट्रपिता के जन्मदिवस पर उन्हें स्वच्छ भारत की स्वच्छांजलि देने की आह्वान की गयी थी। उक्त बाबत युवा रोहित पटेल ने बताया कि बापू ने भारत में अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ संघर्ष किया।साथ ही,गंदगी दूर करने का अभियान चलाया।अतएव बापू की जयंती की पूर्व दिवस पर स्वच्छता अभियान चलाकर उन्हें स्वच्छांजली दी गयी। लोगों ने झाड़ू, डस्टबीन, टोपी आदि पहन साफ-सफाई की। टोपियों पर स्वच्छताग्राही अंकित था। कार्यक्रम में रामेश्वर कुशवाहा, गोपाल पटेल, हरेंद्र पटेल, अखिलेश पटेल, सुजीत पटेल, रंजीत पटेल, राजन कुमार, विजय पायलट,प्रितम कुमार,नितेश कुमार, अरविन्द पटेल, रामविनय कुमार, कृष कुमार, शिवम कुमार एवं चंदेश्वर कुशवाहा सहित दर्जनों लोग शामिल थे।

लोकतंत्र की मजबूती में वरिष्ठ मतदाताओं की अहम भूमिका : जिलाधिकारी

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह जिला पदाधिकारी मधुबनी अरविन्द कुमार वर्मा द्वारा अंतर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस के अवसर पर समाहरणालय स्थित कार्यालय कक्ष में जिले के विभिन्न विधानसभा क्षेत्रों से आए हुए वरिष्ठ मतदाताओं 80 आयु वर्ष से ऊपर को मिथिला की परंपरा के अनुसार पाग शॉल एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। उक्त अवसर पर उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए जिलाधिकारी ने कहा कि लोकतंत्र की मजबूती में वरिष्ठ मतदाताओं की अहम भूमिका है। उन्होंने कहा कि देश में लोकतंत्र की जड़े बहुत गहरी हैं। हमारे समाज में पीढ़ी दर पीढ़ी मूल्यों का प्रवाह निरंतर चलता रहता है और यही मूल्य नई पीढ़ी को दिशा दिखाने का काम करती है। जिले में वरिष्ठ मतदाताओं ने सदैव लोकतंत्र को सीचने का काम किया है और इस अवसर पर उनसे रूबरू होना एक खास लम्हा है। उन्होंने कहा कि मतदान केंद्रों पर उत्तरोत्तर सुविधाओं में सुधार किया गया है। सभी मतदान केंद्रों पर वरिष्ठ मतदाताओं एवं पीडब्लूडी मतदाताओं की सुविधा के लिए रैंप की व्यवस्था और उन्हें लाने ले जाने में सहायता करने हेतु सहायकों का पर्याप्त इंतजाम रहता है। उन्होंने बताया कि वरिष्ठ मतदाता यदि चाहें तो प्रपत्र 12 घ में आवेदन कर डाक द्वारा भी अपने मत का प्रयोग कर सकते हैं। उन्होंने वरिष्ठ मतदाताओं की भूमिका की सराहना करते हुए कहा कि लोकतंत्र में एक-एक वोट का विशेष महत्व है और हमारे बुजुर्गों ने सदैव अपने मताधिकार का प्रयोग कर नई पीढ़ी को यह सिखाया है कि एक-एक वोट कितना मूल्यवान होता है। इस अवसर पर जिलाधिकारी ने जिले के सभी नए मतदाताओं से अपील करते हुए कहा कि वे वरिष्ठ मतदाताओं से प्रेरणा प्राप्त करते हुए चुनाव में अपने मतों का प्रयोग अवश्य करें। आज अन्तर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस के अवसर पर बीएलओ सहायक निर्वाचक निबंधन पदाधिकारियों एवं निर्वाचक निबंधन पदाधिकारियों द्वारा भी सम्पूर्ण जिले कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। निर्वाचन प्रक्रिया में उनकी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने हेतु 80 प्लस आयु के मतदाताओं तथा 100 वर्ष से अधिक आयु के मतदाताओं को सम्मानित किया गया है। निर्वाचन साक्षरता क्लब तथा चुनाव पाठशाला पर आधारित गतिविधियों का भी आयोजन किया गया। उक्त अवसर पर अपर समाहर्ता नरेश झा उप निर्वाचन पदाधिकारी प्रशांत शेखर अवर निर्वाचन पदाधिकारी सदर दिवाकर कुमार चौधरी एवं वरिष्ठ निर्वा चकों में प्रमोद झा छोटी सदा जगन्नाथ साह भोगेंद्र मंडल रतिचंद्र मंडल आदि उपस्थित थे ।

अवैध बिजली चोरी में दो व्यक्तियों के खिलाफ दर्ज हुई प्राथमिकी

प्रात : किरण संवाददाता

सोनो अवैध बिजली चोरी के आरोप में कनीय विद्युत अभियंता ने दो व्यक्तियों को कराया नामजद। विद्युत अभियंता की टीम ने मिली सूचना के आधार पर गंदर पंचायत के मोहगांय निवासी रंजीत पासवान के आवास पर छापेमारी कर 774 वाट अवैध विद्युत प्रयोग का दोषी पाया, उक्त कृत्य से विद्युत विभाग को 77667 रुपए राजस्व की क्षति हुई। छापेमारी टीम अपराहन दहियारी पंचायत के खैरालेबार निवासी राजेंद्र यादव के घर पर छापेमारी की जिसमें 859 वाट अवैध बिजली चोरी का आरोपी पाया। विद्युत अभियंता ने बताया कि उक्त कृत्य से 35005 रुपए राजस्व क्षति हुई, राजेंद्र यादव पर 6413 रुपए पूर्व विद्युत बकाया राशि है जिसका भुगतान अब तक नहीं किया गया। रोशन कुमार ने बताया कि क्षेत्र में अवैध बिजली प्रयोग की सूचना आए दिन मिलते रहती जिसके कारण विद्युत विभाग को हर माह लाखों रुपए राजस्व कि क्षति हो रही। थानाध्यक्ष को दिए गए आवेदन में उक्त अभियुक्तों पर विद्युत अधिनियम की धारा 135 के तहत केस दर्ज करते हुए कानूनी कार्रवाई करने का आग्रह किया ।

पर्यावरण योद्धा सम्मान से सम्मानित होंगी लोक गायिका अनिता

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। मुजफ्फरपुरं की लोक गायिका अनिता कुमारी को पर्यावरण योद्धा सम्मान से सम्मानित किया जाएगा।यह जानकारी देते हुए सरला श्रीवास सामाजिक सांस्कृतिक शोध संस्थान के संयोजक लोक कलाकार सुनील कुमार ने बताया कि 8अकटुबर रविवार को बिहार की राजधानी पटना के युथ होस्टल में पर्यावरण योद्धा सम्मान समारोह आयोजित किया जाएगा ।इस सम्मान समारोह में पीपल नीम तुलसी अभियान के कार्यरत योद्धाओं को सम्मानित किया जाएगा। बिहार राज्य के अलावा अन्य प्रदेश एवं पड़ोसी देश नेपाल में पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में बेहतर कार्य करने वालों को सम्मानित किया जाएगा ।पीपल नीम तुलसी अभियान के संयोजक पर्यावरणविद डॉक्टर धर्मेंद्र ने 8 अक्टूबर 2023 को प्रथम पर्यावरण सम्मान समारोह 2023 में लोक संस्कृति की हस्ताक्षर लोक गायिका अनिता कुमारी को पर्यावरण योद्धा सम्मान के लिए चयनित होने की सूचना व शुभकामना दी हैं। सरला श्रीवास सामाजिक सांस्कृतिक शोध संस्थान के संयोजक लोक कलाकार सुनील कुमार,संरक्षक विजय मिश्र,सरला श्रीवास युवा मंडल की अध्यक्ष सुमन कुमारी,सचिव अदिति ठाकुर,संरक्षक भोला साह,सदस्य पुर्णिमा मिश्र,ज्योति मिश्रा,सरला श्रीवास सोशल कल्चरल रिसर्च फाउंडेशन अध्यक्ष धीरज कुमार, किलकारी बाल केंद्र की समन्वयक आरती कुमारी,परफैक्ट सॉल्यूशन सोसाइटी के सचिव अनिल कुमार ठाकुर,अमन चिल्ड्रेन स्कूल के प्राचार्य बबिता ठाकुर ,सेवादार मंच के अविनाश कुमार ने लोक गायिका अनिता कुमारी को पर्यावरण योद्धा सम्मान के लिए चयनित होने पर बधाई व शुभकामना दी है।

गरीबों को आयुष्मान कार्ड बनाने में मदद करें भाजपा कार्यकर्ता: अजीत

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर । प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सपने को साकार बनाने के लिए हर एक भाजपा कार्यकताओं को कठिन मेहनत करने की जरूरत है। केंद्र सरकार द्वारा देश के गरीबों को मुफ्त चिकित्सा सुविधा प्रदान करने के लिए प्रधानमंत्री आयुष्मान भारत कार्ड योजना चलाया जा रहा है। लेकिन आज आयुष्मान कार्ड नहीं होने के कारन उक्त योजना के लाभ से समाज के बहुसंख्यक गरीब वंचित हैं। वंचित लोगों को मुफ्त में इलाज की सुविधा मिले इसके लिए भाजपा कार्यकताओं को आगे आकर एक अभियान के तहत हर एक गरीब परिवार को आयुष्मान कार्ड बनाने में मदद करना पड़ेगा है। तभी मुफ्त में गरीबों को चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने का प्रधानमंत्री मोदी जी का सपना साकार होगा उक्त बातें रविवार को मीनापुर क्षेत्र के सहजपुर कोठी में भाजपा कार्यकर्ता एवं समर्थकों को संबोधित करते हुए पूर्व मंत्री अजीत कुमार ने कहा। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार हर एक गरीब को पांच लाख का मुफ्त चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है। अभी तक इस देश में लगभग 6 करोड़ गरीब परिवार इस योजना का लिया है। वहीं केंद्र सरकार ने आने वाले दिनों में इस सुविधा का लाभ करोड़ों लोगों को मुहैया कराना चाहती है। इसके लिए बजट में पर्याप्त राशि का व्यवस्था किया गया है। उन्होंने उपस्थित कार्यकताओं से पंचायत स्तर पर अभियान चलाकर आयुष्मान कार्ड से वंचित गरीबों को कार्ड बनाने में हर स्तर पर मदद करने की अपील किया। बैठक की अध्यक्षता सामाजिक कार्यकर्ता प्रदीप कुशवाहा ने किया। इस मौके पर बैठक को पैक्स अध्यक्ष रामनरेश कुशवाहा , भोला प्रसाद,जिम्मेदार सिंह ,जनक प्रसाद, शिवाजी सिंह, मिंटू कुमार ,रामबाबू सिंह, पवन प्रसाद, मनोज पासवान, देवेंद्र राम , विजय झा , रबिन कुमार, गणेश प्रसाद ,प्रभाकर कुमार सिंह आदि लोगों ने संबोधित किया।

राष्ट्रपिता की जयंती बनाने हेतु प्रखंड वासियों ने की स्वच्छता की पहल

प्रात : किरण संवाददाता

सोनो जमुई राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जयंती यादगार बनाने के उद्देश्य से भारतीय प्रधानमंत्री द्वारा शुरू किए गए स्वच्छता अभियान का संदेश जन-जन तक पहुंच चुका, 1 अक्टूबर को प्रधानमंत्री के आवाहन पर पूरे देश में एक साथ स्वच्छता अभियान की शुरूआत अपने आप में ऐतिहासिक उपलब्धि है, इसी कड़ी में प्रखंड क्षेत्र के लगभग 19 पंचायतों में जनप्रतिनिधियों के सहयोग से ग्रामीणों ने स्वच्छता अभियान की शुरूआत की, हाथों में झाड़ू और डस्टबिन उठा महिलाओं ने बढ़-चढ़कर भागीदारी निभाते हुए अधिक से अधिक ग्रामीणों को अभियान से जुड़ने की अपील की, स्वच्छता अभियान का उद्देश्य आसपास के पर्यावरण को स्वच्छ रखते हुए जहां बीमारियों से स्वयं और परिवार की रक्षा करना है, वही वर्तमान समय में मौसमी बीमारियों के खतरे को भी दूर करना है।

पैरामटिहाना पंचायत के सभी वार्ड या गांव मे झाड़ू लगाकर सभी लोगों को जन-जन तक संदेश पहुंचाने का कार्य किए हैं स्वच्छता अभियान अभियान को लेकर स्वच्छता अभियान के तहत नक्सल प्रभावित क्षेत्र चरकापत्थर में एसएसबी के सहयोग से स्वच्छता पखवाड़ा मनाया जा रहा, प्रखंड के अन्य क्षेत्रों में भी ग्रामीणों ने जुलूस निकाल स्वच्छता का संदेश जन-जन तक पहुंचाने का सफल प्रयास किया।

सेवानिवृत्ति एक परंपरा है जिसका निर्वहन हम सभी करते है

प्रात : किरण संवाददाता

गया। सेवानिवृत्ति एक परंपरा है जिसका निर्वहन हम सभी को करना पड़ता है। अपने नौकरी कल में किए गए कार्यों के बाद जीवन शेष बच्चे जीवन को स्वच्छ जीने की जरूरत है। उक्त बातें ग्रामीण कार्य विभाग, कार्य आंचल गया के अधीक्षण अभियंता नागेश्वर प्रसाद यादव ने सेवानिवृत्ति होने के फलस्वरूप विदाई समारोह को सम्बोधित करते हुए कहा। उन्होंने कहा कि अपने 34 वर्षों के कार्यकाल में हमने कई कठिनाइयों का सामना किया, परंतु कार्यों से कभी मुंह नहीं मोड़ा। उन्होंने कहा कि नौकरी के जीवन काल में कई उतार चढ़ाव आते हैं जिसको तैरते हुए हमें अपने कार्यों को करना पड़ता है। श्री यादव ने कहा कि अपने अधीनस्थ कर्मचारियों के साथ समन्वय स्थापित कर कार्य करना चाहिए। कार्यक्रम की अध्यक्षता ग्रामीण कार्य विभाग कार्य प्रमंडल शेरघाटी के कार्यपालक अभियंता श्रीकांत प्रसाद तथा संचालन ग्रामीण कार्य विभाग कार्य प्रमंडल टेकरी के कार्यपालक अभियंता भूपेंद्र कुमार ने की। मौके पर ग्रामीण कार्य विभाग, कार्य प्रमंडल जहानाबाद के कार्यपालक अभियंता राजेश कुमार, नीमचक बथानी के कार्यपालक अभियंता बाबूलाल प्रसाद, इमामगंज के कार्यपालक अभियंता शिव शंकर गुप्ता, कार्य प्रमंडल नवादा एवं रजौली के कार्यपालक अभियंता, सहित कार्य आंचल औरंगाबाद के सूरज कुमार पांडेय, कार्य आंचल गया के अकेंद्र कुमार, प्रबचन सिंह, नेहा कुमारी, सहित कई संवेदक, सहायक अभियंता, कनीय अभियंता एवं कर्मचारी मौजूद थे।

अंतरराष्ट्रीय वृद्ध दिवस पर बुजुर्गों ने साझा की अपनी पीड़ा

प्रात : किरण संवाददाता

भभुआ।अंतराष्ट्रीय वृद्ध दिवस पर नेशनल सीनियर सिटीजन एसोसिएशन द्वारा रविवार को स्थानीय खाकी गोसाई मंदिर परिसर कार्यक्रम का आयोजन किया गया जहाँ गांव-देहात से जुटे बुजुर्गो ने अपनी पीड़ा साझा किया।अध्यक्षता जिलाध्यक्ष सच्चिदानंद सिह ने की।परिवारजनों द्वारा की जा रही अनदेखी एवं सरकार द्वारा रेल किराया रियायत सहित अन्य सुविधाओं में की जा रही कटौती से वरिष्ठ नागरिकों ने काफी नाराज दिखी।वक्ताओं ने कहा की युवाओ के बदलते परिवेश ने वृधों को उनके जीवन के अंतिम पड़ाव में परिवार से अलग-थलग कर दिया है,उन्हें आराम की जगह कई तरह की परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है,बेटे बहु द्वारा उन्हें परेशान करने की शिकायतें लगातार बढ़ रही है।संघीय पदाधिकारियों ने कहा कि अन्तराष्ट्रीय वृद्ध दिवस मनाने का उद्देश्य बुजुर्गों को सम्मान देकर उन्हें यह बताना है कि वे हमारे लिए अति महत्वपूर्ण हैं वही अपने बुजुर्गों का उचित देखभाल करने तथा उनका आदर करने की नसीहत युवापीढ़ी को देना है,बुजुर्गों की सेवामात्र से चारो धाम के बराबर पुण्य की प्राप्ती होती है,उनका सम्मान भारतीय संस्कृति का परिचायक हैं।वृद्धजनों के प्रति अपने कर्तव्यों का निष्ठापूर्वक निर्वहन करने की अपील युवाओ से की गई।मौके पर धर्मराज पाठक, सुनील तिवारी,वरीय अधिवक्ता रंगबहादुर पांडेय,हरिनाथ राम,शिवमूरत सिह,रंगीलाल गुप्ता,बैरिस्टर सिह,रामप्रवेश लाल,शिवपूजन सिह,रामलाल पासवान,विजय राम,सजिमल सिह सहित अन्य उपस्थित थे।

एसीटी पारा मेडिकल एवं केडी मेमोरियल द्वारा निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

रक्सौल। आरोग्य चैरिटेबल ट्रस्ट हॉस्पिटल एवं के. डी. मेमोरियल हॉस्पिटल और ट्रामा सेंटर द्वारा भेलाही के टावर चौक पर डॉ. महेश कुमार की दवा दुकान पर निःशुल्क जांच शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें ब्लड सुगर, हेमोग्लोबिन, ब्लॉड प्रेशर, ईसीजी आदि सभी की निःशुल्क जांच करने के साथ मुफ्त सेनेटरी पैड के साथ महत्वपूर्ण दवाइयों का वितरण किया गया। इस दौरान हॉस्पिटल के निदेशक डॉ. कुमार मनीष ने कहा कि उनका संकल्प है कि अब हर घर होगा स्वस्थ और हर घर होगा निरोग। बता दें कि आरोग्य चैरिटेबल ट्रस्ट एंड पारा मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल लक्ष्मीपुर रक्सौल और के. डी. मेमोरियल हॉस्पिटल और ट्रामा सेंटर मोतिहारी के डॉ. चंदन कुमार के द्वारा उक्त निःशुल्क स्वास्थ्य जांच कैंप लगाया गया था। इस कैंप का मुख्य उदेश्य ब्लॉड प्रेशर एवं शुगर के मरीजो को जागरूक करने के साथ हड्डी एवं नस का निःशुल्क जांच कर लोगो को दवा के विषय में जानकारी देना था। उक्त अवसर पर एम्स के पूर्व चिकित्सक एवं वर्तमान में के. डी. मेमोरियल हॉस्पिटल के निदेशक डॉ. चंदन कुमार हड्डी एवं नस संबंधी ईलाज किया गया व उचित परामर्श दिया गया। इसी को लेकर आरोग्य चरिटेवल ट्रस्ट हॉस्पिटल के डॉ. कुमार मनीष द्वारा सामान्य बीमारी और के. डी. मेमोरियल के डॉ. चंदन कुमार के द्वारा हड्डी और नस के रोगियों का निःशुल्क जांच किया गया। इस कैंप के तहत घर-घर जा कर मरीजो का स्वास्थ्य जांच किया गया तथा साथ में गरीब मरीजो के परिवार के लिए फ्री हेल्थ कार्ड बनवाया गया, जिसपर पुरे एक साल तक इन मरीजो का शुल्क माफ रहेगा। इस कैंप को सफल बनाने मे डॉ. भूपेंद्र कुमार, गौरव, बिपुल, मनीष, अंजनि, मिक्की, सुबोध, सुधा, मिक्की, मुकेश , मिंककी, रणधीर , भुवन, संदीप आदर्श, नीतेश, सुमित, नरेश, महेश, नवीन, अलीशा, रूबी, नितेश, सुबोध अपना भरपूर सहयोग दिया। इस कैंप में तकरीबन 174 मरीजों का चेकअप किया गया और यथा संभव दावा वितरण किया गया। साथ में 85 लोगो की ब्लड शूगर और हीमोग्लोबिन जांच के साथ 25 लोगों की निःशुल्क ईसीजी जांच की गई।

वरिष्ठ नागरिकों के प्रति अपने दायित्वों का निर्वहन करे युवापीढ़ी

प्रात : किरण संवाददाता

सासाराम। वरिष्ठ नागरिक समाज व परिवार के मार्गदर्शके एवं सिरमौर होते है,युवापीढ़ी एवं सरकार की अनदेखी के कारण उनकी परेशानियां बढ़ती ही जा रही है,आज की युवापीढ़ी अपने बुजुर्गों का सम्मान करेगी तभी उन्हें वही सम्मान उनके बुढापे वापस मिलेगी।शहर के आरपी एलौन नगर स्थित नेशनल सीनियर सिटीजन एसोसिएशन के विशेष कार्यालय में रविवार को आयोजित अतंर्राष्ट्रीय वृद्ध दिवस कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सत्यनारायण स्वामी ने ये बातें कही।संघीय पदाधिकारियों एवं सदस्यो ने उत्साहपूर्वक अंतराष्ट्रीय वृद्ध दिवस मनाकर अपने हक के लिए संघर्ष को जारी रखने का संकल्प दुहराया।कार्यक्रम का संचालन करते हुए शिवजग प्रसाद ने कहा की बुजुर्ग परिवार को देखभाल संबंधी सहायता और भावनात्मक समर्थन प्रदान करते हैं ,उनकी उपस्थिति ही परिवार की छत्रछाया होती है,बुजुर्गों की सेवामात्र से चारो धाम के बराबर पुण्य की प्राप्ती होती है,उनका सम्मान करना हमारी सामाजिक सभ्यता का परिचायक हैं,आज के दिन बुजुर्गों को सम्मान देकर यह बताना है कि वे समाज के महत्वपूर्ण हैं अंग है।कहा की वरिष्ठ नागरिकों की सहायता के लिए सीनियर सिटीजन एक्ट 56/2007 कानून लागू किया गया है जिसकी कड़ाई से अनुपालन करने की जरूरत है ताकि बुजुर्गों को त्वरित न्याय मिल सके।इस अवसर पर बुजुर्गों के प्रति निष्ठापूर्वक अपनी जिम्मेवारी निभाने की अपील युवापीढ़ी से की गई।मौके पर गगन कुमार सेन गुप्ता, मुक्तिनारायन मिश्रा,सुग्रीव प्रसाद सिहं,जगरोपन सिहं, अमृता कुमारी, रामायण चौबे,सूर्यनाथ सिह,उपेंद्र कुशवाहा, रामजी सिह,दिनेश कुमार सिह,शिवजग प्रसाद, बच्चन चौबे,दशरथ सिह,सरिता देवी,धीरेंद्र प्रसाद,छठु राम,अरविंद कुमार,भरत प्रसाद,हरिद्वार सेठ,रामराज राम,अभताभ आलम,रामनगीना प्रसाद, मथुरा सिह,जमुना सिह,मोहन साह,शिवकुमार सिह,भानु राम,हरिप्रसाद सिह,बसीर आलम,शिवमुनि सिहं,सत्यानंद स्वामी,डीडी यादव,सतेंद्र कुमार,चांदी कुमार सहित अन्य उपस्थित थे।

डीएम ने जन संवाद में ग्रामीणों को दी विकास योजनाओं की जानकारी

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। जिला पदाधिकारी, प्रणव कुमार की अध्यक्षता में पारू एवं सरैया प्रखण्ड के क्रमशः बहदीनपुर और रूपौली पंचायत में जन संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिले भर के सभी पंचायतों में जिला अनुमंडल एवं प्रखण्ड स्तरीय पदाधिकारियों एव स्थानीय जन प्रतिनिधियों की उपस्थिति में यह जन संवाद कार्यक्रम आगे आयोजित होता रहेगा। सरकार की सभी कल्याणकारी एवं लाभकारी योजनाओं का लाभ समाज के अंतिम पायदान पर बैठे व्यक्ति तक पहुँच पाये इस दिशा में यह जन संवाद कार्यक्रम काफी उल्लेखनिय सावित हो रही है। कई वर्ग और व्यक्ति समूह ऐसे हैं, जो मुख्यालय तक नहीं पहुँच पाते है, उसके लिए जन संवाद कार्यक्रम के माध्यम से उन सभी तक डोर टू डोर जाकर उस मोहल्ला, टोला, पंचायत में शिविर लगाकर उनके समस्याओं का निराकरण और उन्हें मिलने वाली लाभकारी योजनाओं तक पहुँच बनाने की यह अनूठा प्रयास है। जिला पदाधिकारी ने अपनं संबोधन में कहा की यह समाज के सभी व्यक्तियों तक योजनाओं का लाभ पहुँचाने का अनूठा पहल है। उन्होंने उपस्थित जन समूह से समस्याओं के साथ-साथ उनके सुझाव का भी स्वागत किया। कार्यक्रम स्थल पर सभी विभागों द्वारा स्टॉल लगाया गया था, जिनमें वे अपने-अपने सरकारी कार्यक्रमों और योजनाओं की जानकारी लोगों को दे रहे थे। जिला पदाधिकारी ने उनका निरीक्षण भी किया। स्वास्थ्य आवास, योजना, सड़क, विद्युत, शिक्षा, पेंशन योजना, उत्पाद, मत्स्य कल्याण, ग्रामीण कार्य विभाग, सहकारिता, बैंकिंग महिला सुरक्षा आदि में मुख्य रूप से अपना स्टॉल लगाया था। जिलाधिकारी महोदय ने संबोधित करते हुए कहा ह्ल आमजन के लिए सरकार द्वारा विभिन्न योजनाएं चलाई जा रही है, योजनाओं का लाभ कुछ लोगों तक ही मिल पा रहा है, तो कुछ को नहीं मिल पा रहा है। इसका मुख्य कारण आमजनों में योजनाओं की जानकारी का अभाव है । उन्होंने कहा कि स्थानीय स्तर पर आपकी बात पदाधिकारियों / कर्मियों द्वारा नहीं सुने जाने की स्थिति में प्रत्येक शुक्रवार को जनता दरबार में लिखित रूप में अपना आवेदन देकर समस्या का समाधान पा सकते हैं । व्यक्तिगत अथवा सामूहिक समस्याओं से जिला प्रशासन को आप अवगत कराएं, समस्याओं के निदान हेतु जिला प्रशासन आपकी सेवा में सदैव तत्पर है । स्थानीय जनप्रतिनिधियों के माध्यम से जन-जन तक सरकार की योजनाओं का लाभ पहुंचाया जाएगा। जीविका दीदियों , वृद्धा पेंशन, विधवा पेंशन, नल जल, एवं आपदा के स्थिति में सरकार द्वारा दी जाने वाली सहायता आदि के बारे में भी जानकारी दी गई।

मुख्यमंत्री कन्या उत्थान योजना के तहत दी जाने वाली राशि एवं आयुष्मान भारत जन आरोग्य योजना के तहत 5 लाख तक निःशुल्क उपचार, आयुष्मान कार्ड हेतु ऑनलाइन आवेदन कैसे करें के संबंध मे एवं लाभ लेने के लिए पात्रता , मुख्यमंत्री बाल हृदय योजना, जननी बाल सुरक्षा योजना, रेफरल सुविधा,सिटी स्कैन, हेल्थ एंड वैलनेस सेंटर आदि के बारे में आमजन को जानकारी दी गई। इस अवसर पर जिला पदाधिकारी, प्रणव कुमार, डी.पी.ओ. आई.सी.डी.एस. सिविल सर्जन आदि सदस्यगण उपस्थित थे।

हक के लिए संघर्ष को जारी रखेंगे पूर्व वार्ड सचिव

प्रात : किरण संवाददाता

चेनारी। पूर्व वार्ड सचिव संघ प्रखण्ड कमिटी की बैठक इंद्रा चौक स्थित एक स्कूल में रविवार को अयोजित की गई जिसकी अध्यक्षता अशोक श्रीवास्तव तथा संचालन सुरेश कुमार दुबे ने किया।गत 25 सितम्बर को पटना में आयोजित महाधरना को सफल बनाने के लिए प्रखण्ड कमिटी की व्यापक भागीदारी निभाई गई। वक्ताओं ने कहा की हमारी मांगों को जाप अध्यक्ष पप्पु यादव सहित कई नेताओ का समर्थन मिला है।जिला सचिव विरज कुमार पांडेय उर्फ विमल पांडेय ने कहा की मांगे पूरी होने तक हमारा संघर्ष जारी रहेगा।कहा कि एक तरफ बिहार सरकार रोजगार देने की बात करती है वही दूसरी ओर पुराने वार्ड सचिवो के साथ नाइंसाफी कर रही है,सरकार की दोहरी नीति नही चलेगी।प्रखण्ड सचिव सुरेश कुमार दुबे ने कहा कि हम सरकार की रुख की समीक्षा करेंगे उसके बाद अपना आंदोलन और तेज करेंगे।कोषाध्यक्ष अशोक श्रीवास्तव ने कहा कि पंचायती राजमंत्री मुरारी प्रसाद गौतम भी अब टाल-मटौल की भाषा बोल रहे इसकी खमियाजा उन्हें अगले चुनाव में भुगतना पड़ सकता है।उन्होंने अपने हक के लिए संघर्ष को जारी रखने का आह्वान पुराने वार्ड सचिवों से किया।वही सोमवार को एक कार्यक्रम में सासाराम आ रही पूर्वलोकसभ अध्यक्ष मीरा कुमार को ज्ञापन सौप कर न्याय की गुहार लगाने का निर्णय लिया गत।मौके पर अशोक कुमार रजक,शोभनाथ यादव,जितेंद्र सिह,पूनम कुमारी,जितेंद्र मिश्रा,रीना देवी,तेतरी कुमारी, लीलावती देवी,मो.जाकिर अंसारी,सदब्रिज राम,रमेश कुमार, ओमप्रकाश तिवारी,वीरेंद्र मिश्रा,संजय तिवारी,अशोक कुमार श्रीवास्तव सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

संक्षिप्त खबरें

स्कूली बच्चों ने विद्यालय में चलाया सफाई अभियान

संग्रामपुर (मुंगेर)। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जयंती के एक दिन पूर्व रविवार को प्रखंड के विभिन्न पंचायतों के अलग अलग वार्ड मोहल्ले आसपास के गली एवं सड़कों सहित विद्यालयों में स्वच्छ भारत मिशन अंतर्गत स्वच्छता ही सेवा अभियान की शुरूआत की गई। जिसके तहत बड़ी संख्या में लोगों ने हिस्सा लेकर साफ सफाई अभियान को सफल बनाया। जगह-जगह जीविका दीदियों की टोलियां के द्वारा हाथों में झाड़ू लेकर साफ सफाई किया गया। वहीं स्कूली बच्चों को अपने-अपने विद्यालय में एकजुट होकर साफ सफाई करते नजर आए। वरीय साधन सेवी शिव शंकर शुक्ला ने बताया कि प्रखंड के सभी विद्यालयों में स्वच्छता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसके तहत वर्ग कक्ष, भोजनालय, शौचालय, खेल का मैदान, पेयजल के स्रोत, पुस्तकालय, प्रयोगशाला के साथ साथ विद्यालय परिसर की पूर्ण सफाई किया गया। श्री शुक्ल ने प्राथमिक विद्यालय बढ़ौनिया के साफ सफाई पर प्रशंसा व्यक्त करते हुए कहा कि स्वच्छता देवत्व के निकट है। स्वच्छता से हम लोग स्वर्ग को धरती पर उतार सकते हैं। विद्यालय के मापदंड के लिए स्वच्छता एक बड़ा पैमाना है। हम लोग तन मन को साफ रखने के साथ ही सुंदर और साफ लेखनी पर भी ध्यान दें। उन्होंने कहा कि बापू के स्वच्छ भारत का सपना साकार करने के लिए हम सभी को स्वच्छता अभियान का हिस्सा बनना पड़ेगा।

कार्यपालक सहायक सेवा संघ जिला इकाई का हुआ पुर्नगठन

पूर्णिया। विगत दिनों अंबेडकर सेवा सदन पूर्णिया के प्रांगण में कार्यपालक सहायक सेवा संघ जिला इकाई पूर्णिया की आम बैठक की गयी। सर्व सम्मति से नये कार्यसमिति का गठन किया गया। जिसमें अध्यक्ष, सचिव, कोषाध्यक्ष, एवं जिला उपाध्यक्ष पद का चुनाव कराया गया। जिसमें अध्यक्ष पद पर मनु कुमार, सचिव पद पर मो. तारिक अनवर, कोषाध्यक्ष पद पर मिथुन कुमार एवं उपाध्यक्ष पद पर शिवेश कुमार एवं सैयद सगीर अहमद जाफरी को निर्विरोध चुने गए। नव निर्वाचित अध्यक्ष मनु कुमार ने बताया कि जिला प्रशासन के समक्ष सभी कार्यपालक सहायक के मांगों को प्रमुखता से रखूंगा साथ ही संघ के प्रति अपनी जिम्मेवारी व कर्तव्य का पूर्णतः निर्वहन करुंगा।

रेबीज रोधी टीकाकरण सह जन जागरूकता अभियान कार्यक्रम आयोजित

पूर्णिया। अनुमंडलीय पशु औषधालय पूर्णिया सदर के प्रांगण में गुरुवार को एक दिवसीय रेबीज रोधी टीकाकरण सह जन जागरूकता अभियान कार्यक्रम आयोजित की गई। कार्यक्रम का उद्घाटन वार्ड नंबर 21 के वार्ड आयुक्त पति बौआ पाण्डेय ने फीता काटकर किया गया। एक दिवसीय रेबीज रोधी टीकाकरण का लाभ 150 स्वान पेट्स का लक्ष्य निर्धारित प्राप्त है। जिला पशुपालन पदाधिकारी पूर्णिया संजय कुमार की अध्यक्षता में सभी पेट्स स्वान पालकों को कार्यक्रम स्थान पर डा इकराम सहायक निदेशक सामान्य द्वारा रेबीज रोग के विषय में जानकारी दिया गया। इस मौके पर नोडल पदाधिकारी सह पशु शल्य चिकित्सक डॉ मनोहर कुमार, कनीय पशु चिकित्सा पदाधिकारी डा .राजीव कुमार, टीभीओ मोबाईल डा. पिंकी प्रिया, कुक्कुर पदाधिकारी डा.विशेषर प्रसाद, अवर प्रमण्डल पशुपालन पदाधिकारी डा. चन्द्रशेखर आजाद एवं केन्द्र प्रभारी बाएफ या या रजनीश समस्त कर्मी मनोज कुमार, नुरेन सभी लक्ष्य को पूरा करने के लिए तत्पर दिखे।

विधिक सेवा प्राधिकार ने चलाया सफाई अभियान

पूर्णिया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के निर्देश पर महात्मा गांधी की जयंती समारोह से एक दिन पूर्व पूज्य बापू के स्वच्छता संदेश का अनु श्रवण करते हुए अपर न्यायाधीश सह सचिव जिला विधि सेवा प्राधिकार पूर्णिया एवं ग्रीन पूर्णिया के सौजन्य से सफाई अभियान चलाया गया। सफाई अभियान की व्यवहार न्यायालय पूर्णिया के प्रांगण से आर एन साह चौक तक चली। स्वच्छता ही सेवा अभियान के तहत स्वच्छता जागरूकता रैली को पूर्णिया व्यवहार न्यायालय के न्यायाधीश सुजीत कुमार सिंह ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस मौके पर न्यायाधीश सुजीत कुमार सिंह ने कहा कि सुंदर और स्वच्छ समाज के लिए स्वच्छता जरूरी है। उन्होंने कहा कि स्वच्छता के बिना मनुष्य का जीवन अधूरा है। उन्होंने कहा की जरूरत है हर एक नागरिक को पारन लेने की हम अपने आसपास और अपने समाज को एवं खुद को भी स्वच्छ रखेंगे। उन्होंने कहा कि अगर आप चाहते हैं स्वच्छता को लेकर भारत के मानचित्र पर पूर्णिया का पहला स्थान हो तो गांधी जी के जयंती समारोह से एक दिन पूर्व हम सब मिलकर शपथ लेते हैं की हम अपने समाज को स्वच्छ और सुंदर बनाएंगे।

शहरी क्षेत्र का इलाका टापू में हुआ तब्दील, हल्की बारिश से जलमग्न हुआ शहर

शहर स्वक्षता की कड़ी में सफाई व जल निकासी व्यवस्था पर निगम के दावों की खुली पोल

प्रात: किरण ब्यूरो कुंदन राज

भागलपुर। आप जो तस्वीरें देख रहे हैं यह कोई नदी, तलाब या बाढ़ का पानी नहीं है, बल्कि स्मार्ट सिटी शहरी क्षेत्र से सटे एक घनी आबादी वाला दक्षिणी क्षेत्र इलाके की तस्वीर है। वही एक दिन के बारिश से भागलपुर का पूरा दक्षिणी शहरी क्षेत्र इलाका जलमग्न की हालत में पानी पानी हो गया है, यह कोई नई बात नहीं है। बारिश के बाद भागलपुर के कई क्षेत्रों में अक्सर ऐसा दृश्य देखने को मिलता है, लेकिन शहर के कई इलाके जलमग्न की हालत में दिख रहे हैं तो वही निगम क्षेत्र के कई वार्डों में बाढ़ जैसी हालत उत्पन्न होती नजर आ रही है।

गंदगी व जलमग्न स्थिति लोगों की बनी मुसीबत: आम राहगीरों के साथ साथ स्थानीय लोगों की मुसीबतें काफी बढ़ गई है। दफ्तर से लेकर आवास तक नाले का गंदा पानी घुस जलमग्न स्थिति में पहुंच गया है, वही क्षेत्र का कोई ऐसा इलाका शेष नहीं रहा है जहां पर लोग चैन से रह सके। यहां तक की लोगों के घरों में पानी घूंसा हुआ दिखाई दे रहा है, तो वही लोग चौकी, पलंग, कुर्सी, व टेबल पर रहकर किसी तरह अपना समय बिता रहे हैं। वही इस बारिश में शहर की सफाई व जल निकासी व्यवस्था को ले निगम की तमाम दावों की पोल खोल कर रख दी है। आम लोगों की माने तो राहत की सांस लेने वाली कोई उम्मीद ही नहीं दिख रही हो, पूरा शहर बाढ़ ग्रस्त क्षेत्र में तब्दील हो गया है। वही क्षेत्र के लोग वर्षों से जल जमाव की समस्या से निजात पाने के लिए जद्दोजहद में लगे हुए हैं, लेकिन शहर की हालत ऐसी बनी हुई दिख रही है। जिससे नगर निगम व जिला प्रशासन मुक दर्शक बन तमाशाबीन बनी हुई है। स्मार्ट सिटी के नाम पर एक बहुत बड़ा सवालिया निशान बनता

उभर रहा है। जहां एक तरफ स्मार्ट सिटी के तहत करोड़ों रुपए खर्च हो रहे हैं, तो वहीं दूसरी तरफ शहर के जल निकासी को लेकर कोई भी सार्थक प्रयास अभी तक नहीं किया गया है, जबकि यह शहर के लोगों के लिए सबसे बड़ी समस्या बन गई है।

निगम और जिला प्रशासन के उदासीन रवैया को ले उठा सवाल: शहर की साफ सफाई व्यवस्था को लेकर निगम और जिला प्रशासन दिखा उदासीन कार्य रवैया तो वही मामले को लेकर एक बहुत बड़ा सवाल कई तरह के प्रश्न के साथ शहर के लोगों के मन में उठता दिखाई दे रहा है। वही स्थिति ऐसी बनी हुई है कि कहीं शहर की यह समस्या कही चुनावी मुद्दा तो नहीं बन गया है? जिसे लेकर राज्य के सभी दलों के नेता समय पर आएंगे और उक्त समस्या को लेकर जनता की हाँथो में लॉलीपॉप पकड़ा कर अपना उल्लू तो सीधा नहीं कर लेंगे ये सबसे बड़ा सवाल खड़े कर रहे हैं।

शहर पर डेंगू मच्छर का कहर है जारी: जहां एक तरफ शहर के साफ सफाई व्यवस्था को लेकर लगातार निगम की मेयर व उप मेयर लगातार निरीक्षण किये जाने की दिशा में साफ सफाई का जायजा लेते दिखाई देती हैं तो वही निगम के द्वारा साफ सफाई व्यवस्था को लेकर नियुक्त निजी कम्पनी के पदाधिकारी व उनके नुमाइंदे सिर्फ ढोकली नीतियों के साथ अस्वस्थ करती रही हैं। आलम यह है कि निगम में हर दिन साफ सफाई, जलजमाव, नाला सफाई, ब्लिचिंग छिड़काव के अलावा कमचारी वेतनमान भुगतान किये जाने सहित कई मुद्दे को लेकर प्रदर्शन चलता रहता है। वही शहर के वार्ड पार्षद भी आम लोगों के आक्रोश से अछूता नहीं है, वही निगम के कार्य रवैये को लेकर कई बार वार्ड पार्षद दो भाग में विभाजित होते दिख रहे हैं, ऐसे में आम लोगों की जीवन रक्षा व समाज सुरक्षा की बात करना सरासर गलत साबित होता दिख रहा है। वही जिले में लगातार मच्छर के प्रकोप से प्रभावित हो लोग मौत की गाल समा रहे हैं तो वही इसकी जद्दोजहद में छोटे छोटे बच्चे आ रहे हैं, आलम यह है कि निगम प्रशासन के शहर को स्वक्ष व स्वस्थ बनाये जाने के सारे दाबे खोकली दिख रही हैं।

भागलपुर आगमन से कतराते हैं लोग: इन दिनों डेंगू रोग से बढ़ती संख्या को देखते हुए घर से बाहर रह रहे लोगों में भागलपुर आने की बात से कतराते नजर आ रहे हैं। वही डेंगू मच्छर के प्रभाव से बचाव बनी रहे इस लिए ज्यादातर लोग अपने रिस्तेदार व घर परिवार के कुशलता का हाल चाल मोबाइल पर पूछ सावधान रहने की सलाह दे रहे तो वही प्रदेश से अपने घर वापसी की बात से मुकरते नजर आ रहे हैं। शहर की हालत ऐसी बन गई है कि दूर दराज से आने वाले लोगों के बीच बातचीत में डेंगू मच्छर का खोप साफ तौर पर दिखई देता दिख रहा है। वही लोग स्मार्ट सिटी के नाम पर सबसे बड़ा घोटाला सवाल खड़े करते हुए दिख रहे हैं। वही लोगों की माने तो भागलपुर शहर को निगम व जिला प्रशासन के कार्यनीति ने लोगों की जानमाल के साथ खिलवाड़ करने की बात कही है।

नींद से जगा कर घर का दरवाजा खुलवा बदमाशों ने मारी गोली

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। कहलगांव परिक्षेत्र के नगर थाना क्षेत्र अंतर्गत पूरब टोला इलाके में अज्ञात अपराधियों ने हत्या की वारदात को अंजाम दिये जाने का मामला सामने आया है।घटना को लेकर बताया जा रहा है कि विगत रात्रि लगभग 11:30 बजे नवटोलिया इलाके के रामबचन यादव का पुत्र 41 बर्षीय सुरेंद्र यादव की अज्ञात बदमाशों ने गोली मारकर कर दी है।

जिससे उसकी घटना स्थल पर ही मौत हो गई। वही घटना के बाद परिजनों ने आनन फानन में त्वरित इलाज के लिए स्थानीय अस्पताल ले जाया गया जहां चिकित्सकों ने जांचोपरांत मृत घोषित कर दिया। वही अपराधियों ने युवक को दो गोली मारी है, जिसमें एक गोली युवक के पेट में लगी है तो दूसरी गोली कमर के पास लगी है। वही घटना की सूचना परिजनों ने

कहलगांव थाना पुलिस को दी। जिसके बाद पुलिस टीम घटना स्थल पर पहुंच घटना की जांच में जुट गई, वही वरीय अधिकारियों के निर्देश पर घटना की जांच व अपराधियों की निशानदेही को ले एफएसएल टीम घटना स्थल पर पहुंच घटना की जांच में जुट गई है। वहीं दूसरी ओर पुलिस टीम ने मृतक युवक के शव को अपने कब्जे में ले पोस्टमार्टम के लिए मेडिकल कॉलेज नवलखा भेज दिया है। वही घटना से आहत हुए परिजनों का रो-रो कर बुरा हाल है। पुलिस के द्वारा अग्रसर कार्रवाई हेतु तकनीकी रूप से घटना से जुड़ी अन्य बिंदुओं पर भी जांच अनुसंधान में जुटी हुई है। वही घटना से जुड़ी मिली जानकारी के अनुसार अपराधियों ने गोलीबारी की घटना रात लगभग 11:00 बजे इलाके में वारदात को अंजाम दिया था। वहीं घटना की सूचना मिलते ही कहलगांव थाना पुलिस मौके पर पहुंच घटना की जांच में जुट गई है। घटना को लेकर मृतक के साले ने बताया कि मेरे जीजा सुरेंद्र अपनी गाड़ी भाड़े पर लगाने का व्यवसाय करते थे, इसी व्यवसाय की आड़ में अपराधियों ने घर भीतर सोये हुए मेरे जीजा सुरेंद्र को आवाज दे उठा रहा था। वही जब जीजा सुरेंद्र यादव जी ने जब घर के दरवाजे को खोला तो दरवाजे पर खड़े अज्ञात बदमाशों ने ताबड़तोड़ फायरिंग शुरू कर दी। जिससे जीजा जी मौके पर ही लहूलुहान हो जमीन पर गिर पड़े थे, वही अपराधी द्वारा चली गोली की आवाज सुनते ही घर के भीतर से जब मेरी दीदी आई तो उन्होंने जीजा जी को जमीन पर लहूलुहान अवस्था में गिरे हुए देखी तो त्वरित मौके से उठाकर घर के सदस्यों व पड़ोस के लोगों ने जख्मी व गम्भीर हालत में त्वरित इलाज के लिए स्थानीय निजी अस्पताल लेजाया गया, जहां चिकित्सकों ने जांचोपरांत उसे मृत घोषित कर दिया। वही घटना की सूचना के मिलने बाद परिजनों के बीच कोलाहल मच गयी हैं। परिवार के मुताबिक मृतक युवक की किसी से कोई नोक झोंक न हीं कोई विवाद की बात सामने कही जा रही हैं।

बजरंग दल का शौर्य जागरण यात्रा को लेकर किया गया बैठक

प्रात : किरण संवाददाता

संग्रामपुर (मुंगेर)। संग्रामपुर प्रखंड के बजरंगदल के द्वारा आगामी 4अक्टूबर को होने वाला बजरंगदल का शौर्य जागरण यात्रा को लेकर एक बैठक आहूत की गई। इस की अध्यक्षता बमबम भगत ने किया। वही मुख्य अथिति के रूप में बजरंगदल मुंगेर के जिला सह संयोजक गौतम सिंह कुशवाहा एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ(फरर) से मनोज व रितेश केशरी उपस्थित रहे। जिला संयोजक अरविंद कुमार ने कहा की बजरंग दल की शौर्य जागरण यात्रा गत 28 सितंबर 2023 से प्रारंभ होकर 08 अक्टूबर 2023 तक पूरे बिहार में जनता और बजरंग दल सदैव हिंदुत्व के लिये संघर्षरत है, देश और धर्म पर आने वाले संकटों से बजरंग दल सर्व प्रथम उपस्थित रहता है।

इसी क्रम में बजरंग दल द्वारा संपूर्ण देश मे यात्रा का आयोजन किया जा रहा है। जिसका उद्देश्य हिंदू समाज में शौर्य जागरण करना है एवं हिंदु समाज की सुप्त शक्ति को जागृत कर हिंदु समाज को संगठित करते हुए शक्तिशाली बनाना है । शौर्य जागरण यात्रा जो की मधुसूदन मंदिर बौसी बांका से चल कर भागलपुर ,मुंगेर जमुई होते हुए लखीसराय यात्रा सीतलपुर , खड़गपुर, असरगंज, तारापुर धर्म सभा व भोजन करने के बाद शाम को संग्रामपुर आगमन होगा जो संग्रामपुर नगर भ्रमण विधानसभा कर संग्रामपुर में रात्रि विश्राम किया जाएगा । कार्यकताओं से विचार विमर्श कर यात्रा की स्वागत एवं यात्रा के बारे में अधिक से अधिक लोगो को जानकारी प्राप्त हो एवं धर्म सभा सफल हो इसके बारे में कार्यकर्ता को दिशा निर्देश दिया.। वही बैठक में राजेश कुमार,राहुल कुमार, मोहन कुमार, सुरज कुमार सहित बजरंग दल के सैकड़ों ग्रामीण कार्यकर्ता मौजूद थे।

प्रमंडलीय विकास संघर्ष मोर्चा की आवश्यक बैठक संपन्न

प्रात : किरण ब्यूरो, मुंगेर

मुंगेर स्थित शहीद स्मारक भवन में प्रमंडलीय विकास संघर्ष मोर्चा की एक अति आवश्यक बैठक आयोजित की गई। इस की अध्यक्षता मोर्चा के वरिष्ठ नेता प्रभात कुमार मिश्रा एवं संचालन मोर्चा के सह संयोजक मोहम्मद शकील अहमद ने किया। मोर्चा के वरिष्ठ नेता नरेश सिंह यादव ने मुंगेर प्रमंडल से संबंधित विभिन्न मांगों को लेकर एक प्रस्ताव लाया। जिसे सर्वसम्मति से उपस्थित सभी सदस्यों ने ध्वनि मत से समर्थन किया। इस अवसर पर कई प्रस्ताव में जिन मांग की चर्चा की गई वह इस प्रकार है। मुंगेर प्रमंडल में एम्स की स्थापना। जमालपुर में रेल विश्वविद्यालय की स्थापना।जमालपुर कारखाना को मध्य जॉन हाजीपुर में सम्मिलित करना।

जमालपुर में डीआरएम ऑफिस की स्थापना।जमालपुर रेल कारखाना में इलेक्ट्रिक इंजन, 175 टन क्रेन, जैक , कोच , बैगन के निर्माण के माध्यम से कारभार बढ़ाना। प्रशिक्षित मजदूरों की बहाली कर उसे कार्य में लगाना।बरियारपुर, मननपुर रेल लाइन एवं सुल्तानगंज, तारापुर, कटोरिया रेल लाइन का निर्माण। मुंगेर सिगरेट फैक्ट्री में प्रशिक्षित मजदूरों की बहाली कर कार्य भारी बढ़ाना। बंदूक फैक्ट्री मुंगेर का बिहार सरकार अधिग्रहण कर आधुनिक शास्त्रों का प्रशिक्षित मजदूरों से निर्माण करवाना। होम्योपैथिक कॉलेज की मान्यता बहाल कर नामांकन की प्रक्रिया पुनः शुरू करना। मुंगेर रेलवे स्टेशन होकर रेलों की संख्या की संख्या में बढ़ोतरी करना। राजा देवकीनंदन सिंह कॉलेज मुंगेर स्थित जर्जर डॉक्टर जाकिर हुसैन छात्रावास एवं पीजी छात्रावास का मरम्मती तथा कॉलेज के टूटे भाग में चार दिवारी एवं जर्जर कॉमन रूम की जगह पर नए बॉयज कॉमन रूम का निर्माण।

नौवागढ़ी पंचायत में मनाया गया स्वच्छता पखवाड़ा

प्रात : किरण संवाददाता

सदर मुंगेर। रविवार को सदर प्रखंड अंतर्गत नौवागढ़ी दक्षिणी पंचायत में लोहिया स्वच्छ बिहार अभियान के तहत 15 सितंबर से 1 अक्टूबर तक आयोजित किये जा रहे स्वच्छता पखवाड़ा के अंतिम दिन स्वच्छता कर्मियों ने वार्ड नंबर- 1 एवं 2 में साफ सफाई की। वहीं मुखिया प्रमिला देवी द्वारा बताया गया कि स्वच्छता से ही हम स्वच्छ रह सकते हैं। इसलिए सभी पंचायत वासियों से मेरा अनुरोध है कि साफ सफाई के प्रति जागरूक रहे सफाई अगर होगा तो किसी भी प्रकार का कोई बीमारी नहीं होगा इसलिए स्वच्छता जरूरी है। स्वच्छता जागरूकता कार्यक्रम में उपस्थित आईटीसी, मिशन सुनहरा कल की अनुषंगी संस्था वासी एवं धान फाऊंडेशन के कार्यकर्ता भी उपस्थित रहे। उन्होंने साफ सफाई में बढ़-चढ़कर भाग लिया। कार्यक्रम में पर कई ग्रामीण भी शामिल रहे।

घर में घुसे चोर को गृहणी महिला ने रंगेहाथ धराया

ग्रामीणों ने युवक को बिजली खम्बे में बांध जमकर की धुनाई

प्रात : किरण संवाददाता

भागलपुर। जगदीशपुर थाना परिक्षेत्र स्थित योगीवीर गांव इलाके में एक चोर को रंगेहाथों धरदबोचा है। वही घटना को लेकर मिली जानकारी के मुताबिक गांव के एक घर में चोरी की नीयत से घुसे चोर को ग्रामीणों ने चोरी करते हुए रंगे हाथ पकड़ लिया गया। इस दौरान ग्रामीणों ने धराये चोर को बिजली के खम्बे में बांध कर जमकर धुनाई कर दी।

वही मामले को लेकर गृहणी महिला पुष्पांजलि कुमारी ने बताया कि रात्रि 2:30 बजे के करीब मेरी नींद खुला तो देखा कि मेरे घर की बिजली की तार कटी हुई है, वही अंधेरे का सहारा ले एक युवक मेरे दरवाजे के आड़ में छुपा हुआ दिखाई दिया तो जब मैने उसे पकड़ने की कोशिश की

तो वह मेरे हाथ को झटक कर भागने लगा। तभी मैं घर के अंदर आई तो मुझे एहसास हुआ कि घर में कोई और भी युवक मौजूद है। तभी मैं अपने कमरे में गई तो मुझे पलंग के अंदर कोई छुपा होने का एहसास हुआ तो तभी मेने अपने कमरे का दरवाजा बंद कर और बाहर निकाल कर चिल्लाने लगी। तभी मेरे सोर शराबे को सुनकर कई लोग जमा हो गए थे। वही पड़ोसियों ने जब घर के दरवाजे को खोलकर देखा तो पलंग के नीचे एक युवक छिपा हुआ था। वही ग्रामीणों ने उक्त धराये युवक को बांध कर पूछताछ की तो युवक ने अपनी पहचान गांव के ही भुवनेश्वर महतो के पुत्र विक्की कुमार के रूप में की। वही पड़ोसियों ने पुनः उसे घर में बंद कर दिया। वही पीड़िता ने बताया कि चोर द्वारा मेरे बक्से का कब्जा तोड़कर उसमें रखे 18 हजार रुपया नगर 12 भर का चांदी की पायल, मांग का टीका सहित कई सामान सहयोगी बने दूसरे युवक लेकर भागने में सफल हो गया है। सुबह होते ही काफी संख्या में ग्रामीण वह जुड़ गए और चोर को पड़कर बिजली के खंभे से बांध दिया साथ ही इसकी सूचना जगदीशपुर थाना पुलिस को दी। वही सूचना मिलते ही जगदीशपुर थाना के गस्ती पुलिस टीम मौके पर पहुंच धराये चोर को हिरासत में लेकर थाना लेजाया गया है। वही गिरफ्तार चोर से पुलिस चोरी के सामान की बरामदगी हेतू दूसरे अन्य चोर साथी के पता लगाने के लिए पूछताछ की कवायद में जुट गई है। वही पुलिस द्वारा पूछताछ किये जाने के बाद भी गिरफ्तार युवक ने कुछ बताने से मुकर रहा है। वही पुलिस ने पीड़िता के द्वारा दिये लिखित आवेदन पर मामला दर्ज कर दूसरे चोर साथी का पता लगाने में जुटी हुई है।

सिंचाई के क्षेत्रों में भी बेहतर काम हो रहा है : हिमांशु

प्रात : किरण संवाददाता

सदर मुंगेर । राजद के राज्य परिषद सदस्य सह प्रदेश सचिव युवा राजद बिहार गजेंद्र कु० हिमांशु उर्फ अरविंद ने प्रेस रिलीज जारी कर कहा है कि उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव 2020 के विधानसभा चुनाव में जो बिहार की जनता से वादा किये थे की जब हमारी सरकार बनेगी तो बिहार के लोगों को पढ़ाई,कमाई दबाई,सिंचाई,सुनवाई और कार्यवाही वाली सरकार देगें। साथ हीं साथ बिहार के बेरोजगार युवाओं को 10 लाख सरकारी नौकरी देगें। बिहार में जबसे महागठबंधन की सरकार बनी है और हम सबों के नेता युवा शक्ति के प्रतीक तेजस्वी यादव एवं नीतीश कुमार के नेतृत्व वाली महागठबंधन सरकार में डिप्टी सीएम बने हैं तब से लगातार एक एक कर चुनाव में कियें सारे वादों को पूरा कर रहे हैं। एक ओर जहाँ पढ़ाई के मामले में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिले इसके लिए बड़े पैमाने पर शिक्षकों की बहाली निकाली गयी है वही दूसरे ओर सुनवाई ओर करवाई पर अमल करने के लिए बड़ें पैमाने पर पुलिस महकमे में लाखों भर्तियाँ निकाल कर बिहार की विधि व्यवस्था को दुरुस्त किया जा रहा है।

उन्होंने कहा कि लाखो लाख बेरोजगार युवाओं को रोजगार का अवसर भी मिल रहा है, जिससे उसके आर्थिक स्थिति में सुधार होगा इतना ही नही बिहार के स्वास्थ्य विभाग को सुदृढ़ करने के लिये लाखों की संख्या में नर्स कम्पाउन्डर डॉक्टर एवं अन्य स्वास्थ्य कर्मियों की बहाली निकाली जा रही रही तथा बिहार के सभी अस्पतालों में बेहतर स्वास्थ्य सुविधा के लिए नये नये भवन व अन्य चिकित्सीय सुविधा का विकास एवं विस्तार किया जा रहा है। साथ ही साथ बिहार में आधारभूत संरचना के क्षेत्र में भी बेहतर काम किए जा रहे है बिहार के ग्रामीण क्षेत्रों में 10 हजार किलो मीटर ग्रामीण सड़क का निर्माण एवं मरम्मती एवं रख रखाव के क्षेत्र में काम हो उसके लिए कैबिनेट से स्वीकृति प्रदान हो चुका है। हाल ही में महादलित समाज के विकाश के लिए बहाल टोला सेवको तथा अल्पसंख्यक समाज के गरीब बच्चों के बेहतर शिक्षा के लिए बहाल तालीम मरकज शिक्षकों के मानदेय दुगना कर उनके भी आर्थिक विकास पर महागठबंधन सरकार काम कर रही है। गरीब गर्भवती महिलाओं के बेहतर देखभाल व प्रसव में सहायता के लिए बहाल आशा दीदियों के मानदेय में भी बढ़ोतरी कर उनके आर्थिक विकास पर जोर दिया जा रहा है। सिंचाई के क्षेत्रों में भी बेहतर काम हो इसके लिए भी बिहार भर में सैकड़ों सिंचाई परियोजना पर काम चल रहा है।साथ हीं कृषि विभाग में भी हजारों हजार की संख्या में बहाली निकाल कर किसानों के बेहतरी एवं युवाओं को रोजगार के अवसर प्रदान कर रहे हैं।

अपनी मांग को ले अधिवक्ताओं ने दिया एक दिवसीय धरना

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। जिले में उच्च न्यायालय खंडपीठ की स्थापना की मांग को लेकर वर्षों से आंदोलन अद्दतन जारी रहा है। वही अधिवक्ता अपनी मांगो को लेकर जिला स्थित व्यवहार न्यायालय के मुख्य गेट के समीप हल्ला बोल प्रदर्शन के साथ अधिवक्ताओं ने एक दिवसीय धरना दिया है।

मामले को लेकर बताया जा रहा है कि विगत कई सालों से भागलपुर में उच्च न्यायालय खंडपीठ स्थापना की मांगों को लेकर अधिवक्ता लगातार अपनी आवाज बुलंद कर आंदोलन करते रहे हैं। वही अधिवक्ता संघ के नेतृत्व में उच्च न्यायालय की मांग को लेकर पुनः अधिवक्ताओं ने धरना दिया गया। वहीं धरनार्थी अधिवक्ताओं का कहना है कि राज्य सरकार के द्वारा उच्च न्यायालय खंडपीठ स्थापित किये जाने की दिशा में अभी तक कोई कार्रवाई नहीं की गई है। जबकि प्रधानमंत्री कार्यालय से लगातार इन लोगों को सूचना मिल रही है कि राज्य सरकार के पत्र भेजे जाने के बाद प्रधानमंत्री कार्यालय पर आगे की कार्रवाई करेगी, लेकिन राज्य सरकार के द्वारा हम लोगों की मांग पर आज तक कोई कार्रवाई नहीं की गई है। वही भागलपुर परिक्षेत्र में उच्च न्यायालय खंडपीठ स्थापना नहीं होने के कारण आम लोगों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। अगर यहां पर खंडपीठ की स्थापना हो जाएगी, तो आम लोगों को न्याय के लिए उच्च न्यायालय के चक्कर नहीं काटने होंगे।

अभिभावक व शिक्षक के बीच संगोष्ठि कार्यक्रम हुई सम्पन्न

प्रात : किरण संवाददाता

भागलपुर। जगदीशपुर परिक्षेत्र स्थित मध्य विद्यालय जगदीशपुर में विभागीय निर्देश पर विद्यालय के चतुर्थ और पंचम वर्ग के नामांकित बच्चों के अभिभावक व शिक्षक के बीच एक संगोष्ठी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। वही विद्यालय प्रांगण में शिक्षक दिवस, साक्षरता दिवस, पोषण माह के साथ स्वच्छता विषय बिंदू को लेकर एक संगोष्ठी हुई थी। वही कार्यक्रम

का शुभारंभ विद्यालय के शिक्षा समिति के सचिव पिंकी देवी, शिक्षिका बिन्दु कुमारी, मुरली कुमार मंडल तथा बच्चों के अभिभावक नित्यानंद पोद्दार ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्जवलित कर किया। इस अवसर प्रधानाध्यापक आशुतोष चन्द्र मिश्र ने कार्यक्रम में उपस्थित विद्यालय के नामांकित बच्चों के अभिभावक का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इस प्रतिकूल परिस्थिति में आप सभी की उपस्थिति विद्यालय के प्रति आप सभी विश्वास को दिखाता है। इसी प्रकार आप सभी अभिभावकों ने विद्यालय प्रति जागरूकता दिखा कर हमारा मनोबल बढ़ाया है। जिससे विद्यालय के शिक्षाविदित कर्मियों द्वारा अपने पूर्ण मनोयोग से बच्चों को सिखाने के लिए तत्पर रहते हैं। वही उन्होंने बताया कि कार्यक्रम की पूरी तैयारी बाल संसद तथा यूथ क्लब के सदस्य तन्नू, खुशी, अंजलि, रिमझिम, तमन्ना, ठाकुर प्रसाद, जाहन्वी, विद्या, प्रिया, लक्की के द्वारा किया गया था। इस मौके पर शिक्षक अभिनाश सरोज, कल्पना, कौशिल्या, नवल व नीरज सहित सैकड़ों बच्चों के अभिभावक उपस्थित थे।

अपने छोटे बेटे व बहू के अत्याचार से तंग आकर वृद्ध महिला पहुंची डीआईजी कार्यालय

प्रात : किरण ब्यूरो।

भागलपुर। एक वृद्ध महिला अपने पुत्र के प्रकोप से डरी सहमी हुई न्याय की गुहार ले डीआईजी कार्यालय पहुंची। मामले को लेकर बताया जा रहा है कि एक लाचार मां अपने ही बेटे के अत्याचारों से तंग आकर न्याय की गुहार लगाने डीआईजी के समक्ष पहुंची है। जहां महिला ने डीआईजी विवेकानंद से मिलकर अपने सबसे छोटे पुत्र लक्ष्मण यादव व उसकी पत्नी ज्योति देवी के अत्याचार के कहर से बचाने की गुहार लगाई है। वही पीड़ित हबीबपुर थाना क्षेत्र के शाहजंगी नवटोलिया की रहने वाली महिला साबो देवी पति सखीचंद यादव के साथ

डीआईजी से मिलकर अपनी आपबीती सुनाई है। वही पीड़िता साबो देवी ने कहा है कि मेरा छोटा बेटा लक्ष्मण यादव पहले मारपीट कर मोटरसाइकिल अपने नाम करवा लिया है, अब जमीन बेच रुपए की मांग कर रहा है, वही पैसे नहीं देने पर हम पति-पत्नी के साथ मारपीट कर किसी मामले में फंसा देने की धमकी लगातार देता रहता है, हालांकि मामले को लेकर डीआईजी विवेकानंद ने पीड़ित मां व पिता को कार्रवाई किये जाने हेतू अस्वस्थ किया है, तो वही डीआईजी ने संबंधित थाने की पुलिस पदाधिकारी को निर्देशित किया है कि मामले की जांच कर आरोपी बेटे व उनकी पत्नी के विरुद्ध मामला दर्ज कर सख्त से सख्त कार्रवाई की जाय।

सम्पन्न की चादरपोशी, शांति सौहार्द बनी रहे, लोगों ने मांगी दुआएं

भागलपुर। हजरत अनजान शाह हजरत मेहंदी साह रहमतुल्ला अलय के दरगाह पर चादर पोसी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। वही बाबा के दरगाह पर चादर पोसी कार्यक्रम वर्षों से आयोजन किया जाता रहा है, इस दरगाह पर एकता अखंडता की मिसाल साफ तौर पर दिखाई देती है, इस दरगाह पर हिंदू, मुस्लिम, सिख, इसाई सहित सभी धर्म के लोग मिलजुल कर चादर पोसी कार्यक्रम में शामिल होते हैं और इबादत करते हैं, साथ ही दरगाह प्रांगण में सभी लोग एक साथ मिलजुल कर जिले में शांति सौहार्द बनी रहे इस उद्देश्य को लेकर एकता के प्रतीक बाबा के दरगाह पर सभी एक दूसरे को गले मिलकर बधाइयां भी देते दिखाई देते हैं। इस दरगाह की खासियत यह भी है कि इस दरगाह पर चादरपोशी हिन्दू धर्म के लोगों द्वारा की जाती है। वही इस दरगाह पर आने व

संक्षिप्त खबरें

स्व. वेद प्रकाश गुप्ता की सातवीं पुण्यतिथि मनाई गई

आरा। स्थानीय महादेवा रोड स्थित मालती तकनीकी एवं सामाजिक कल्याण संस्थान द्वारा संचालित डॉक्टर पी0सी0 निःशुल्क कंप्यूटर प्रशिक्षण केंद्र में समाजसेवी एवं वळक भोजपुर प्रतिनिधि एवं संस्था के पूर्व फाइनेंशियल सपोर्टर स्व.वेद प्रकाश गुप्ता की सातवीं पुण्यतिथि मनाई गई। इस मौके पर संस्था की मैनेजिंग डायरेक्टर मालती गुप्ता, सचिव सत्य प्रकाश, संस्था के कार्यकारिणी सदस्य मिथलेश कुमार, रामजी कुमार, वैभव कुमार, अर्पिता कुमारी, आकाश सिंह, दुर्गा, मृगांशी, शिवांशु, हरेंद्र प्रसाद, रंजन , सृष्टि , वेदांत, शशिकांत तिवारी ने उपस्थित होकर दिवंगत आत्मा के चलचित्र पर माल्यार्पण किया एवं पुष्पांजलि दिया।

श्रम दिवस की अवसर पर स्वच्छता अभियान चलाया गया

आरा। महादेव रोड स्थित बिहार सरकार के साथ निश्चय के अंतर्गत स्थापित कौशल युवा कार्यक्रम (श्रम संसाधन विभाग) मालती तकनीकी एवं सामाजिक कल्याण संस्थान डॉक्टर पीसी निशुल्क कंप्यूटर प्रशिक्षण केंद्र द्वारा आयोजित श्रम दिवस की अवसर पर स्वच्छता अभियान चलाया गया इस अवसर पर संस्था के सचिव सत्य प्रकाश ,एमडी मालती गुप्ता , कोषाध्यक्ष सरिता गुप्ता, जिला कौशल प्रबंधन संजय कुमार एवं राकेश कुमार , नरेंद्र कुमार ,आकाश कुमार सिंह, अर्पिता ,वैभव, दुर्गावती, मृगांशी,शिवांशु , प्रत्युष, मुस्कान, खुशी ,मनीषा ,आदित्य, मधु ,आरिफ, अहित जमाल, दिव्या ,कोमल ,सोनाली ,अनामिका, गुलशन ,चांदनी ,अंकित, रिया, रोहन, संध्या , प्रिंस, अजय ,सोहेब चल, शुभांग ,गौतम ,रंजन, स्वच्छ बिहार, स्वच्छ राज्य, स्वच्छ भोजपुर, एवं स्वच्छ कुशल युवा केंद्र का स्लोगन लगाकर बैनर के माध्यम से स्वच्छता ही सेवा का कार्यक्रम को सफल बनाया। कार्यक्रम का अध्यक्षता माननीय नोडल पदाधिकारी नूर अहसन द्वारा किया गया।

जिला विधिक सेवा प्राधिकार के तत्वाधान में चलाया गया जागरूकता अभियान

आरा । माननीय उच्च न्यायालय, पटना एवं बिहार राज्य विधिक सेवा प्राधिकार, पटना के निर्देश के अनुपालन में 15 सितंबर से 02 अक्टूबर 2023 तक मनाए जा रहे राष्ट्रव्यापी अभियान स्वच्छता ही सेवा-2023 के अंतर्गत माननीय जिला एवं सत्र न्यायाधीश ब्रजेश कुमार मालवीय द्वारा जिला विधिक सेवा प्राधिकार भोजपुर आरा के तत्वाधान में जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। प्राधिकार के सचिव गौतम कुमार ने बताया कि आज जिला न्यायाधीश के आह्वान पर सभी पारा विधिक स्वयंसेवक, पैनल अधिवक्ता एवं कर्मियों द्वारा श्रमदान किया गया। उनके द्वारा अपने-अपने क्षेत्र में जागरूकता शिविर के माध्यम से साफ सफाई से होने वाले हैं फायदे के बारे में लोगों को जागरूक किया साथ हैं स्वयं झाड़ू लगाकर अपने-अपने क्षेत्र में सफाई भी की।

भाजपा भोजपुर ने चलाया स्वच्छता अभियान

आरा। भारतीय जनता पार्टी भोजपुर द्वारा सेवा पखवाड़ा कार्यक्रम के अंतर्गत प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के आह्वान पर गाँधी जयंती के अवसर पर स्वच्छता अभियान चलाया गया। स्वच्छता अभियान गाँधी जयंती के पूर्व पूरे जिले मे चलाया गया। सभी 32 मंडलो अंतर्गत विभिन्न बूथो पर यह अभियान चलाया गया। सभी जगह भारतीय जनता पार्टी के कार्यकताओ ने साफ -सफाई का काम किया गया। मुख्य कार्यक्रम आरा जेपी स्मारक और क्लेक्ट्रीएट घाट पर हुआ। जिलाध्यक्ष दुर्गा राज के नेतृत्व मे जेपी स्मारक स्थित लोकनायक जयप्रकाश नारायण जी की प्रतिमा की सफाई कर माल्यार्पण किया गया। उसके बाद जेपी स्मारक परिसर और क्लेक्ट्रीएट घाट पर झाड़ू लगाकर सफाई की गई। इस दौरान भारत माता की जय, नरेन्द्र मोदी जिन्दाबाद, महात्मा गांधी अमर रहे आदि के नारे लगाते हुए स्वच्छ भारत का संदेश दिया गया। कार्यक्रम मे जिलाध्यक्ष सहित बड़हरा विधायक राघवेन्द्र प्रताप सिंह,प्रदेश कार्यसमिति सदस्य सूर्यभान सिंह, संजय कुमार सिंह,रमेश कुमार कर्ण,नवीन प्रकाश,धीरज सिंह,महिला मोर्चा अध्यक्ष ममता सिंह,धर्मेंद्र सिंह,विभु जैन,राहुल सिंह,हिमांशु सिंह,अशोक श्रीवास्तव, बबलु श्रीवास्तव,मालती सिंह आदि कार्यकर्ता थे।

शेरघाटी नगर परिसद द्वारा स्वच्छता पखवाड़ा का आयोजन

नया बाजार, नेशनल हाइवे,गोलाबाजार,बेलाडीह आदि जगहों पर किया गया साफ सफाई

प्रात : किरण संवाददाता

शेरघाटी।एक तारीख एक घंटा एक साथ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आवाहन पर देशभर में आयोजित स्वच्छता पखवाड़ा अभियान के तहत रविवार को शेरघाटी नगर परिषद के द्वारा 1 घंटे श्रमदान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसके पूर्व कार्यपालक पदाधिकारी पुष्कर कुमार पुष्प ने नगर परिषद के 28 वार्ड के वार्ड पार्षद एवं शहर के गण्यमान्य लोगो को स्वच्छता को लेकर शपथ दिलाया।

शपथ के दौरान सर्व प्रथम जिम्मेदार नागरिक के रूप में शपथ दिलाई गई, ताकि सार्वजनिक स्थल पर कभी भी गंदगी नहीं फैलाऊंगा, साथ ही साथ अपने परिवार जनों मित्रों समेत सभी परिचितों को साफ सफाई के बारे में जागरूक करूँगा और अपने घर में कचरे सुख और गीले कचरे को अलग-अलग रखूंगा, प्लास्टिक के कैरी बैग का प्रयोग नही करूँगा, राशन सब्जी आदि लाने के लिए घर से जुट का थैला लेकर जाऊँगा, खुले में शौचालय नहीं करूँगा, पोखर तालाब आदि जल स्रोतों को गंदा नहीं करूँगा, नगर परिषद के सफाई कर्मी सफाई मित्रों के प्रति अच्छा व्यवहार रखूंगा हो सके तो उनके द्वारा किए गए सराहनीय कार्य को प्रस्ताव वर्णन करने का भी शपथ दिलाया गया।साथ ही साथ आजीवन सफाई और स्वच्छता के प्रति विशेष जागरूक करने का लोगों ने शपथ लिया। इसके बाद नगर परिषद कार्यपालक पदाधिकारी, अध्यक्ष प्रतिनिधि पवन किशोर सिंह, उपाध्यक्ष तलकेश्वर चौधरी समेत वार्ड पार्षद एवं शहर के गण्यमान्य लोगो के द्वारा मोरहर नदी किनारे लगे कूड़े के ढेर को सफाई किया वहीं सरकारी बस स्टैंड के पीछे लगे कचरे,बेलडीह,नेशनल हाइवे को नगर परिषद कार्यपालक पदाधिकारी पुष्कर कुमार पुष्प एवं नगर परिषद अध्यक्ष प्रतिनिधि पवन किशोर सिंह व वार्ड पार्षदों ने अपने हाथों से साफ सफाई किया। इसके बाद नेशनल हाईवे 2 पर भी लगे कूड़े कचड़े को हटाया गया तथा नगर परिषद क्षेत्र के कई वार्डों में साफ सफाई की व्यवस्था कार्यपालक पदाधिकारी एवं प्रतिनिधि व उपाध्यक्ष के द्वारा किया गया।

उक्त दौरान वार्ड पार्षद परमानंद मनी अशोक सिंह,संतोष कुमार सिंह, मोहम्मद शाहिद आलम, प्रभात कुमार गुप्ता, जितेंद्र सिंह, दीनानाथ पांडे रामबदन सिंह ,राम लखन पासवान बृजेश सिंह, मनोज कुमार गुप्ता समेत दर्जनों वार्ड पार्षद शामिल थे।

भोजपुर महिला कला केंद्र के द्वारा पिपरहियां गांव में स्वच्छता अभियान चलाया गया

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। ग्राम पंचायत हसनपुरा के पिपरहियां गांव में भोजपुर महिला कला केंद्र और अंधेरी हिल्फ, नाबार्ड, अग्रणी बैंक भोजपुर एवं हसनपुरा ग्राम पंचायत के जनप्रतिनिधि के सौजन्य से माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के घोषणा अनुसार पिपरहियां गांव में संपूर्ण स्वच्छता अभियान चलाया गया। सफाई अभियान के दौरान घर-घर जाकर महिलाओं एवं पुरुष को स्वच्छता के प्रति जागरुक किया गया।

भोजपुर महिला कला केंद्र के सचिव सह माननीय राष्ट्रपति पद से सम्मानित श्रीमती अनीता गुप्ता ने लोगों से अपील कि जब मैं स्वस्थ रहना चाहतें हैं तो हम लोगों को स्वच्छ रहना एवं स्वच्छता अपनाना होगा। आज के दिन माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने घर-घर लोगों से सफाई करने की अपील की है। लोगों में स्वच्छता के प्रति जागरुक होकर तन स्वच्छ के साथ-साथ हमें अपना मन को भी स्वच्छ रखना होगा। ग्राम पंचायत हसनपुरा के माननीय मुखिया वीर बहादुर जी ने महादलित बस्ती में सभी सामुदायिक लोगों से स्वच्छ रहने का शपथ दिलवाई मुखिया जी ने कहा कि आज का सफाई गांधी जी को समर्पित है । महादलित टोले में बंद पड़े सामुदायिक शौचालय जो बेकार पड़े हैं तथा वहीं पर चापाकल के पास चबूतरा बनाने के लिए घोषणा किया। जिसे महादलित समुदाय के लोगों में हर्ष की भावना जगी है। मुखिया जी से उन लोगों को काफी विकास की उम्मीद है। भोजपुर अग्रणी बैंक के एल डी एम राजेश कुमार चौधरी इस स्वच्छता अभियान में शामिल हुए पिपरहिया गांव के लोगों को स्वच्छ रहने का संदेश देते हुये लोगों से अपील किया कि हमें सिर्फ आज सफाई करके नहीं छोड़ना है इसी तरह से हमें अपने गांव को की प्रतिदिन सफाई करते रहना है।

इस सफाई अभियान को हमें निरंतर जारी रखना है। भोजपुर महिला कला केंद्र के परियोजना प्रबंधक रंजीत कुमार ने लोगों को बताया कि हमें तन और मन दोनों को स्वच्छ रखने की जरूरत है। हम घर की सफाई रोज करते हैं परन्तु अपने घर के आसपास की सफाई पर ध्यान नहीं देते हैं। खुले में शौच नहीं करना है।

स्वच्छता ही सेवा अभियान के तहत स्वच्छता श्रमदान कार्यक्रम का हुआ आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

कुसार्काटा । भारत सरकार, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के केन्द्रीय संचार ब्यूरो, दरभंगा द्वारा रविवार (01.10.2023) को अररिया जिले के कुसार्काटा प्रखंड स्थित सुन्दरीमठ में स्वच्छता ही सेवा अभियान के तहत स्वच्छता श्रमदान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कुसार्काटा प्रखंड के प्रखंड प्रमुख सुनील कुमार सिंह ने कहा कि आज हमलोगों ने जो स्वच्छता श्रमदान किया, जिससे लोगों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता हुई। उन्होंने लोगों से आग्रह करते हुए कहा कि हम सभी को सप्ताह में कम से कम एक दिन सार्वजनिक स्थानों की साफ-सफाई करनी चाहिए ताकि हमारे देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के स्वच्छ एवं कचरा मुक्त भारत का सपना पूरा होगा और हमारा देश स्वच्छ और सुन्दर बनेगा। मौके पर उपस्थित 52वीं वाहिनी सशस्त्र सीमा बल, अररिया के कमांडेंट महेन्द्र प्रताप ने कहा कि स्वच्छता ही सेवा भारत सरकार की बहुत ही अच्छी पहल है इससे लोगों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता आएगी और लोग स्वच्छता के महत्व को समझेंगे।

आज के स्वच्छता श्रमदान कार्यक्रम के दौरान 52वीं वाहिनी सशस्त्र सीमा बल के उप कमांडेंट श्री उदय कुमार, सहायक कमांडेंट सी. विवेक, केन्द्रीय संचार ब्यूरो, पटना के क्षेत्रीय प्रचार अधिकारी मनीष कुमार, जावेद अख्तर अंसारी, सहायक क्षेत्रीय प्रचार अधिकारी मिहिर कुमार झा सहित अन्य गणमान्य लोग, सशस्त्र सीमा बल के जवान, स्थानीय स्वच्छता कर्मी, आस-पास के स्थानीय लोग उपस्थित थे। इस स्वच्छता श्रमदान कार्यक्रम के दौरान सुन्दरीमठ से लेकर बाजार एवं अन्य सार्वजनिक स्थानों की साफ-सफाई की गई।

स्वच्छता ही सेवा कार्यक्रम के तहत नगर पंचायत गड़हनी में चला सफाई अभियान

प्रात : किरण संवाददाता

गड़हनी(भोजपुर) ।जिले के नगर पंचायत गड़हनी में राष्ट्र पिता महात्मा गांधी की 154वीं जयंती के एक दिन पहले रविवार को ह्यस्वच्छता पखवाड़ा कार्यक्रम के तहत नगर पंचायत गड़हनी में युवा शक्ति क्लब व वार्ड पार्षद (02) मुन्ना कुमार द्वारा साफ सफाई नया बाजार सब्जी मंडी में तथा राम जानकी ठाकुरबाड़ी में किया गया।एवं सभी वार्डों में पार्षद,सामाजिक कार्यकर्ता व अधिकारियों ने गलियों में झाड़ू लेकर निकले और एक घंटे का श्रमदान किया। वार्ड एक में न्यू प्राथमिक विद्यालय विधालय उत्तर पट्टी के समीप वार्ड पार्षद प्रतिनिधि सह पत्रकार अविनाश कुमार राव एवं उप मुख्य पार्षद सुनय कुमार परमार उर्फ बब्लू सिंह सामाजिक कार्यकर्ता अक्षयवट ओझा सुदामा प्रसाद केशरी धर्मेंद्र कसेरा रंजन तेली पप्पू सोनी बमबम शर्मा सागर गुप्ता विनय सागर रंजन कुमार बंटी कुमार राहुल सोनी बीरेंद्र साह संतोष कुमार विद्यार्थी ने एक साथ मिलकर झाड़ू लगाई। इतना ही नहीं स्वच्छता के प्रति अन्य लोगों को जागरूक करने के लिए शपथ भी दिलाई। वार्ड 8 में गौरी शंकर मंदिर परिसर में दर्जनो पार्षद चन्दन सोनी नाजिर पंकज कुमार सहित दर्जनों सामाजिक कार्यकर्ता ने श्रम दान कर परिसर की साफ साफाई की।नगर पंचायत के सभी वार्ड के चिन्हित जगहों पर वार्ड पार्षद की उपस्थिति में लोगों ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया और श्रम दान कर साफ सफाई की।मिली जानकारी के अनुसार उक्त जगहों पर सफाई के पूर्व की फोटो और सफाई के बाद कि फोटो ली गई जिसे नगर पंचायत के कर्मी उस फोटो को ऑनलाइन पोर्टल पर अपलोड कर सकें।

पीएम के आह्वान पर महीला मोर्चा ने चलाया स्वच्छता अभियान कार्यक्रम

भोजपुर। भोजपुर भारतीय जनता पार्टी के महिला मोर्चा जिलाध्यक्ष ममता सिंह के अध्यक्षता मे भारत के यशस्वी लोकप्रिय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के आह्वान पर सेवा पखवाड़ा कार्यक्रम के तहत स्वच्छता अभियान कार्यक्रम आयोजित हुआ आरा शहर के विभिन्न जगह पर किया गया। वही इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व संसद मीना सिंह, राघवेन्द्र प्रताप सिंह, सूयार्भान सिंह उपस्थित हुए। जिसके बाद महिला मोर्चा के नेतृत्व मे शहर के विभिन्न दलित वर्ग के मोहल्ला मे कॉपी, किताब, बिस्कुट, टॉफी,आदि अन्य सामाग्री का वितरण किया गया। जिसके वाद महिला मोर्चा के नेतृत्व मे भोजपुर के अलग-अलग महिला मोर्चा मंडल के पदाधिकारीयो ने सेवा पखवाड़ा कार्यक्रम के तहत स्वच्छता अभियान कार्यक्रम किया। जिसमे जिलाध्यक्ष दुर्गा राज, अशोक शर्मा, संजय सिंह, बमबम बाबा,सुरभि सिंह, सुगंधा सिंह, सविता कुमारी,अनिता मिश्रा, कांती सिंह, शकुन्तला सिंह, विजेता शर्मा, प्रियंका, आदि सैकड़ो कार्यकर्ता उपस्थित हुए।

बक्सर के राम रेखा घाट में चला स्वच्छता अभियान

केंद्रीय पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन राज्य मंत्री अश्विनी कुमार चौबे ने लिया अभियान में हिस्सा

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। भारतीय प्राणी सर्वेक्षण, गंगा मैदानी क्षेत्रीय केंद्र, पटना के द्वारा रविवार को राम रेखा घाट, बक्सर में सुबह 10 बजे से 11 बजे तक स्वच्छता अभियान 3 श्रमदाम का आयोजन किया। समारोह के मुख्य अतिथि भारत सरकार के केंद्रीय पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन राज्य मंत्री अश्विनी कुमार चौबे थे।

समारोह की शुरूआत राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि देकर की गई। समारोह के सभी गणमान्य व्यक्तियों ने राष्ट्रपिता को श्रद्धांजलि अर्पित की। तब केंद्रीय मंत्री अश्विनी कुमार चौबे ने जेडएसआई पटना के अधिकारियों, एफसीआई के अधिकारी और बक्सर नगर निगम के कर्मचारियों की मदद से रामरेखा घाट पर घाटों की सफाई शुरू की। इस मौके पर बक्सर नगर निगम की कार्यपालक पदाधिकारी कुमारी स्वरूपम भी मौजूद थीं। इस अवसर पर उपस्थित सैकड़ों स्वयंसेवकों द्वारा रामरेखा घाट, बक्सर के पूरे घाटों की साफ-सफाई की गई। एनसीसी कैडेट्स, नेहरू युवा केंद्र के स्वयंसेवक, एनएसएस और अन्य स्कूल और कॉलेज के छात्रों के साथ नगर निगम के कर्मचारियों ने रामरेखा घाट पर सफाई में सक्रिय भाग लिया। सुबह 10 बजे शुरू हुए अभियान में 1000 से अधिक प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया, फिर रामरेखा घाट से लेकर किला मैदान बक्सर तक मानव श्रृंखला बनायी गयी। बक्सर में स्वच्छता अभियान के तहत एक किलोमीटर से अधिक दो मानव श्रृंखला बनायी गयीं। मुख्य अतिथि अश्विनी कुमार चौबे द्वारा आज पूरे दिन बक्सर में साफ-सफाई करने वाले सभी नगर निगम कर्मियों को शॉल और एक-एक अंगवस्त्र देकर सम्मानित किया गया।टी शर्ट भी वितरित किये गये। सभी प्रतिभागियों को हल्का जलपान कराया गया। शहर व गंगा घाट को स्वच्छ रखने की शपथ भी ली गयी. अंत में राष्ट्रगान के साथ समारोह का समापन किया गया।

आरा विधायक के उपस्थित में चलाया गया स्वच्छ भारत अभियान

प्रात : किरण संवाददाता

आराः भारतीय जनता पार्टी, आरा विधानसभा के द्वारा आरा नगर के वार्ड नं 40, जवाहर टोला सेवा बस्ती में नगर अध्यक्ष जीतु चौरसिया एवं स्वच्छता अभियान प्रकोष्ठ के संयोजक धर्मेन्द्र सिंह के नेतृत्व में पूर्व कृषि मंत्री सह स्थानीय विधायक अमरेन्द्र प्रताप सिंह के उपस्थित में हाथों में झाड़ू लेकर स्वच्छ भारत अभियान के तहत माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आह्वान पर महात्मा गांधी की 154वीं जयंती से पहले साफ सफाई अभियान चलाया गया और झाड़ू लगाई ।स्वच्छता ही सेवा अभियान पखवाड़ा के तहत श्रमदान में आम लोग एवं पार्टी कार्यकताओं ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया । इस अवसर पर अमरेन्द्र प्रताप सिंह ने कहा कि माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने अपने 105वें मन की बात में सफाई अभियान को लेकर आह्वान किया कि एक तारीख, एक घंटा, एक साथ का नारा दिया था। आज प्रधानमंत्री जी आह्वान पर भाजपा कार्यकताओं ने स्वच्छता अभियान को जन आन्दोलन बना दिया है, देशभर में करोड़ों लोग साफ सफाई अभियान में शामिल हो रहे हैं । 2014 में लालकिले के प्राचीर से स्वच्छ भारत अभियान की घोषणा की थी और गांधी जयंती पर 2 अक्टूबर को स्वच्छ भारत मिशन की शुरूआत की थी।इसका मुख्य उद्देश्य खुलें में शौच से मुक्ति और सार्वभौमिक स्वच्छता कवरेज प्रदान करना रहा है ।आज इस मिशन का व्यापक असर देश भर में देखने को मिल रहा है। इस अभियान में ग्रामीण अध्यक्ष अशोक सिंह, लव पाण्डेय, अजय सिंह, अरुण सिन्हा, राजकुमार कुशवाहा, सुशील कुमार मिश्र, गुड्डू पासवान, सुगम सहाय, दिनेश सिंह, रितेश वर्मा, गौतम श्रीवास्तव,अभय चौधरी, मनीष गुप्ता, मंदीप तिवारी, धीरज सोनी, पोखराज पासवान, मुन्ना सिंह, नीतिन कुमार, रविरंजन,राणा सौरभ आदि उपस्थित थे।

युवा मतदाता प्रेरणा लें अवश्य करें वोट: जिला पदाधिकारी

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा। नमस्कार! आप वोट देने जाती हैं? हां, अरे वाह! यह तो बहुत अच्छी बात है।आपके घर में और कितने व्यस्क लोग हैं? सब वोट देने जाते हैं? सब लइका पतोह लोग जाला, सभे बहुत मानेला, रऊआ लोग के दया से हम बहुत खुश बानी।कुछ इसी तरह के वातार्लाप के बीच जिलाधिकारी अमन समीर ने 103 वषीर्या वयोवृद्ध गोदावरी देवी को अंगवस्त्र, शॉल और प्रशस्ति सह संदेश पत्र देकर सम्मानित किया।अवसर था अंतर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस का, जब जिलाधिकारी श्री समीर चुनाव आयोग के निदेश पर छपरा विधानसभा क्षेत्र के आर्य नगर इमामगंज के चिन्हित वरिष्ठ मतदाताओं का सम्मान करने उनके घर पहुंचे थे। समीर ने गोदावरी देवी के बेटे, पोतों और अन्य व्यस्क सदस्यों से भी बातें की और उन्हें मतदान अवश्य करने की सलाह दी।उन्होंने युवा मतदाताओं को जागरूक होने तथा ऐसे व्यस्क मतदाता से सीख ले लोकतंत्र के महापर्व में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करने पर बल दिया। जिला पदाधिकारी एक अन्य चिन्हित वरिष्ठ मतदाता 91 वर्षीय भरत प्रसाद गुप्ता के घर भी गए और उन्हें अंगवस्त्र और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया।उन्होंने उनके बेटे और बहू से निर्वाचन में भाग लेने की अपील की। ज्ञात हो कि भारत निर्वाचन आयोग ने 80 वर्ष से ऊपर के वरिष्ठ मतदातों को चिन्हित कर भारतीय लोकतंत्र को सुदृढ़ करने में उनके जोश और समर्पण के साथ युवाओं के समक्ष एक उदाहरण स्थापित करने तथा एक वोट के मूल्य का वास्तविक अर्थ सिद्ध करने के लिए उन्हें सम्मानित करने का निर्णय लिया था।इसी के तहत रविवार को अंतर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस पर जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह जिला पदाधिकारी श्री समीर के द्वारा वरिष्ठ मतदाताओं को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर उप निर्वाचन पदाधिकारी जावेद एकबाल, सदर एसडीएम संजय कुमार राय, सदर बीडीओ विनोद आनंद, विनय कुमार चौधरी, सुनील कुमार, चंद्रशेखर कुमार, बीएलओ तथा अन्य कर्मी एवं क्षेत्र के गणमान्य लोग उपस्थित रहे. वहीं दूसरी तरफ अंतर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस के अवसर पर सभी प्रखंडों में भी सम्मान कार्यक्रम आयोजित किए गए और सहायक निबंधन पदाधिकारी द्वारा वरिष्ठ मतदाताओं को शॉल और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

स्वच्छता अभियान का कार्यक्रम शालीनता और सफलता के साथ मनाया गया

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। ज्ञान ज्योति आवासीय विद्यालय , बामपाली आरा के सभी शिक्षक - शिक्षिकाओं एवं शिक्षाकेत्तर सदस्यों ने भारत सरकार के एक अत्यंत महत्वपूर्ण कार्यक्रम, एक तारीख एक घंटा, के अंतर्गत स्वच्छता स्वच्छांजलि कार्यक्रम में बढ़ चढ़ कर भाग लिया और विद्यालय के सामने बने एन एच चौरासी हाइवे के साथ लगे रास्ते की अपने हाथों से सफाई की। प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी स्वच्छता अभियान का कार्यक्रम ज्ञान ज्योति में शालीनता और सफलता के साथ मनाया गया।

इस वर्ष मंत्रालय और सी बी एस सी के दिशा निर्देशन का स्पष्ट रूप से पालन करते हुए आज के इस महत्वपूर्ण एक्टिविटी को पूर्ण किया गया। इस स्वच्छता कार्यक्रम की खूबसूरती तब बढ़ गयी जब ज्ञान ज्योति आवासीय विद्यालय के छोटे छोटे बच्चों ने बैनर और स्लोगन के साथ नारे लगाते हुए एक दिन पहले ही स्कूल के सामने बामपाली गांव तक जाकर सभी लोगों को सफाई का महत्व बताया और स्वच्छता अभियान में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेने के लिए प्रेरित किया। ज्ञान ज्योति के बच्चों द्वारा किये गये इस स्वच्छता अभियान जागरूकता रैली का असर यह हुआ कि गांव के कई लोग आज के इस सफाई अभियान के, एक तारीख एक घंटा कार्यक्रम, में हिस्सा लेने निर्धारित स्थान पर पहुंचे। विद्यालय प्रबंधन को जितनी आशा थी उससे कहीं अधिक लोगों ने आरा बक्सर मुख्य मार्ग के इस वृहत स्थान पर एकत्रित होकर अपना श्रमदान किया। किसी ने झाड़ू थामी तो किसी ने ग्रास कटर से घास बराबर किया। किसी ने कचरा इकट्ठा किया किसी ने कचरे उठाकर कचरे की गाड़ी मे डाल कचरे को ठिकाने लगाया। आज का यह टीम वर्क एक आदर्श टीम वर्क था। यह कार्यक्रम हेल्थ एन्ड एजुकेशन सोसाइटी के सचिव की उपस्थिति में संपन्न हुआ जिसमें विद्यालय की प्राचार्या डॉङ्क सीपी जैन की बड़ी ही सक्रिय भागीदारी रही। इनके सफल नेतृत्व ने ही इस स्वच्छता अभियान को सफल बनाया। इन्होने सभी उपस्थित लोगों को सरकार के इस अति महत्वपूर्ण स्वच्छता अभियान में शामिल होने के लिए धन्यवाद दिया और कार्यक्रम के सफल होने पर सबकी प्रशंसा करते हुए अपना हर्ष प्रकट किया। आज के इस एक तारीख एक घंटा कार्यक्रम में स्कूल के वालंटियर बच्चों ने अपने अपने हाउस ड्रेस में रहते हुए नारा और स्लोगन बोलकर सबका उत्साह बनाये रखा। इस अद्भुत कार्यक्रम के पीछे छुपे बापू के आदर्श और संस्कार का प्रत्यक्ष दर्शन कर बच्चों ने महातमा गांधी को सबके साथ नमन किया।

वल्लभ के तीसरे कविता संग्रह 'पोतराज' का लोकार्पण

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। जन संस्कृति मंच की ओर से फूड इंडिया, आरा के मीटिंग हॉल में कवि वल्लभ के तीसरे कविता संग्रह 'पोतराज' का लोकार्पण और परिचर्चा का आयोजन किया गया।सबसे पहले प्रो. निलांबुज सरोज ने आमंत्रित वक्ताओं, श्रोताओं और साहित्यप्रेमियों का स्वागत किया। इसके बाद पूजा, रश्मि, रिंकी, सौरभ, आनंद और जनार्दन मिश्र ने क्रमशः अनिल अनलहातू, प्रभात मिलिंद, उमाशंकर सिंह, आनंद कुमार राय, अजीत प्रियदर्शी और अजय पांडेय का शॉल ओढ़ाकर स्वागत किया। इसके बाद आमंत्रित वक्ताओं ने ही पुस्तक का लोकार्पण किया।

कविता संग्रह पर आयोजित परिचर्चा के दौरान गोरखपुर से आए आलोचक आनंद कुमार राय ने कहा कि वल्लभ नव-प्रस्थान के कवि हैं। उनकी कम से कम 12-14 ऐसी कविताएं हैं, जो सिर्फ संरचना नहीं, बल्कि पूरा एक स्थापत्य है। उनके तीन संग्रहों में प्रेम का स्वरूप बदलता गया है। उनका कवि भूख, संत्रास, अवसाद से मुक्ति चाहता है। उनकी कविताओं में सच का ताप है। स्थितियां कितनी विद्रूप हैं, उनकी कविताओं में देखा जा सकता है। चिता की बची हुई आग से चूल्हा जलाना ऐसी ही स्थिति है। उनकी कविता में और काव्यभाषा में ऐंठन बहुत है। आपदा को अवसर में किसने बदला यह अलग से कहने की जरूरत नहीं है। मुक्तिबोध पूछते थे कि पार्टनर तुम्हारी पोलटिक्स क्या है? वल्लभ की कविताओं की पोलिटिक्स छिपी हुई नहीं है। यह एक सचेत राजनीतिक दृष्टि ही है, जो कहती है- अफवाहों के दिन हैं ये/ अतिवाद का काल है यह। असंगत सूचनाओं की बाढ़ वाले इस समय में वे बचाव की स्मृतियों का उपयोग करते हैं।

कवि-आलोचक और अनुवादक प्रभात मिलिंद का कहना था कि वल्लभ की कविताएं ट्रीटमेंट के स्तर पर फैज ओर साहिर की राजनीतिक कविता के निकट या उनसे प्रभावित दिखती है। रुमान के उत्स से फूटती उनकी कविता भी मनुष्य और मनुष्य के सरोकारों में तब्दील होती दिखती है। वल्लभ अपने भिन्न-भिन्न कविता में पाठकों से भिन्न-भिन्न कविरूप में मिलते हैं। उनकी कविताओं में प्रेम, असंतोष, आक्रोश, वीतराग, असहमति, अस्वीकृति, सामाजिक और मानवीय संबंधों के संत्रास और अंतर्विरोध साथ-साथ अंतर्ध्वनित होते हैं। उनकी कविता में वैचारिक ईमानदारी है। निजी होने के बावजूद उनकी कविताएं समूह की कविताएं हैं। खुरचकर पढ़ने पर उनकी कविताओं में दुख और संत्रास, हताशा और संघर्ष तथा आस्था और व्यवस्था का संकट एक उदास और मद्धिम धुन की तरह लगातार बजती हुई सुनाई देती है।

कवि सुनील श्रीवास्तव ने कहा कि वल्लभ के इस संग्रह की कई कविताएं कोविड के दौरान लिखी गयी हैं। वे इनमें मृत्यु को करीब रखकर जीवन को देखते हैं।

पीड़ित मानवता की सेवा में मिल का पत्थर साबित होगा आरा इमरजेंसी अस्पताल

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। शहर के डीएम कोठी क्लब रोड आरा में आज आरा इमरजेंसी अस्पताल का भव्य उद्घाटन संपन्न हुआ, 24 घण्टे मरीजों की सेवा में रहने के लिए सदैव तत्पर इस अस्पताल का वैदिक मंत्रोच्चार के बीच फीता काटकर कलावती देवी, रेणु सिंह, स्मिता रानी, मनोज सिंह सिंटू सिंह टिंकू सिंह बबलू सिंह डॉक्टर हर्षवर्धन डॉ प्रशांत एवं डॉ सानिया डॉ बी जोशेफ के द्वारा संयुक्त रूप से किया गया, अब भोजपुर एवं आसपास के जिले के लोगों को एक ही छत के नीचे चिकित्सा से जुड़ी सभी समस्याओं का समाधान होगा यानी मरीजों को अब बेहतर चिकित्सा एक ही छत के नीचे मिल जाएगी क्योंकि अक्सर बेहतर इलाज के अभाव में मरीजों को पटना रेफर करना पड़ता है लेकिन अब आगे इस अस्पताल के खुलने से मरीज को बेहतर चिकित्सा सुविधा इसके माध्यम से प्रदान की जाएगी इस अस्पताल में जहां इलाज के लिए 24 घंटे डॉक्टर मौजूद रहेंगे वहीं पहली बार आरा शहर में डायलिसिस की भी सुविधा प्रदान की जाएगी इसके अलावा इस अस्पताल में मरीजों की सुविधा

प्राकृतिक गैस की कीमतों में हुआ 18 प्रतिशत की कटौती

नई दिल्ली। रिलायंस इंडस्ट्रीज के केजी-डी6 ब्लॉक जैसे कठिन क्षेत्रों से उत्पादित प्राकृतिक गैस की कीमत में रविवार को 18 प्रतिशत की कटौती की गई। बेंचमार्क अंतरराष्ट्रीय प्राकृतिक गैस की कीमत में कमी आने के चलते ये फैसला लिया गया है। कीमत जिसका उपयोग बड़े पैमाने पर ऑटोमोबाइल में ईंधन भरने के लिए सीएनजी बनाने या खाना पकाने के लिए घरों की रसोई में पाइपिंग के लिए किया जाता है।

10,000 का निवेश बना देगा करोड़पति

नई दिल्ली। अगर आप शेयर बाजार में निवेश करना चाहते हैं और किसी डायरेक्ट इंवेस्टमेंट से बचना चाहते हैं तो एसआईपी एक बेहतर विकल्प है। मौजूदा समय में लॉन्ग टर्म में एसआईपी 15 प्रतिशत के करीब रिटर्न निवेशकों को दे रहा है। लेकिन सवाल 1 करोड़ रुपये का फंड इक्ट्ठा करने के लिए कितना एसआईपीओ करवाना चाहिए।

एफपीआई ने सितंबर में भारतीय शेयर बाजारों से 14,767 करोड़ रुपए निकाले

नई दिल्ली एजेंसी। डॉलर में मजबूती, अमेरिका में बॉन्ड पर प्रतिफल बढ़ने और कच्चे तेल की कीमतों में उछाल के बीच विदेशी पोर्टफोलियो निवेशक (एफपीआई) सितंबर में भारतीय शेयर बाजार में शुद्ध बिकवाल रहे हैं। लगातार छह माह तक लिवाली के बाद एफपीआई ने सितंबर में भारतीय शेयर बाजारों से 14,767 करोड़ रुपए की निकासी की है। क्रेविंग अल्फा के प्रबंधक-स्मॉलकेस और प्रमुख भागीदार मयंक मेहरा ने कहा, ''आगे चलकर भारतीय बाजारों में एफपीआई का प्रवाह अनिश्चित रहेगा। काफी हद तक यह भारतीय अर्थव्यवस्था के प्रदर्शन, रिजर्व बैंक की मौद्रिक समीक्षा और कंपनियों के सितंबर तिमाही के नतीजों पर निर्भर करेगा।

डिपॉजिटरी के आंकड़ों के मुताबिक, विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों ने सितंबर में शुद्ध रूप से 14,767 करोड़ रुपए के शेयर बेचे हैं। इससे पहले अगस्त में शेयरों में एफपीआई का प्रवाह चार माह के निचले स्तर 12,262 करोड़ रुपए पर आ गया था। वहीं एफपीआई मार्च से अगस्त तक लगातार छह माह भारतीय शेयरों में शुद्ध लिवाल रहे थे। इस दौरान उन्होंने 1.74 लाख करोड़ रुपए के शेयर खरीदे थे।

जियोजीत फाइनेंशियल सर्विसेज के मुख्य निवेश रणनीतिकार वी के विजयकुमार ने कहा, ''डॉलर की मजबूती की वजह से एफपीआई बिकवाली कर रहे हैं। डॉलर सूचकांक 107 के करीब है। इसके अलावा अमेरिका में बॉन्ड प्रतिफल (10 साल के लिए 4.7 प्रतिशत) आकर्षक बना हुआ है, ऐसे में एफपीआई बिकवाल बने हुए हैं। ब्रेंट कच्चे तेल का दाम 97 डॉलर प्रति बैरल पर है। यह भी एफपीआई की बिकवाली की एक वजह है। मॉर्निंगस्टार इंडिया के एसोसिएट निदेशक - प्रबंधक शोध हिमांशु श्रीवास्तव ने कहा, ''अमेरिका और यूरो क्षेत्र में आर्थिक अनिश्चितता के अलावा वैश्विक आर्थिक वृद्धि को लेकर बढ़ती चिंता की वजह से भी एफपीआई बिकवाली कर रहे हैं। इन स्थितियों की वजह से एफपीआई जोखिम लेने से बच रहे हैं। उन्होंने कहा कि इसके अलावा कच्चे तेल के ऊंचे दाम, महंगाई के आंकड़े और बढ़ती ब्याज दरें भी एफपीआई की धारणा को प्रभावित कर रही हैं। आंकड़ों के अनुसार, समीक्षाधीन अवधि में एफपीआई ने ऋण या बॉन्ड बाजार में 938 करोड़ रुपए डाले हैं। इस तरह चालू कैलेंडर साल में अबतक शेयरों में एफपीआई का निवेश 1.2 लाख करोड़ रुपए रहा है। वहीं बॉन्ड बाजार में उन्होंने 29,000 करोड़ रुपए से ज्यादा डाले हैं।

डी डेवलपमेंट इंजीनियर्स लिमिटेड ने सेबी के यहाँ डीआरएचपी दाखिल किया

मुंबई , एजेंसी। इंजीनियरिंग, खरीद और विनिर्माण के माध्यम से तेल और गैस, बिजली (परमाणु सहित), रसायन और अन्य प्रक्रिया उद्योगों जैसे उद्योगों के लिए विशेष प्रक्रिया पाइपिंग समाधान प्रदान करने वाली इंजीनियरिंग कंपनी, डी डेवलपमेंट इंजीनियर्स लिमिटेड ने बाजार नियामक भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) के यहाँ अपना ड्राफ्ट रेड हेरिंग प्रॉस्पेक्टस (डीआरएचपी) दाखिल किया। कंपनी आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) के माध्यम से इक्विटी शेयरों (अंकित मूल्य 10 प्रत्येक) की पेशकश के माध्यम से धन जुटाने की योजना बना रही है। इस ऑफर में कुल मिलाकर 325 करोड़ तक के इक्विटी शेयरों का फ्रेश इश्यू और विक्रेता शेयरधारकों के 7,900,000 इक्विटी शेयर तक का ऑफर फॉर सेल शामिल है। कंपनी नए इश्यू से प्राप्त शुद्ध आय का उपयोग अग्रलिखित कार्यों में करने का प्रस्ताव करती है- कंपनी की कार्यशील पूंजी आवश्यकताओं के वित्तपोषण; कंपनी और उसकी सहायक कंपनियों, डीईई पाइपिंग सिस्टम्स (थाईलैंड) कंपनी लिमिटेड और डीईई फैब्रिकॉम इंडिया प्राइवेट लिमिटेड द्वारा लिए गए सभी या कुछ बकाया उधारों का पूर्व भुगतान या पुनर्भुगतान; और सामान्य कॉर्पोरेट उद्देश्य। कई औद्योगिक क्षेत्रों से उत्पन्न होने वाली जटिल प्रक्रिया पाइपिंग आवश्यकता को पूरा करने की तकनीकी क्षमता के मामले में, डी डेवलपमेंट इंजीनियर्स लिमिटेड को वर्तमान में दुनिया में अग्रणी प्रक्रिया पाइप समाधान प्रदाताओं में से एक के रूप में स्थान दिया गया है।

राज्य के स्वास्थ्य मंत्री ने बाल कैंसर रोगियों की देखभाल के लिए राज्य सहायता समन्वय केंद्र एवं घर से दूर घर समर्पित किया

भोपाल। सितंबर माह बच्चों के कैंसर के जागरूकता माह के रूप मे मनाया जाता है। सितंबर माह जागरूकता पैदा करने का समय है, और कैंसर से लड़ने वाले बच्चों की बहादुरी और साहस का सम्मान करने का समय है इस अवसर पर माननीय स्वास्थ्य मंत्री डॉ. प्रभुराम चौधरी, मध्य प्रदेश सरकार ने भोपाल में राज्य सहायता समन्वय केंद्र एवं घर से दूर घर का उद्घाटन किया। जिसे एनजीओ, कैनकिड्स, के साथ साझेदारी करके स्थापित किया है। राज्य सहायता समन्वय केंद्र एवं घर से दूर घर को सुखानंद के नाम से भी जाना जाता है। राष्ट्रीय स्वस्थ्य मिशन के साथ मिलकर काम करते हुए, सुखानंद जैसे केंद्र की स्थापना की गई है। सुखानंद केंद्र एनएचएम कार्यालयों से केवल 6 किमी की दूरी पर है। जहां पर राज्य के कैंसर से पीड़ित बच्चों के लिए उपचार, देखभाल और सहायता की सर्वोत्तम व्यवस्था की गई है 7 सुखानंद मे कैंसर से पीड़ित बच्चों को स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं द्वारा परामर्श किया जाएगा। सुखानंद, घर से दूर एक घर है, जो भोपाल के बाहर के परिवारों के लिए समग्र आवास और देखभाल प्रदान करता है। इस अवसर पर बोलते हुए, डॉ. सुदाम खाड़े (आईएएस), स्वास्थ्य आयुक्त, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण विभाग ने कहा कि, हालांकि मध्य प्रदेश में कैंसर वाले बच्चों की संख्या कम है, हम कैंसर और अन्य असंचारी रोगों के खिलाफ बहुत बड़ी लड़ाई लड़ रहे हैं।

कंपनी को मिला 155 करोड़ का ऑर्डर, कचोलिया ने खरीदे हैं 700000 शेयर

नई दिल्ली, एजेंसी। लिखिता इंफ्रास्ट्रक्चर लिमिटेड ने बताया कि कंपनी को भारत पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड से 155.87 करोड़ रुपये का ऑर्डर मिला है। इस ऑर्डर में भाग् और भाग क्र के लिए कृष्णापटनम - हैदराबाद मल्टी-प्रोडक्ट पाइपलाइन (केएचपीएल) के लिए पाइपलाइन बिछाने और एचडीडी कार्य शामिल हैं। पार्ट ए 16 महीने में और पार्ट बी 12 महीने में पूरा होगा। कंपनी के शेयर वर्तमान में 338 रुपये पर हैं। शुक्रवार को इसमें 2 प्रतिशत से अधिक की तेजी आई थी। 31 मार्च 2023 तक कंपनी की बकाया ऑर्डर बुक 1,42,593.92 लाख रुपये या 1,425.94 करोड़ रुपये है। ऑर्डर बुक में क्रॉस-कंट्री पाइपलाइनों और संबंधित सुविधाओं से 97,585.55 लाख रुपये, सीएनजी स्टेशनों सहित सिटी गैस वितरण से 32,480.92 लाख रुपये, सीएनजी/पीएनजी के संचालन और रखरखाव से 452.79 लाख रुपये और टैंकेज और टर्मिनल परियोजनाओं से 12,074.65 लाख रुपये शामिल हैं। कंपनी को भरोसा है कि उसकी मजबूत ऑर्डर बुक उसे लाभदायक विस्तार और एग्जिक्यूट के जरिए अपने मौजूदा बिजनेस पोर्टफोलियो में फायदा हो सकता है। वहीं, दिग्गज निवेशक आशीष कचोलिया के पास जून 2023 तक कंपनी में 7,00,000 शेयर या 1.77 प्रतिशत हिस्सेदारी है।

त्योहारी सीजन से पहले 4 प्रतिशत बढ़ा डीए

नई दिल्ली एजेंसी। त्योहारी सीजन में केंद्र सरकार अपने कर्मचारियों को बड़ा तोहफा देने वाली है। यह तोहफा साल की दूसरी छमाही यानी जुलाई से दिसंबर तक के डीए में बढ़ोतरी का होगा। इससे पहले हाल के दिनों में कई राज्यों ने महंगाई भत्ते में 4 प्रतिशत तक की बढ़ोतरी की है। हालांकि, यह बढ़ोतरी साल की पहली छमाही यानी जनवरी से जून तक के लिए की गई है।

हाल ही में मध्य प्रदेश, सिक्किम ओडिशा, कर्नाटक, झारखंड और हिमाचल प्रदेश सहित अलग-अलग राज्य सरकारों ने अपने कर्मचारियों के लिए महंगाई भत्ता बढ़ाया। यह बढ़ोतरी 4 प्रतिशत तक की हुई है। ज्यादातर राज्यों में अब कर्मचारियों को भत्ता 38 प्रतिशत की बजाए 42 प्रतिशत मिल रहा है। बता दें कि केंद्र सरकार ने मार्च महीने में अपने कर्मचारियों के लिए भत्ते को बढ़ाने का ऐलान किया था। ऐसा माना जा रहा है कि केंद्र सरकार नवरात्रि और दिवाली के बीच डीए बढ़ोतरी की घोषणा कर सकती है। अनुमान है कि केंद्र सरकार के कर्मचारियों के डीए में 3 फीसदी की बढ़ोतरी की जाएगी। इसे 1 जुलाई, 2023 से प्रभावी किया जाएगा। बता दें कि मार्च 2023 में आखिरी बढ़ोतरी में डीए 4 फीसदी बढ़ाकर 42 फीसदी कर दिया गया था। महंगाई भत्ता (डीए) और पेंशनभोगियों के महंगाई राहत यानी डीआर बढ़ोतरी की गणना अखिल भारतीय उपभोक्ता मूल्य सूचकांक के 12 मासिक औसत में प्रतिशत वृद्धि के आधार पर की जाती है।

बुनियाद की खोदाई से पहले सता रही महंगाई, सीमेंट के दाम और बढ़ने की आशंका

बरेली एजेंसी। सीमेंट के बढ़ते दाम की वजह से लोगों की आशियाना बनाने की उम्मीद डगमगा रही है। अच्छी क्वालिटी के सीमेंट के दाम 450 रुपये प्रति बोरी तक जा पहुंचे हैं। वहीं, एक अक्तूबर से दाम और बढ़ने की आशंका है। कई लोगों ने श्राद्ध पक्ष बीतने पर शारदीय नवरात्र में मकान बनाने के लिए भूमि पूजन की तिथि निर्धारित कर रखी है। अब बुनियाद की खोदाई से पहले उनको महंगाई सता रही है। इससे बचने के लिए वे अभी से सीमेंट खरीदने का मन बना रहे हैं।

सीमेंट कारोबारियों के मुताबिक मानसून हावी होने पर कंस्ट्रक्शन गतिविधियां कम होती हैं। लिहाजा, कंपनियों की ओर से सीमेंट के दाम कम किए गए थे। अगस्त तक ब्रांडेड सीमेंट के एक बैग की कीमत 400 रुपये थी। सितंबर में यह 410 रुपये तक जा पहुंची। इधर, सीमेंट पर टैक्स भी बढ़ा। लिहाजा, अब दाम 430 से 450 रुपये तक पहुंच गए हैं। अब एक अक्तूबर से प्रति बैग 10 से 30 रुपये तक दाम बढ़ने की आशंका है। हालांकि, सरिया के दाम घटे हैं। कारोबारियों के मुताबिक तीन माह पहले सरिया 65-67 रुपये प्रति किलो बिक रहा था। अब 57-59 रुपये तक इसकी बिक्री हो रही है।

बजट के अनुसार हो रही खरीदारी

कारोबारियों के मुताबिक रेता-बजरी, बालू, मौरंग आदि के दाम स्थिर हैं। सीमेंट के दाम बढ़ने से अब बजट के अनुसार इसकी खरीदारी हो रही है। बाजार में गुणवत्ता के आधार पर ब्रांडेड (410-440 रुपये), मीडियम (350-400 रुपये) और सस्ते (300-350 रुपये) रेंज की सीमेंट उपलब्ध है। सभी रेंज की गुणवत्ता अलग-अलग है।

नवरात्र के लिए कर रहे अग्रिम भुगतान

कारोबारियों के मुताबिक नवरात्र में भवन निर्माण के लिए कई लोगों ने सीमेंट, सरिया आदि निर्माण सामग्री के लिए एडवांस भुगतान किया है। उन्हें आज की दर पर सामान मुहैया कराया जाएगा। कारोबारी राममूर्ति लाल जमींदार ने बताया कि सीमेंट की कीमत घटती-बढ़ती रहती है। उसी के अनुसार मांग पर भी असर होता है। अभी दाम बढ़ने से कारोबार कुछ कम हो रहा है। कारोबारी प्रतीक बूबना ने बताया कि दाम बढ़ने से लोग मध्यम गुणवत्ता के सीमेंट की मांग कर रहे हैं। ब्रांडेड सीमेंट के दाम एक अक्तूबर से और बढ़ने की आशंका जताई जा रही है।

विष्णुसूर्या प्रोजेक्ट्स एंड इंफ्रा लिमिटेड का आईपीओ खुल गया है

मुंबई, एजेंसी। कंस्ट्रक्शन, इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट, माइनिंग और एग्रीगेट्स क्षेत्र की एक प्रमुख खिलाड़ी, विष्णुसूर्या प्रोजेक्ट्स एंड इंफ्रा लिमिटेड ने 29 सितंबर, 2023 को इनिशियल पब्लिक आफरिंग (आईपीओ) के साथ पब्लिक में जाने की अपनी योजना की घोषणा की है. कंपनी का इरादा इस आईपीओ के मार्फत 4,998.00 लाख एकत्र करना है. इक्विटी शेयरों को नेशनल स्टॉक एक्सचेंज ऑफ इंडिया लिमिटेड के इमर्ज प्लेटफार्म (एनएसई इमर्ज) पर लिस्ट करने का प्रस्ताव है. फ्रेश इश्यू साइज 10 प्रत्येक सम भाव पर 73,50,000 इक्विटी शेयर्स तक है. आईपीओ से प्राप्त शुद्ध राशि का उपयोग कंपनी की कार्यशील पूंजी की जरूरत, बकाया कर्ज का रीपेमेंट करने या प्रीपेमेंट करने और आम कॉरपोरेट जरूरत का वित्त पोषण करने के लिए किया जाएगा. इश्यू 05 अक्टूबर 2023 को बंद होगा. इश्यू की लीड मैनेजर खंडवाला सिक्योरिटीस लिमिटेड है और इश्यू की रजिस्ट्रार कैमियो कॉरपोरेट सर्विसेस लिमिटेड है.विष्णुसूर्या प्रोजेक्ट्स एंड इंफ्रा लिमिटेड के होल टाइम डायरेक्टर एवं सीईओ, श्री सनल कुमार वी ने कहा, हमारे दो दशक से अधिक के अनुभव और सरकार के इंफ्रास्ट्रक्चर पर जोर का लाभ लेकर हमने विभिन्न प्रकार की कंस्ट्रक्शन और इंफ्रास्ट्रक्चर परियोजनाएं निष्पादित की है।

बुलेट ट्रेन की रफ्तार से भाग रहा है रेलवे स्टॉक

नई दिल्ली एजेंसी। बीते एक साल में जिस रेलवे स्टॉक की खूब चर्चा हुई है। वो है रेल विकास निगम। कंपनी ने पोजीशनल निवेशकों का पैसा महज 6 महीने के अंदर ही डबल कर दिया है। रेल विकास निगम के पोजीशनल निवेशकों के लिए गुड न्यूज आई है। कंपनी को हिमाचल प्रदेश की सरकार से 1097 करोड़ रुपये से अधिक का काम मिला है। रेल विकास निगम ने शेयर बाजारों को दी जानकारी में कहा है कि उन्हें हिमाचल प्रदेश स्टेट इलेक्ट्रिकसिटी बोर्ड लिमिटेड की तरफ से 1097, 68,43,890 रुपये का काम मिला है। कंपनी ने सबसे कम बोली लगाई थी। रेल विकास निगम को यह काम अगले 24 महीने के अंदर पूरा करना है। किसी भी कंपनी के नजरिए से

अगर देखें तो यह एक बड़ा वर्क ऑर्डर है। बता दें, रेल विकास निगम को इससे पहले भी बड़े वर्क ऑर्डर मिल चुके हैं। शुक्रवार को रेल विकास निगम के शेयर करीब 2 प्रतिशत की तेजी के साथ 169.40 रुपये के लेवल पर पहुंचकर बंद हुआ था। बीते एक साल में कंपनी के शेयरों की कीमतों में 371 प्रतिशत की तेजी देखने को मिली है। वहीं, 6 महीने पहले इस स्टॉक को खरीदकर होल्ड करने वाले इंवस्टेर्स को अबतक 124 प्रतिशत का लाभ हो चुका है। निवेशकों के नजरिए से अच्छी बात यह है कि रेल विकास निगम के शेयरों में पिछले एक महीने में 22 प्रतिशत की तेजी दर्ज की गई है। कंपनी चालू वित्त वर्ष में अभी तक योग्य निवेशकों को 2 रुपये से अधिक का डिविडेंड दिया है। अप्रैल में रेल विकास निगम ने 1.77 रुपये का डिविडेंड दिया था। और सितंबर के महीने में एक शेयर पर 0.36 रुपये का डिविडेंड दिया था।

एल एंड टी के चेयरमैन एएम नाइक ने दिया इस्तीफा

नईदिल्ली, एजेंसी। एएम नाइक ने शनिवार को एलएंडटी समूह के चेयरमैन पद से इस्तीफा दे दिया। उन्होंने मुंबई में एक कार्यक्रम के दौरान 23 अरब अमेरिकी डॉलर के कारोबारी समूह की बागडोर एसएन सुब्रमण्यन को सौंपी। नाइक (81) अब कर्मचारी ट्रस्ट के चेयरमैन होंगे। एक बयान में कहा गया कि अब वह कई परोपकारी पहलों को आगे बढ़ाने पर ध्यान देंगे। इस अवसर पर इंडिया पोस्ट ने नाइक पर एक डाक टिकट जारी किया।

आने वाले वक्त में नाइक अपनी परोपकारी पहलों पर ध्यान देंगे, जिसमें नाइक चैरिटेबल ट्रस्ट शामिल है। यह ट्रस्ट वंचितों की शिक्षा और कौशल-निर्माण के क्षेत्र में काम करता है। इसके अलावा निराली मेमोरियल मेडिकल ट्रस्ट रियायती लागत पर स्वास्थ्य

देखभाल की सुविधा के लिए काम करता है। नाइक 1965 में एक जूनियर इंजीनियर के रूप में कंपनी में शामिल हुए थे और इसके समूह चेयरमैन बने।

सीबीडीटी चेयरमैन का कार्यकाल बढ़ा- इस बीच, केंद्र सरकार ने सीबीडीटी चेयरमैन नितिन गुप्ता का कार्यकाल अनुबंध के आधार पर जून 2024 तक नौ महीने के लिए बढ़ा दिया है। उन्हें शनिवार को उनकी निर्धारित सेवानिवृत्ति के दिन सेवा विस्तार दिया गया। गुप्ता (60) आयकर विभाग के 1986 बैच के भारतीय राजस्व सेवा (आईआरएस) के अधिकारी हैं। उन्हें पिछले साल जून में केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड (सीबीडीटी) प्रमुख नियुक्त किया गया था। वह 30 सितंबर को सेवानिवृत्त होने वाले थे।

अमित अग्रवाल को भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण के सीईओ के तौर पर एक साल का सेवा विस्तार दिया गया है। एक आधिकारिक सूचना में यह जानकारी दी गई। अग्रवाल छत्तीसगढ़ कैडर के 1993 बैच के भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) के अधिकारी हैं। कार्मिक मंत्रालय के एक आदेश के अनुसार मंत्रिमंडल की नियुक्ति समिति ने सीईओ के रूप में अग्रवाल के कार्यकाल को दो नवंबर, 2023 से आगे एक वर्ष के लिए यानी दो नवंबर, 2024 तक बढ़ाने को मंजूरी दे दी है।

एचक्यू स्टेशनरी ने गांधी जयंती पर विशेष खादी कवर जर्नल का शुभारंभ किया

मुंबई, एजेंसी। नवनीत एजुकेशन के हाउस के प्रीमियम स्टेशनरी ब्रांड एचक्यू ने गांधी जयंती के अवसर पर एक खास खादी जर्नल सीरीज़ लॉन्च की है। खादी भारतीय इतिहास और संस्कृति में बेहद महत्व रखता है। हाथ से काते और हाथ से बुने गए इस कपड़े को भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान महात्मा गांधी ने लोकप्रिय बनाया था। उन्होंने विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने के तरीके के रूप में खादी के इस्तेमाल को बढ़ावा दिया। स्वदेशी आंदोलन, जिसका उद्देश्य भारतीय निर्मित उत्पादों के उपयोग को प्रोत्साहित करना था, खादी के उपयोग से निकटता से जुड़ा हुआ था। खादी भारतीय संस्कृति और इतिहास में गर्व की भावना पैदा करती है और स्थानीय कारीगरों का समर्थन करने और टिकाऊपन को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्धता को दर्शाती है; यह सिर्फ एक ताना-बाना नहीं है - यह भारत की सांस्कृतिक पहचान और विरासत का एक अभिन्न अंग है। आज भी इसे व्यापक पैमाने पर इस्तेमाल किया जाता है, न केवल कपड़ों के लिए बल्कि घर के सामान, एसेसरी और अब, पहली बार, जर्नल कवर पर ! एचक्यू के ये जर्नल खादी के कपड़ों से परे विस्तार का आधुनिक नज़रिया हैं। जर्नल नेचर शेड 80 जीएसएम पेपर से बना है, जो भारतीय यूज़रों द्वारा सबसे ज़्यादा इस्तेमाल किए जाने वाला और पसंदीदा है। खादी का कपड़ा आपको लिखते समय आधार समर्थन देने के लिए एक मोटे, मजबूत हार्ड केस से बंधा हुआ है।

सीजे डार्कल लॉजिस्टिक्स लिमिटेड ने सेबी के समक्ष दाखिल किया डीआरएचपी

मुंबई एजेंसी। वित्तीय वर्ष 2023 के लिए राजस्व के मामले में फुल ट्रक लोड (एफटीएल) वर्टिकल में बाजार नेतृत्व के साथ भारत में एक विविध लॉजिस्टिक्स कंपनी सीजे डार्कल लॉजिस्टिक्स लिमिटेड (स्रोत- क्रिसिल रिपोर्ट) ने बाजार नियामक भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) के पास अपना ड्राफ्ट रेड हेरिंग प्रॉस्पेक्टस (डीआरएचपी) फाइल किया है।

कंपनी आरंभिक सार्वजनिक पेशकश के माध्यम से इक्विटी शेयरों (अंकित मूल्य 10 रुपए प्रत्येक) के माध्यम से धन जुटाने की योजना बना रही है। इस ऑफर में कुल मिलाकर 340 करोड़ रुपए तक के इक्विटी शेयरों का फ्रेश इश्यू और सेलिंग शेयर होल्डर वाले शेयरधारकों द्वारा 5,431,071 इक्विटी शेयर तक की बिक्री की पेशकश शामिल है।कंपनी ने फ्रेश इश्यू से प्राप्त शुद्ध आय का उपयोग कंपनी द्वारा लिए गए कुछ बकाया उधारों के पूर्ण या आंशिक पुनर्भुगतान/पूर्व भुगतान; ईवी की खरीद के लिए कंपनी की पूंजीगत व्यय आवश्यकताओं का वित्तपोषण और सामान्य कॉर्पोरेट उद्देश्य के लिए करने का प्रस्ताव रखा है। सीजे डार्कल लॉजिस्टिक्स लिमिटेड के पास अपनी स्थापना के बाद से 36 वर्षों से अधिक का परिचालन अनुभव है। कंपनी अपनी पूरे देश में मौजूदगी, समावेशी सेवा प्रस्तावों, बाजार की जानकारी और प्रौद्योगिकी से लेकर व्यापार भागीदारों के बड़े नेटवर्क के माध्यम से सेवा में सुधार पर ध्यान केंद्रित करती रही है। 2017 में दक्षिण कोरिया में मुख्यालय वाली एक बहुमुखी लॉजिस्टिक्स कंपनी सीजे लॉजिस्टिक्स ने डार्कल लॉजिस्टिक्स लिमिटेड में 50 प्रतिशत हिस्सेदारी का अधिग्रहण किया। सीजे डार्कल की रेटिंग के तर्क के अनुरूप सीजे लॉजिस्टिक्स दक्षिण कोरिया की सबसे बड़ी लॉजिस्टिक्स कंपनी है ।सितंबर 2017 में, कंपनी का नाम बदलकर सीजे डार्कल लॉजिस्टिक्स लिमिटेड कर दिया गया। 31 मार्च, 2023 तक इसके पास 990 वाहनों का स्वामित्व वाला बेड़ा है।

एजिलस डायग्नोस्टिक्स लिमिटेड ने सेबी के पास दाखिल किया डीआरएचपी

मुंबई एजेंसी। डायग्नोस्टिक सेवा प्रदाता एजिलस डायग्नोस्टिक्स लिमिटेड (कंपनी) ने बाज़ार नियामक, भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) के पास अपना ड्राफ्ट रेड हेरिंग प्रॉस्पेक्टस दाखिल किया है। कंपनी इक्विटी शेयरों (अंकित मूल्य 10 प्रति शेयर) की इनिशियल पब्लिक ऑफर (प्रारंभिक सार्वजनिक पेशकश - आईपीओ) के ज़रिये धन जुटाने की योजना बना रही है। इस ऑफर में मौजूदा शेयरहोल्डर द्वारा बेचे जा रहे 14,233,964 इक्विटी शेयर तक का ऑफर फॉर सेल शामिल है। कंपनी प्रयोगशालाओं की संख्या के लिहाज़ से सबसे बड़ी डायग्नोस्टिक्स सेवा प्रदाता है और 31 मार्च, 2023 को समाप्त वित्त वर्ष के लिए, भारत में परिचालन से दर्ज आय (रेवेन्यू) के हिसाब से दूसरी सबसे बड़ी कंपनी है (स्रोत क्रिसिल रिपोर्ट) ।शेयरधारकों की ऑफर फॉर सेल में इंटरनेशनल फाइनेंस कॉरपोरेशन एल के 2,985,075 इक्विटी शेयर, एनवाईएलआईएम जैकब बैलास इंडिया फंड एलएलसी के 7,462,700 इक्विटी शेयर और रिसर्जेंस पीई इन्वेस्टमेंट्स लिमिटेड के 3,786,189 इक्विटी शेयर शामिल हैं।रेड हेरिंग प्रॉस्पेक्टस के ज़रिये पेश किए जाने वाले इक्विटी शेयरों को बीएसई लिमिटेड और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज ऑफ इंडिया लिमिटेड पर सूचीबद्ध करने का प्रस्ताव है। आईसीआईसीआई सिक्योरिटीज लिमिटेड, एक्सिस कैपिटल लिमिटेड और सिटीग्रुप ग्लोबल मार्केट्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड इस इश्यू के बुक रनिंग लीड मैनेजर हैं। कंपनी डायग्नोस्टिक्स परीक्षण सेवाएं (नियमित और विशेष परीक्षण), वेलनेस और प्रिवेंटिव केयर पैकेज, अस्पताल लेबोरेटरी मैनेजमेंट सेवाएं और क्लिनिकल रिसर्च ट्रायल सेवाएं प्रदान करती है। 31 मार्च, 2023 तक, हमारे पास 413 प्रयोगशालाओं का एक नेटवर्क था, जिनमें से 43 प्रयोगशालाओं को नेशनल एक्रेडिशन बोर्ड ऑफ टेस्टिंग एंड कैलिब्रेशन लैबोरेट्रीज़ (एनएबीएल) द्वारा मान्यता मिल गई थी ।

एशियाई खेल 2023

पुरुष निशानेबाजी टीम ने जीता गोल्ड, महिला टीम को सिल्वर

हांगझोउ (एजेंसी)। भारत के निशानेबाजों ने रविवार को भी अपने शानदार प्रदर्शन को जारी रखते हुए पुरुष निशानेबाजी टीम ने स्वर्ण, महिला टीम ने रजत जीत लिया। चीन में चल रहे 19वें एशियाई खेलों में आज पृथ्वीराज टोंडिमन, जोरावर सिंह संधू और किनान डेरियस चेनाई ने पुरुषों की निशानेबाजी टीम ने शानदान प्रदर्शन कर 361 अंकों के साथ शीर्ष स्थान हासिल करते हुए स्वर्ण पदक जीता। इसी स्पर्धा में कुवैत को रजत पदक जबकि चीन को तीसरे स्थान का कांस्य पदक मिला।

दूसरी ओर राजेश्वरी कुमारी, कीर मनीषा और रजक प्रीति की महिला निशानेबाजी टीम ने स्पर्धा में रजत पदक जीता। भारतीय टीम को 337 के स्कोर के साथ रजत पदक मिला, जबकि चीन की टीम ने 357 के साथ स्वर्ण और कजाकिस्तान की टीम ने 336 के साथ कांस्य पदक जीता।

अदिति आखिरी दौर में फिसली, महिला गोल्फ में रजत से होना पड़ा संतुष्ट

हांगझोउ (एजेंसी)। भारतीय गोल्फर अदिति अशोक एशियाई खेलों की महिला गोल्फ स्पर्धा के आखिरी दिन रविवार को यहां अपनी लय बरकरार नहीं रखी सकी और 73 का निराशाजनक कार्ड खेलकर रजत पदक अपने नाम किया। महिला गोल्फ में यह भारत का पहला पदक है। अदिति के पास तीसरे दौर के बाद तालिका में शीर्ष पर सात शॉट की बड़ी बढ़त थी। उन्होंने एक बर्डी के मुकाबले चार बोगी और एक डबल बोगी कर के इस बढ़त को गंवा दिया और दूसरे स्थान पर खिसक गई। इस 25 साल की खिलाड़ी का कुल स्कोर 17 अंडर 271 रहा। थाईलैंड की अर्पिचया युबोल ने सप्ताह का सर्वश्रेष्ठ 64 का कार्ड खेल कर स्वर्ण पदक अपने नाम किया। कोरिया की ह्युनजो यू ने भी 65 का शानदार कार्ड खेलकर कांस्य पदक जीता।

इस स्पर्धा में भाग ले रही भारत की दो अन्य महिलाएं प्राणवी उर्स (13वां स्थान) और अवनी प्रशांत (संयुक्त 18वां स्थान) ने भी आखिरी दिन निराशा किया। प्राणवी ने 75 जबकि अवनी ने 76 का कार्ड खेला जिससे भारत टीम स्पर्धा में चौथे स्थान पर खिसककर पदक से चूक गयी। अदिति स्वर्ण पदक से चूक गयी लेकिन दो बार की इस ओलंपिक खिलाड़ी ने अपने प्रदर्शन से प्रभावित किया। वह तोक्यो ओलंपिक में भी मामूली अंतर से पिछड़ कर चौथे स्थान पर रही थी। यह गोल्फ में भारत का चौथा व्यक्तिगत पदक था। लक्ष्मण सिंह और शिव कपूर ने 1982 और 2002 सत्र में स्वर्ण पदक जीता था जबकि राजीव मेहता ने नयी दिल्ली (1982) में रजत पदक जीता था। लक्ष्मण, राजीव, ऋषि नारायण और अमित लूथरा की भारतीय टीम ने 1982 में टीम स्वर्ण पदक जीता था। भारत ने दोहा और ग्वांगझू में 2006 और 2010 सत्र में टीम स्पर्धा का रजत पदक हासिल किया था।

मुक्केबाज परवीन हुड्डा ने जीता कांस्य पदक, ओलंपिक कोटा सुनिश्चित किया

हांगझोउ (एजेंसी)। विश्व चैम्पियनशिप की कांस्य पदक विजेता भारतीय मुक्केबाज परवीन हुड्डा ने महिलाओं की 57 किग्रा स्पर्धा के सेमीफाइनल में जगह बनाकर एशियाई खेलों में पदक सुनिश्चित करने के साथ पेरिस ओलंपिक कोटा हासिल किया। विश्व चैम्पियनशिप में 63 किग्रा में पदक जीतने वाली परवीन ने रविवार को यहां क्वार्टर फाइनल में उज्बेकिस्तान की सितोरा तर्डिबेकोवा को सर्वसम्मत फैसले से हराया। राष्ट्रमंडल खेलों की कांस्य पदक विजेता जैस्मीन लम्बोरिया 60 किग्रा क्वार्टर फाइनल मुकाबले में उत्तर कोरिया की मुक्केबाज वोन उन्गयोंग से दूसरे दौर में आरएससी (रेफरी द्वारा मैच रोकने) से हारने के बाद बाहर हो गईं। मौजूदा एशियाई चैंपियन परवीन अपने मुकाबले में शुरू से ही लय में दिखी। उन्होंने अपनी लंबाई का फायदा उठाते हुए 21 साल की प्रतिद्वंद्वी को बाएं और दाएं दोनों ओर से मुक्के जड़े। परवीन ने शुरुआती दौर में आक्रामक रवैया अपनाया लेकिन इसके बाद तर्डिबेकोवा को अपने करीब आने का मौका दिया और फिर सटीक पंच जड़े। तर्डिबेकोवा ने भी इस दौरान कुछ अच्छे मूव बनाकर परवीन को पंच जड़े लेकिन यह काफी नहीं था। जैस्मीन ने पहला दौर 5-0 से अपने नाम किया। उन्होंने इसके बाद अपने 'हेडगियर' को सही तरीके से लगाने की मांग की। भारतीय खिलाड़ी ने इसके बाद एकाग्रता गंवा दी और वोन ने उन्हें करारे हुक्स तथा जैब्स जड़ दिए। जैस्मीन इसके बाद बचाव की मुद्रा में आ गई और इसका फायदा उठाते हुए वोन ने उन्हें और पंच लगाए जिससे वह एक-एक कर तीन बार कोर्ट में गिर गई। तीसरी बार कोर्ट में गिरने के बाद वोन को विजेता घोषित कर दिया गया। दो बार की विश्व चैंपियन निकहत जरीन (50 किग्रा), प्रीति पवार (54 किग्रा), लवलीना बोरगोहेन (75 किग्रा) और नरेंद्र बेरवाल (92 किग्रा से अधिक) पहले ही अपने-अपने वर्ग में ओलंपिक कोटा हासिल कर चुके हैं। महिला वर्ग में 50 किग्रा, 54 किग्रा, 57 किग्रा और 60 किग्रा में सेमीफाइनल में पहुंचने वाले और 66 किग्रा तथा 75 किग्रा में फाइनल में पहुंचने वाले मुक्केबाजों को पेरिस ओलंपिक का कोटा मिलेगा। पुरुष वर्ग में सात वजन वर्गों से स्वर्ण और रजत पदक विजेताओं को ओलंपिक कोटा मिलेगा।

तीन विश्व कप हो चुके हैं, अब मुझे इसकी आदत हो गई है, चहल का छल्का दर्द

नईदिल्ली (एजेंसी)। युजवेंद्र चहल को 2023 विश्व कप में जगह नहीं मिल पाने पर 'बुरा लग रहा है', लेकिन वह आगे बढ़ने और भारतीय टीम में वापसी के लिए कड़ी मेहनत करने के लिए दृढ़ हैं। एक साक्षात्कार में चहल ने 2023 विश्व कप नहीं खेलने की निराशा पर खुलकर बात की, जिसकी मेजबानी पूरी तरह से भारत में की जाएगी। चहल को भारत की अंतिम पंद्रह में जगह नहीं मिली जिसकी पुष्टि 28 सितंबर को हुई। चहल ने कहा, मैं समझता हूं कि केवल 15 खिलाड़ी ही इसका हिस्सा हो सकते हैं, क्योंकि यह विश्व कप है, जहां आप 17 या 18 को नहीं ले सकते। मुझे थोड़ा बुरा लगता है, लेकिन जीवन में मेरा मकसद आगे बढ़ना है। मुझे अब इसकी आदत हो गई है... तीन विश्व कप हो गए हैं (हंसते हुए)। 2016 में अपने पदार्पण के बाद से चहल ने एक भारतीय गेंदबाज द्वारा वनडे में तीसरे सबसे अधिक विकेट लिए है और कुलदीप यादव के बाद एक भारतीय स्पिनर द्वारा दूसरा सबसे अधिक विकेट लिया है। उनके नाम दो बार पांच विकेट हैं - जो किसी भी भारतीय गेंदबाज द्वारा संयुक्त रूप से सर्वाधिक है। तेज गेंदबाजों के प्रभुत्व वाले 2019 विश्व कप में चहल ने किसी भी स्पिनर द्वारा सबसे अधिक 12 विकेट लिए और तब से वह भारत के अग्रणी सफेद गेंद वाले स्पिनरों में से एक हैं।

क्रिकेट विश्व कप 2023

दिग्गज क्रिकेटरों ने विश्व कप फाइनल को लेकर भविष्यवाणी की

12 दिग्गजों में से 11 ने भारत के फाइनल में पहुंचने की उम्मीद

नईदिल्ली (एजेंसी)। भारत में होने वाले क्रिकेट विश्व कप 2023 5 अक्तूबर से शुरू होने वाला है। मेगा इवेंट से पहले दिग्गज क्रिकेटरों ने विश्व कप फाइनल को लेकर भविष्यवाणी की है। 12 दिग्गजों में से 11 ने भारत के फाइनल में पहुंचने की भविष्यवाणी करते की है जिसमें से तीन ने भारत-पाक, चार ने भारत-इंग्लैंड और तीन ने भारत-ऑस्ट्रेलिया के बीच फाइनल की बात कही है।

जैक कैलिस - भारत बनाम इंग्लैंड
क्रिस गेल - भारत बनाम पाकिस्तान
शेट वॉटसन - भारत बनाम ऑस्ट्रेलिया
दिनेश कार्तिक - भारत बनाम पाकिस्तान
फाफ डु प्लेसिस - भारत बनाम ऑस्ट्रेलिया/न्यूजीलैंड
वकार यूनुस - भारत बनाम इंग्लैंड
डेल स्टेन - भारत बनाम इंग्लैंड
इरफान पठान - भारत बनाम दक्षिण अफ्रीका
मुरली विजय - भारत बनाम पाकिस्तान
संजय मांजरेकर - भारत बनाम ऑस्ट्रेलिया
पीयूष चावला - भारत बनाम इंग्लैंड
ऑरोन फिंच - ऑस्ट्रेलिया बनाम दक्षिण अफ्रीका

गौर हो कि भारत और इंग्लैंड के बीच खेला जाने वाला प्रैक्टिस मैच बारिश के कारण धुल गया था। वहीं भारत के अभियान की बात करें तो पहला मैच 8 अक्तूबर को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ होगा।

मिश्रित युगल स्कवाश में भारत का दबदबा, मनगांवकर अंतिम 32 में जीते

हांगझोउ (एजेंसी)। भारतीय पुरुष टीम के रोमांचक मुकाबले में पाकिस्तान का हराकर स्वर्ण पदक जीतने के बाद मिश्रित टीमों ने भी यहां एशियाई खेलों के अपने पूल चरण के मुकाबले जीतकर अच्छी शुरुआत की जबकि पुरूष एकल में महेश मनगांवकर भी अंतिम 32 का मुकाबला जीत गए।

पूल ए में दीपिका पल्लीकल और हरिंदर पाल सिंह संधू की जोड़ी ने जेइजिन यू और हवायिओंग युम की दक्षिण कोरिया की जोड़ी को 22 मिनट में 2-0 (11-2, 11-5) से हराया। दीपिका और संधू ने बाद में पाकिस्तान के मेहविश अली और नूर जमां को 11.4, 11.1 से मात दी। अनाहत सिंह और अभय सिंह की जोड़ी ने भी 15 मिनट चले पूल डी के मैच में डेविड विलियम पेलिनो और वोने एलिसा डालिडा की फिलिपीन्स की जोड़ी को 2-0 (11-7, 11-5) से शिकस्त दी।

अगले मैच में उन्होंने पाकिस्तान की सादिया गुल और फरहान जमां को 11.3, 11.2 से हराया। भारत का सामना अब पूल डी में दो अक्टूबर को थाईलैंड से और पूल ए में तीन अक्टूबर को जापान से होगा। पुरूष एकल में मनगांवकर ने फिलीपींस के जोनाथन रेयेस को 11.8, 11.4, 11.2 से हराया।

निसंदेह विराट बेहतरीन बल्लेबाज मगर उनकी तुलना सचिन से करना बेमानी : मुरलीधरन

लखनऊ (एजेंसी)। मास्टर ब्लास्टर सचिन तेंदुलकर को क्रिकेट की दुनिया का अनूठा बल्लेबाज बताते हुए श्रीलंका के पूर्व करिश्मायी स्पिनर मुथैया मुरलीधरन ने कहा कि विराट कोहली की तुलना उनसे करना मुनासिब नहीं होगा। अपनी फिल्म '800' के प्रमोशन के सिलसिले में यहां आये मुरलीधरन ने शनिवार को एक सवाल के जवाब में कहा कि विराट ही नहीं बल्कि दुनिया के किसी भी बल्लेबाज की तुलना सचिन से नहीं की जा सकती। वह महान बल्लेबाज रहे हैं।

सचिन ने 14 वर्ष की उम्र में रणजी खेलना शुरू किया जबकि मात्र 16 वर्ष की आयु में उन्होने पाकिस्तान के खिलाफ खेल कर अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में पदार्पण की उम्र में वकार युनूस जैसे गेंदबाजों का सामना किया। शतकों का शतक लगाने वाले सचिन जैसा प्रतिभाशाली बल्लेबाज सिर्फ एक बार जन्म लेता है। उन्होंने कहा कि निसंदेह विराट कोहली एक बेहतरीन बल्लेबाज है मगर उनकी तुलना सचिन से करना बेमानी होगा। क्रिकेट के हर दौर में प्रतिभावान खिलाड़ी निकल कर सामने आते हैं मगर उनकी तुलना किसी अन्य से करना मुनासिब नहीं होगा।

5 अक्टूबर से शुरू हो रहे विश्वकप में भारत की संभावनाओ को बेहतर बताते हुये उन्होने कहा कि भारत को अपनी जमीन पर खेलने का फायदा

होगा। रविचंद्रन अश्विन भारतीय टीम के लिये तुरूप का इक्का साबित होंगे। कोई फर्क नहीं पड़ता कि उन्हे टीम में अंतिम समय में शामिल किया गया। वह एक बेहतरीन गेंदबाज है जो बल्लेबाज के दिमाग को पढ़ने की क्षमता रखता है और उसे कभी भी परेशानी में डाल सकता है। उन्होंने कहा कि भारतीय बल्लेबाज और गेंदबाज फार्म में हैं जिनका फायदा टीम को होगा, वैसे इंग्लैंड और आस्ट्रेलिया की टीमें भी विश्व कप की मजबूत दावेदार हैं जो भारत को कड़ी टक्कर दे सकती हैं।

पाकिस्तान, श्रीलंका और बांग्लादेश के खिलाड़ी भारतीय उपमहाद्वीप की कंडीशन से भलींभांति वाकिफ है और ये टीमें विश्वकप में चौंका सकती हैं। मुरलीधरन ने अपने क्रिकेट करियर के अनुभव को साझा करते हुए कहा कि 1996 का विश्व कप उनके क्रिकेट करियर का सबसे यादगार लम्हा था जब उनके देश ने विश्वकप अपने नाम किया था। इस बीच श्रीलंका में गृहयुद्ध के हालात ने आम नागरिक की तरह उन्हे भी झकझोरा मगर यह जीवन की सच्चाई है।

श्रीलंकाई पूर्व स्पिनर ने कहा कि उन्हे वीरेन्द्र सहवाग के सामने गेंदबाजी करना चुनौती भरा लगता था। हालांकि उनके करियर में मिले 800 विकेट में से हर विकेट उनके लिए बेशकीमती है। बल्लेबाजों के बारे में बात करें तो अगर उनसे दुनिया के सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाजों में से वेस्टइंडीज के ब्रायन लारा और सचिन तेंदुलकर के बीच चुनने का अवसर दिया जाए तो उनकी नजर सचिन पर ही होगी।

...तो आपको 400 रन बनाने होंगे

अभ्यास मैच में पाकिस्तान की हार के बाद रमीज राजा ने जताई चिंता

नईदिल्ली (एजेंसी)। पाकिस्तान के पूर्व अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी रमीज राजा ने बाबर आजम की अगुवाई वाली टीम के आगामी एकदिवसीय विश्व कप 2023 के अभ्यास मैच में न्यूजीलैंड से हारने के बाद चिंता व्यक्त की।

पहले बल्लेबाजी करते हुए मेन इन ग्रीन ने मोहम्मद रिजवान के सनसनीखेज शतक की बदौलत 345 रन बनाए जबकि कप्तान बाबर आजम और सऊद शकील ने बल्ले से बड़ा योगदान दिया। हालांकि गेंदबाजों ने अंततः उन्हें निराश किया। न्यूजीलैंड ने रचिन रवींद्र को ओपनिंग के लिए भेजा और 23 वर्षीय खिलाड़ी ने खेल का रुख पूरी तरह से बदल दिया। उन्होंने बल्ले से 97 रन बनाए जिसमें केन विलियमसन और डेरिल मिशेल ने एक-एक अर्धशतक लगाया और अन्य बल्लेबाजों को मौका देने के लिए रिटायर हर्ट होने का फैसला किया। अंतिम दौर में मार्क चैपमैन ने केवल 41 गेंदों पर 65* रन बनाकर कीवी टीम को 5 विकेट से आसान जीत दिलाने में मदद की। पाकिस्तान की गेंदबाजी काफी सामान्य लग रही थी और इसलिए रमीज राजा विश्व कप में उनके प्रदर्शन को लेकर चिंतित हैं। उन्होंने बताया कि बल्लेबाज अक्सर शुरुआती कुछ ओवरों में अधिक समय लेते हैं और टूर्नामेंट में इसमें बदलाव की जरूरत है। पूर्व क्रिकेटर ने यह भी याद दिलाया कि अगर गेंदबाज नहीं सुधरे तो टीम को जीत के लिए 400 रन भी बनाने पड़ सकते हैं।

राजा ने कहा, मुझे पता है कि यह सिर्फ एक अभ्यास खेल था, लेकिन जीत तो जीत होती है। जीतना एक आदत बन जाती है। लेकिन मुझे लगता है कि पाकिस्तान को अब हारने की आदत हो गई है। पहले वे एशिया कप में हारे और अब यहां। पाकिस्तान ने 345 रन बनाए और यह एक शानदार रन-चेज था। अगर ये पिचें हैं और आपको भारत में ऐसी पिचें मिलेंगी, अगर आपकी गेंदबाजी इसी तरह खराब होती रही तो आपको 400 रन बनाने होंगे। आपको अपनी रणनीति बदलनी होगी, जोखिम उठाना होगा, हम ऐसा नहीं करते। हम पहले 10-15 ओवर रक्षात्मक रूप से खेलते हैं और फिर गियर बदलते हैं। गौरतलब है कि पाकिस्तान अपना दूसरा अभ्यास मैच 3 अक्टूबर को हैदराबाद में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ खेलेगा। वे अपने विश्व कप अभियान की शुरुआत 6 अक्टूबर को नीदरलैंड के खिलाफ उसी शहर में करेंगे।

अश्विन बोले- यह मेरा आखिरी क्रिकेट वर्ल्ड कप टीम में चयन की उम्मीद नहीं थी

गुवाहाटी (एजेंसी)। रविचंद्रन अश्विन ने शनिवार को स्वीकार किया कि 5 अक्टूबर से शुरु होने वाला आगामी क्रिकेट विश्व कप भारत की ओर से उनका अंतिम विश्व कप हो सकता है जिसमें इस अनुभवी स्पिनर को चोटिल अक्षर पटेल की जगह मेजबान टीम की 15 सदस्यीय टीम में शामिल किया गया है। अश्विन ने हाल में आस्ट्रेलिया के खिलाफ समाप्त श्रृंखला के पहले दो वनडे में शानदार प्रदर्शन किया और इसके बाद उन्हें पटेल की जगह टीम में चुना गया। भारत के शनिवार को यहां गत चैम्पियन इंग्लैंड के खिलाफ अभ्यास मैच से पहले 37 वर्षीय अश्विन ने मैच से पूर्व बातचीत में यह बात स्वीकार की।

अश्विन ने कहा कि मैं अच्छी लय में हूं और इस टूर्नामेंट का लुत्फ ले रहा हूं जो मुझे अच्छी लय में रखेगा। यह भारत के लिए मेरा अंतिम विश्व कप हो सकता है इसलिए टूर्नामेंट का

आनंद लेना सबसे अहम है। उन्होंने भारतीय टीम में अपने चयन के बारे में कहा कि मैं इसके बारे में (टीम में चयन) में कहता कि आप मजाक कर रहे हो। लेकिन जीवन कई उतार चढ़ाव से भरा होता है। ईमानदारी से कहूं तो मैंने नहीं सोचा था कि मैं यहां टीम के साथ मौजूद रहूंगा। परिस्थितियों ने सुनिश्चित किया कि मैं आज यहां हूं, टीम प्रबंधन ने भरोसा दिखाया है। अश्विन ने विश्व कप इतिहास में भारत के लिए 10 मैच खेले हैं जिसमें अंतिम मुकाबला 2015 में था। उन्होंने 24.88 के औसत से 17 विकेट झटके हैं और इसमें उनका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 25 रन देकर 4 विकेट था। मौजूदा भारतीय टीम में विराट कोहली के अलावा अश्विन एकमात्र सदस्य हैं जो 2011 में विश्व कप विजयी अभियान का हिस्सा थे।अश्विन ने कहा कि दबाव से निपटना अहम होगा। उन्होंने कहा कि आप इतना ही कर सकते हो कि गेंद दोनों तरीके से टर्न कराओ और मुझे लगता है कि मैं ऐसा कर सकता हूं। इन टूर्नामेंट में दबाव से निपटना अहम होता है और इससे ही तय होगा कि टूर्नामेंट कैसा रहता है।

संक्षिप्त समाचार

पीएचडीसीसीआई को भी एक इकोसिस्टम तैयार करना चाहिए : अमित शाह

नई दिल्ली, एजेंसी। केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने विज्ञान भवन, नई दिल्ली में पीएचडी चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री के 118वें वार्षिक सत्र में 'उभरता भारत यही समय है, सही समय है' विषय पर अपने संबोधन में देश के 75 सालों के लोकतांत्रिक सफर और पिछले 9 वर्षों की उपलब्धियों को गिनाया। इस दौरान शाह ने कहा कि, 'मोदी सरकार की नीतियों का अधिक लाभ युवाओं और महिलाओं को मिले, इसके लिए पीएचडीसीसीआई को भी एक इकोसिस्टम तैयार करना चाहिए।' मोदी जी की दूरदर्शिता और शाह के नीतिगत निर्णयों से बीते 9 सालों में हर क्षेत्र में देश का कायाकल्प हुआ है। 'उभरता भारत- यही समय है, सही समय है' थीम चुनने के लिए पीएचडी चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री की टीम को बधाई देते हुए शाह ने संदेश दिया कि जी20, चंद्रयान-3 मिशन, आदित्य एल-1 मिशन की सफलता और महिला आरक्षण बिल के पास होने जैसी घटनाओं ने देश भर में एक नई ऊर्जा भर दी है। आज भारत में लोकतंत्र की जड़ें मजबूत हो चुकी हैं। मोदी सरकार द्वारा लाई गई नई शिक्षा नीति के कारण आने वाले वर्षों में भारत दुनिया भर के छात्रों के लिए सबसे अच्छा डेस्टिनेशन साबित होने वाला है। संकल्प से सिद्धि के इस सफर में शाह का स्पष्ट मानना है कि जब देश आजादी की शताब्दी मना रहा होगा उस वक्त हर क्षेत्र में भारत सबसे आगे होगा, क्योंकि सबसे ज्यादा युवा, सबसे ज्यादा आबादी वाला देश, सबसे ज्यादा डॉक्टर, इंजीनियर और टेक्नोक्रैट्स भारत में हैं। अगर साल 2014 के बाद के भारत को देखा जाए तो पता चलता है कि मोदी-शाह की जोड़ी ने अपने हर वादे को निभाया। यही कारण है कि साल 2014 में हम विश्व की 11वीं नंबर की अर्थव्यवस्था थे और साल 2023 में दुनिया की पाँचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनकर उभरे हैं। इतना ही नहीं, साल 2027 तक भारत दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर है। 2013-14 में देश में 4 यूनिकॉर्न स्टार्टअप और 350 स्टार्टअप थे, आज 115 यूनिकॉर्न और 1 लाख से अधिक स्टार्टअप के साथ भारत दुनिया के प्रमुख देशों में से एक है। एक दौर था जब मेक इन इंडिया कार्यक्रम का मजाक उड़ाया जाता था, आज भारत उत्पादन के क्षेत्र में रिकॉर्ड तोड़ रहा है। देश के अंदर 14 सेक्टर में पीएलआई स्कीम ने मेक इन इंडिया के स्वप्न को साकार किया है। आज पूरे विश्व में भारत को वाइब्रेंट स्पॉट के रूप में जाना जाता है।

इस बार ठंड में भी कटौती करेगा मौसम, बढ़ सकते हैं गर्मी वाले दिन

नईदिल्ली, एजेंसी। देश के बड़े हिस्से से मॉनसून विदा हो चुका है। सितंबर के आखिरी दिन पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेशष दिल्ली, हिमाचल, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और राजस्थान से मॉनसून की विदाई हो गई। अल नीनो इफेक्ट के बाद भी इस बार 94 फीसदी बारिश दर्ज की गई। आम तौर पर अल नीनों की वजह से 25 फीसदी तक कम बारिश हो जाती है हालांकि इस बार 6 फीसदी ही कम बारिश हुई। हालांकि अल नीनो का प्रभाव अभी खत्म नहीं होने वाला है। मौसम विभाग का कहना है कि इस बार ठंड में भी कटौती होने वाली है। मौसम विभाग के महानिदेशक डॉ. मृत्युंजय महापात्र ने कहा कि अल नीनो इस बार सर्दियों तक बना रहेगा। दिसंबर से मार्च 2024 तक अल नीनो की संभावना 95 फीसदी तक ज्यादा है। ऐसे में इस बार सर्दियों के दिन कम हो सकते हैं। वहीं सर्द हवाएं भी कम चल सकती हैं। सर्दी कम होने से गरमी के दिनों में बढ़ोतरी भी देखी जा सकती है। डॉ. महापात्र ने कहा कि इस बार अल नीनो का असर कम ही रहा है। आम तौर पर अल नीनो की वजह से बारिश में 10 से 25 फीसदी की कमी आ जाती है और सूखा पड़ जाता है। हालांकि ज्यादा गंभीर स्थिति नहीं बनी। इसके पीछे तीन मौसमी घटनाएं हैं। उन्होंने कहा कि इस बार इंडियन ओशन डायपोल, लो प्रेशर सिस्टम और मैडन जुलियन ओसिलेशन की वजह से बारिश में ज्यादा कमी नहीं आई। मौसम विभाग का कहना है कि इस बार 30 सितंबर तक 820 मिमी बारिश दर्ज की गई जो कि आम तौर पर 868 मिमी होती है। मध्य भारत में सामान्य बारिश हुई है। वहीं पूर्वी और पूर्वोत्तर क्षेत्र में बारिश में सबसे ज्यादा कमी दर्ज की गई। इस क्षेत्र में 18 फीसदी कम बारिश हुई। उत्तर पश्चिम में सामान्य से 1 फीसदी ज्यादा और दक्षिण भारत में 8 फीसदी कम वर्षा दर्ज की गई।

केंद्र सरकार देश के उच्च शिक्षण संस्थानों को बंद करने की तैयारी में : सैलजा

चंडीगढ़, एजेंसी। पूर्व केंद्रीय मंत्री कुमारी सैलजा ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी की अगुवाई वाली केंद्र सरकार ने देश के उच्च शिक्षण संस्थानों को बंद करने की तैयारी शुरू कर दी है। इसलिए इनमें खाली पड़े पदों को भरने की दिशा में कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है। आईआईएम, आईआईटी, एनआईटी के साथ ही केंद्रीय विश्वविद्यालयों में शीर्ष पदों के अलावा भारी संख्या में शिक्षकों के पद खाली पड़े हुए हैं। इससे छात्रों की पढ़ाई लगातार प्रभावित हो रही है। मीडिया को जारी बयान में कुमारी सैलजा ने कहा कि देश की 50 फीसदी एनआईटीज में बोर्ड ऑफ गवर्नेंस के चेयरपर्सन का पद खाली है। कुल 32 एनआईटी में से 16 में चेयरपर्सन नहीं है। 6 में निदेशक नहीं है और 7 अन्य एनआईटी में डायरेक्टर का कार्यकाल पूरा हो चुका है। इन्हें फिलहाल मंत्रालय ने एक्सटेंशन दी हुई है। चेयरपर्सन व डायरेक्टर न होने से नए कोर्स के संचालन, संस्थान का परसेप्शन, शिक्षकों की नियुक्ति, नीतिगत निर्णय, छात्र कल्याण में लिए जाने वाले फैसले प्रभावित हो रहे हैं। पूर्व केंद्रीय मंत्री ने कहा कि देशभर के सभी 45 केंद्रीय विश्वविद्यालयों समेत उच्च शिक्षण संस्थानों में शिक्षकों के कुल 11 हजार से भी अधिक पद खाली हैं। जिन उच्च शिक्षण संस्थानों में शिक्षकों के पद खाली हैं, उनमें आईआईटी और आईआईएम जैसे देश के प्रसिद्ध और बेहतरीन शिक्षण संस्थान भी शामिल हैं। कुमारी सैलजा के अनुसार 45 केंद्रीय विश्वविद्यालयों में 18,956 स्वीकृत पद हैं। इनमें से प्रोफेसर, एसोसिएट प्रोफेसर और असिस्टेंट प्रोफेसर के कुल 6180 पद खाली हैं। देश की आईआईटी, यानी भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों की बात की जाए तो यहां कुल 11,170 स्वीकृत पद हैं। इनमें से 4,502 पद खाली हैं। इसी तरह भारत के प्रबंधन संबंधी शीर्ष शिक्षण संस्थानों, यानी आईआईएम में शिक्षकों के 1,566 पदों में से 493 पद खाली हैं। पूर्व केंद्रीय मंत्री ने कहा कि केंद्रीय विश्वविद्यालयों में खाली पड़े पदों में आरक्षित वर्गों के पद भी बहुतायत में हैं। इनमें खाली पड़े पदों में 961 पद एससी, 578 एसटी और 1,657 ओबीसी के लिए आरक्षित हैं।

पंजाब में खत्म हुआ किसानों का तीन दिवसीय आंदोलन, 600 ट्रेनें हुई प्रभावित, यात्रियों को उठानी पड़ी परेशानी

फिरोजपुर, एजेंसी। किसानों ने शनिवार शाम को अपना तीन दिवसीय 'रेल रोको आंदोलन समाप्त कर दिया, लेकिन इससे कई ट्रेन की आवाजाही प्रभावित हुई जिससे पंजाब और हरियाणा में यात्रियों को असुविधा हुई। प्रदर्शनकारी हाल ही में बाढ़ से नष्ट हुई फसलों के लिए मुआवजे, न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) को लेकर कानूनी गारंटी और पूर्ण कर्ज माफी सहित विभिन्न मांगों के समर्थन में केंद्र के खिलाफ अपना आंदोलन कर रहे थे। रेलवे अधिकारियों ने कहा कि बृहस्पतिवार को शुरू हुए आंदोलन के कारण कई ट्रेन की आवाजाही प्रभावित हुई, कई ट्रेन को रद्द कर दिया गया या उनका मार्ग बदल दिया गया।

फिरोजपुर मंडल के रेलवे अधिकारियों के अनुसार, तीन दिवसीय किसान आंदोलन के कारण 581 यात्री ट्रेन और 17 मालगाड़ियों की आवाजाही प्रभावित हुई। यात्री ट्रेन में से लगभग 376 ट्रेन रद्द कर दी गईं और 89 को पहले ही रोक दिया गया और 70 ट्रेन के मार्ग में परिवर्तन किया गया है। किसानों ने अपने आंदोलन के तहत बृहस्पतिवार से फरीदकोट,

समराला, मोगा, होशियारपुर, गुरदासपुर, जालंधर, तरनतारन, संगरूर, पटियाला, फिरोजपुर, बठिंडा और अमृतसर में कई स्थानों पर रेलवे ट्रैक अवरुद्ध कर दिए। विरोध प्रदर्शन के कारण सैकड़ों रेल यात्री पंजाब और हरियाणा में फंस गए।

लुधियाना स्टेशन पर खड़े एक रेल यात्री ने कहा कि वह गोरखपुर जाने वाली ट्रेन में सवार होने के लिए सड़क के माध्यम से जालंधर से यहां आए थे लेकिन रेल कब आएगी इसकी कोई जानकारी नहीं है। स्टेशन पर खड़े एक अन्य यात्री ने कहा कि आंदोलन की वजह से अमृतसर से उनकी ट्रेन रद्द हो गई जिससे उनके परिवार के 12 सदस्यों को बिहार जाना था। यात्री ने बताया कि उन्हें बाद में पता चला कि ट्रेन लुधियाना से जाएगी और उनके परिवार को अमतृसर से सड़क मार्ग से आना पड़ा। उन्होंने बताया कि हालांकि ट्रेन के बारे में अभी भी कोई सूचना नहीं है। अधिकारी ने बताया कि किसानों के आंदोलन से अंबाला और फिरोजपुर रेलवे संभाग प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित हुए हैं। होशियारपुर में आजाद किसान कमेटी दोआबा के प्रदेश अध्यक्ष हरपाल सिंह संघा ने चेतावनी दी कि अगर दशहरे तक उनकी मांग पूरी नहीं हुई तो किसान केंद्र सरकार के प्रतीकात्मक पुतले फूंकेगे। इस तीन दिवसीय आंदोलन में किसान मजदूर संघर्ष समिति, भारतीय किसान यूनियन (भाकियू-क्रांतिकारी), भाकियू (एकता आजाद), आजाद किसान कमेटी, दोआबा, भाकियू (बेहरामके), भाकियू (शहीद भगत सिंह) और भाकियू (छोटू राम) सहित कई किसान संगठन हिस्सा ले रहे हैं। उनकी मांगों में उत्तर भारत में बाढ़ से प्रभावित किसानों के लिए वित्तीय पैकेज, सभी फसलों पर एमएसपी के लिए कानूनी गारंटी और किसानों की कर्ज माफी सहित अन्य मांगें शामिल हैं।

किसान, उत्तर भारतीय राज्यों के लिए 50 हजार करोड़ रुपये के बाढ़ राहत पैकेज और स्वामीनाथन आयोग की रिपोर्ट की सिफारिशों के मुताबिक एमएसपी की मांग कर रहे हैं। इसके अलावा आंदोलनकारी, किसानों व मजदूरों का पूरा कर्ज माफ करने की भी मांग कर रहे हैं। उन्होंने तीन कृषि कानूनों (जिन्हें अब निरस्त कर दिया गया है) के खिलाफ प्रदर्शन के दौरान जिन किसानों की मौत हुई।

एक को चाकू गोदा तो दूसरे को मार दी गोली, डबल मर्डर से दिल्ली दहली; सीमा विवाद में उलझी रही

नई दिल्ली, एजेंसी। देश की राजधानी दिल्ली दोहरे हत्याकांड से दहल उठी है। दिल्ली के भलस्वा डेयरी इलाके में मारपीट के दौरान दो लोगों की हत्या कर दी गई है। बताया जा रहा है कि इस इलाके में एक शख्स की गोली मारकर जबकि दूसरे शख्स की चाकू गोदकर हत्या की गई है। जानकारी के मुताबिक, आपसी मारपीट के दौरान इस डबल मर्डर को अंजाम दिया गया है।

बताया जा रहा है कि झगड़े के बाद बदमाशों के एक ग्रुप ने एक शख्स को गोली मारी और दूसरे को चाकू गोद डाला। इस घटना के दौरान एक बदमाश खुद भी घायल हो गया। वारदात को अंजाम देने के बाद बदमाश एक राहगीर की स्कूटर छीन कर वहां से फरार हो गये। इधर डबल मर्डर से दिल्ली को दहलाने की सूचना मिलने के बाद दिल्ली पुलिस की एक टीम मौका-ए-वारदात पर पहुंची थी। पुलिस ने दोनों मृतकों के शव को कब्जे में लिया और पोस्टमार्टम के लिए भेजा। इस हत्याकांड को शनिवार की रात में अंजाम दिया गया है। पुलिस ने बताया है कि दोनों मृतकों की पहचान आजाद और हिमांशु के तौर पर हुई है। दोनों मुकुंदपुर समता विहार के रहने वाले हैं। पुलिस ने बताया है कि शुरुआती जांच-पड़ताल में यह बात सामने आई है कि इस घटना के पीछे पुरानी रंजिश हो सकती है। पुलिस ने बताया कि पश्चिम कमल विहार के नजदीक एक पुल के पास इस वारदात को अंजाम दिया गया है। दो लोग पहले से पुल के नजदीक मौजूद थे।

बताया जा रहा है कि कुछ देर बाद वहां दो बदमाश पहुंचे और इन दोनों ने उनसे लड़ाई शुरू कर दी। इसी दौरान एक बदमाश ने पिस्टल निकाल ली और एक युवक को गोली मार दी। इसके बाद उन्होंने एक युवक पर चाकू से हमला कर दिया। इसकी वजह से दोनों युवकों की वहीं पर मौत हो गई। कुछ मीडिया रिपोर्ट में प्रत्यक्षदर्शियों के हवाले से कहा जा रहा है कि यह घटना रात करीब 11 बजे की है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक घटना के बाद सूचना मिली तब पुलिस वहां पहुंची जरूर लेकिन काफी देर तक बुराड़ी और भलस्वा डेयरी पुलिस स्टेशन के बीच घटनास्थल को लेकर सीमा विवाद शुरू हो गया है।

हिमाचल आपदा पर सीएम सुक्खू का राहत पैकेज; 4500 करोड़ का ऐलान, घर के लिए सरकार देगी जमीन

शिमला, एजेंसी। हिमाचल प्रदेश सरकार ने प्रदेश में आई आपदा से निपटने के लिए 4500 करोड़ रुपये के आपदा राहत पैकेज का एलान किया है। इनमें आपदा प्रभावितों के लिए 3500 करोड़ रुपये का पुनरुत्थान और पुनर्वास पैकेज रहेगा। इसके अलावा 1000 करोड़ एमएलए फंड और मनरेगा के तहत डंगे लगाने पर खर्च किये जाएंगे। यह सारा खर्च प्रदेश सरकार अपने बजट से करेगी और इसमें केंद्र सरकार की धनराशि शामिल नहीं है।

मुख्यमंत्री सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने शनिवार को शिमला में आयोजित पत्रकार वार्ता में यह घोषणा की है। उन्होंने कहा कि इस पैकेज के तहत आय की सीमा हर काम के लिए खत्म कर दी गई है। आपदा विशेष राहत का समय 7 जुलाई से 30 सितंबर तक रहेगा। आपदा से प्रभावित भूमिहीन लोगों को जमीन दी जाएगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि आपदा विशेष राहत पैकेज़ के तहत भूमिहीनों को घर बनाने के लिए दो बिस्वा शहरी क्षेत्र में और तीन बिस्वा जमीन ग्रामीण क्षेत्र में दी जाएगी। उन्होंने कहा कि आपदा में जिसकी जमीन घर बनाने लायक नहीं बची है वो भी पात्र माना जाएगा। घर के पानी व बिजली कनेक्शन का खर्च भी सरकार उठाएगी। सरकारी कीमत पर 280 रुपये के हिसाब से सीमेंट की बोरी मिलेगी। उन्होंने कहा कि आपदा में जिनके घर (कच्चे व पक्के) पूर्ण रूप से क्षतिग्रस्त हुए हैं, उन्हें प्रति घर सात लाख दिया जाएगा, जबकि पहले यह राशि 1.30 लाख रुपये थी। इसी तरह आंशिक क्षतिग्रस्त घरों को पहले चार हज़ार रुपये मिलते थे और अब यह राशि बढ़ाकर एक लाख प्रति घर कर दी गई है।

डीडीए ने सिग्नेचर व्यू अपार्टमेंट खाली करने को दिया 30 नवंबर तक का टाइम, फ्लैट मालिकों को हर माह मिलेगा मोटा किराया

नई दिल्ली, एजेंसी। दिल्ली विकास प्राधिकरण (डीडीए) ने मुखर्जी नगर स्थित सिग्नेचर व्यू अपार्टमेंट के निवासियों को समझौते पर हस्ताक्षर करने के लिए 15 अक्टूबर तक का समय दिया है। इस अपार्टमेंट को असुरक्षित घोषित किया जा चुका है, इसलिए डीडीए इसे ध्वस्त करेगा। डीडीए की योजना यहां पर 166 अतिरिक्त फ्लैट बनाने की है।

अपार्टमेंट के निवासियों को ध्वस्तीकरण के लिए अनापत्ति प्रमाण पत्र (एनओसी) देना होगा। समझौते पर हस्ताक्षर करने की अंतिम समय सीमा 15 अक्टूबर है। इसके बाद इस अपार्टमेंट में रहने वाले लोगों को फ्लैट खाली करने के लिए 45 दिन का समय दिया जाएगा। समझौते के तहत निवासियों को 30 नवंबर तक फ्लैट खाली करने होंगे। इसके बाद डीडीए इलेक्ट्रिकल और रखरखाव जैसी सभी सेवाएं समाप्त कर देगा।

डीडीए के वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि सिग्नेचर व्यू अपार्टमेंट में कुल 338 फ्लैट हैं। प्राधिकरण के पास अपार्टमेंट में 0.67 हेक्टेयर जमीन उपलब्ध है। यहां पर तीन और चार कमरों के 166 अतिरिक्त फ्लैट बनाए जाएंगे। 30 नवंबर तक सिग्नेचर व्यू अपार्टमेंट को ध्वस्त करने के लिए एजेंसी नियुक्त कर दी जाएगी। जून, 2024 तक अपार्टमेंट को ध्वस्त कर दिया जाएगा। फ्लैटों का निर्माण होने तक डीडीए एचआईजी फ्लैट मालिकों को 50 हजार और एमआईजी फ्लैट मालिकों को 38 हजार रुपये प्रति माह किराया देगा।

ट्विन टावर की तर्ज पर ध्वस्त होगा दिल्ली का सिग्नेचर व्यू अपार्टमेंट, एजेंसी नियुक्त करेगा डीडीए गौरतलब है कि दिल्ली के मुखर्जी नगर में सिग्नेचर व्यू अपार्टमेंट को 2007-09 के बीच डीडीए ने ठेकेदार से बनवाया था। 2011-12 में यहां 336 एमआईजी और एचआईजी फ्लैट आवंटित किए गए, लेकिन निर्माण की गुणवत्ता खराब होने के चलते दो से तीन वर्ष बाद ही फ्लैट की हालत जर्जर होने लगी। इसे लेकर यहां रहने वाले लोगों ने उपराज्यपाल से शिकायत की थी।

यह फ्लैट महज 10 वर्षों में ही पूरी तरह से खराब हो चुके हैं। 2021-22 में आईआईटी से इनकी जांच करवाई गई, जिसमें इस अपार्टमेंट की इमारतों को असुरक्षित पाया गया। इसके बाद दिल्ली के उपराज्यपाल ने डीडीए को इमारत तोड़कर उसे दोबारा बनाने के निर्देश दिए थे।

नवाज शरीफ का सेना की तरफ झुकाव, बिलावल को अपने राजनीतिक भविष्य का डर

इस्लामाबाद, एजेंसी। भुट्टो और जरदारी परिवार के राजनीतिक नेतृत्व वाली पाकिस्तान पीपल्स पार्टी (पीपीपी) देश की दूसरी सबसे बड़ी राजनीतिक ताकत है, जो राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता, सैन्य प्रतिष्ठान विरोधी विवादों और राजनीतिक चालों में सबसे आगे रही है। यह खुद को किंग मेकर भी मानती है। गहरी जड़ों के साथ-साथ बलूचिस्तान और संघीय सरकारों में मजबूत प्रभाव के बावजूद, पीपीपी को अपनी रणनीति पर फिर से विचार करने और सत्ता में आने के लिए राजनीतिक गठबंधन का विकल्प चुनने के लिए मजबूर होना पड़ा है। पार्टी अगला आम चुनाव जीतने और सरकार बनाने के लिए बेताब है। लेकिन ऐसा लगता है कि फिलहाल शीर्ष राजनीतिक खिलाड़ियों के बीच कोई स्पष्ट विजेता नहीं है। पीपीपी के सह-अध्यक्ष और पूर्व विदेश मंत्री बिलावल भुट्टो-जरदारी ने देश के सैन्य प्रतिष्ठान और पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज (पीएमएल-एन) के बीच पिछले दरवाजे की

बातचीत पर गंभीर आपत्ति व्यक्त की है। उन्हें अगली सरकार के गठन में उपेक्षा और दरकिनार किए जाने की आशंका है। राजनीतिक विश्लेषक अदनान शौकत के मुताबिक, पीपीपी ने 9 अगस्त को विधानसभाओं के विघटन के बाद सैन्य प्रतिष्ठान के रवैये में एक बड़ा बदलाव देखा है। लंदन से नवाज शरीफ की वापसी पर पीएमएल-एन और सैन्य प्रतिष्ठान के बीच सक्रिय बातचीत में, पीपीपी को इससे दूर रखा गया है। यह असामान्य है क्योंकि बिलावल भुट्टो और उनकी पार्टी के नेतृत्व ने पूर्व शहबाज शरीफ के नेतृत्व वाली गठबंधन सरकार में महत्वपूर्ण मंत्रालयों का प्रबंधन किया था। बिलावल भुट्टो और उनके पिता आसिफ अली जरदारी अब आगामी चुनावों के लिए निर्वाचित उम्मीदवारों की एक मजबूत सूची तैयार करने के प्रयास में पार्टी के गढ़ सिंध, बलूचिस्तान और पंजाब प्रांत के दक्षिणी हिस्से में अधिक राजनीतिक समर्थन जुटाने के लिए तैयार हैं। शौकत ने कहा, पीपीपी की राजनीतिक रणनीति के पीछे का विचार पीएमएल-एन के साथ अपने भविष्य के गठबंधन में बढ़त हासिल करने के लिए अपनी राजनीतिक ताकत और राजनेताओं की उम्मीदवारी सूची का उपयोग करना है। सरकार बनाने और सबसे बड़ी पार्टी बनने के बारे में पीपीपी का आशावाद गायब हो गया, लेकिन बिलावल भुट्टो के नेतृत्व में एक संभावित उम्मीदवार की तलाश के उसके प्रयास तेज गति से काम कर रहे हैं। कुछ विश्लेषकों का यह भी मानना है कि पीपीपी और पीएमएल-एन के बीच मौजूदा दरार समय के साथ दूर होने की प्रवृत्ति लेकर आती है, क्योंकि चुनाव प्रचार के माध्यम से दोनों के मतदाताओं के बीच राजनीतिक कथा निर्माण का प्रचार-प्रसार किया जाता है। राजनीतिक विश्लेषक अमजद महमूद ने कहा, यह पंजाब में पीएमएल-एन के पुनरुद्धार की लड़ाई है, जबकि पीपीपी ने सिंध में अपनी शक्ति स्थापित की है। अब पीपीपी पंजाब में सेंध लगाकर और अधिक उम्मीदवारों को पार्टी में शामिल करना चाहती है।

नासा के रोवर ने मंगल ग्रह पर दिखाया शैतानी बवंडर, कैमरे में कैद वीडियो

वाशिंगटन, एजेंसी। मंगल ग्रह पर जीवन की खोज कर रहे नासा के रोवर ने कैमरे पर अनोखी घटना कैद की है। नासा के रोवर ने इस घटना को सोशल मीडिया अकाउंट पर शेयर किया है। रोवर ने मंगल ग्रह पर एक विशाल बवंडर की घटना कैमरे पर कैद की है। नासा ने इस बवंडर को शैतानी तूफान नाम दिया है। नासा ने इस बवंडर के बारे में जानकारी भी शेयर की है। नासा के रोवर के मुताबिक, लगभग 1.2 मील (2 किलोमीटर) की ऊंचाई तक पहुंचते हुए, इस घूमते हुए भंवर ने 12 मील प्रति घंटे की रफ्तार की गति पकड़ी। भंवर का निचला भाग फुटेज में दिखाई दे रहा है। नासा का कहना है कि मंगल ग्रह परधूल भरा शैतान अक्सर दिखाई देता है। हालांकि इस बार रोवर से इसका सामना 200 फीट की दूरी से हुआ। मंगल ग्रह पर धूल भरी आंधी या बवंडर नया नहीं है। इस तरह की घटना अक्सर मंगल ग्रह पर देखी जाती रही है। मंगल पर हवा है या नहीं, नासा का रोवर ग्रह पर इसकी खोज कर रहा है। नासा ने इससे पहले दिसंबर 2022 में बवंडर को कैमरे में किया था। बवंडर से पहले का ऑडियो और वीडियो भी सामने आई थी। इस बार भी नासा ने मीलों प्रति घंटे की रफ्तार वाले इस शैतानी बवंडर को कैमरे में किया है। वीडियो में देखा जा सकता है कि यह वबंडर सेकंड के 21वें फ्रेम में गति पकड़ता है और फिर पहाड़ी से नीचे की तरफ चला जाता है। नासा का रोवर मंगल ग्रह पर जेज़ेरो क्रेटर की खोज कर रहा है, जो एक समय गर्जना करने वाली नदी डेल्टा का स्थल था जो पानी से भरा हुआ था। अब यह एक सूखा ग्रह है। इसकी तुलना हम पृथ्वी के सबसे शुष्क रेगिस्तान से 1,000 गुना अधिक शुष्क से कर सकते हैं। यहां वायुमंडल में हवा पहुंचाने के लिए लाल धूल की कोई कमी नहीं है।

भारत और बांग्लादेश के बीच व्यापार पर हुई जेडब्ल्यूजी की 15वीं बैठक

ढाका, एजेंसी। भारत और बांग्लादेश के बीच व्यापार पर संयुक्त कार्य समूह की 15वीं बैठक आयोजित की गई। इस बैठक का आयोजन बांग्लादेश के ढाका में 26 और 27 सितंबर 2023 को हुआ। बैठक की सह-अध्यक्षता भारत सरकार के वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के वाणिज्य विभाग के संयुक्त सचिव विपुल बंसल और बांग्लादेश जनवादी गणराज्य सरकार के वाणिज्य मंत्रालय के अतिरिक्त सचिव नूर मोहम्मद महबुबुल हक ने की। शुरुआत पर जमीनी कार्य, मानकों का सामंजस्य, मानकों की पारस्परिक मान्यता, बांग्लादेश को आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति और सड़क एवं रेल बुनियादी ढांचे का विकास और अन्य मुद्दे जैसे कई द्विपक्षीय मुद्दों पर चर्चा हुई। वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय ने यह जानकारी उपलब्ध कराई है। दोनों देशों द्वारा गहन आर्थिक जुड़ाव, क्षेत्रीय सहयोग और सतत विकास के प्रति अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि के साथ द्विपक्षीय बैठक सफलतापूर्वक संपन्न हुई। दोनों पक्षों ने दोहराया कि भविष्य में व्यापार संबंधों और आपसी समृद्धि में वृद्धि की बड़ी संभावनाएं हैं। भारत और बांग्लादेश दोनों देशों के बीच व्यापार को सुविधाजनक बनाने के लिए कई व्यापार सुविधाजनक उपाय किए गए हैं। भारत ने 17 मई 2022 के परिपत्र के माध्यम से किसी भी अंतर्देशीय कंटेनर डिपो (आईसीडी) पर सीमा शुल्क निकासी सुविधा के साथ, बंद कंटेनरों में रेल द्वारा बांग्लादेश से भारत में निर्यात की अनुमति दी है। मोंगला पोर्ट (एसीएमपी) के उपयोग पर समझौते की सफल शुरुआत और विभिन्न भूमि कस्टम स्टेशनों (एलसीएस) के माध्यम से व्यापार किए जाने वाले सामानों की संख्या में वृद्धि के बारे में जानकारी दी। व्यापार से संबंधित मुद्दों पर चर्चा करने और आर्थिक और तकनीकी सहयोग के अवसरों का पता लगाने के लिए भारत और बांग्लादेश के बीच व्यापार पर संयुक्त कार्य समूह (जेडब्ल्यूजी) की वार्षिक बैठक होती है।

नवाज शरीफ की वापसी की तैयारी के साथ शहबाज का पंजाब पर दांव

इस्लामाबाद, एजेंसी। पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ करीब चार साल के आत्म-निर्वासन के बाद पाकिस्तान लौटने की तैयारी कर रहे हैं, वहीं उनके भाई शहबाज शरीफ की राजनीतिक भूमिका वहां वापस जाती दिख रही है, जहां यह अधिक मायने रखती है। शहबाज शरीफ ने संसद में अविश्वास मत में अपने पूर्ववर्ती इमरान खान को पद से हटाने के बाद अप्रैल 2022 से अगस्त 2023 तक पाकिस्तान डेमोक्रेटिक मूवमेंट गठबंधन सरकार का नेतृत्व किया, अब अपने बड़े भाई नवाज शरीफ की पाकिस्तान वापसी के लिए मंच तैयार कर रहे हैं और देश के शक्तिशाली सैन्य प्रतिष्ठान और शरीफ परिवार के बीच संतुलन और संपर्क पुल के रूप में काम कर रहे हैं।

इस भूमिका के पीछे महत्वाकांक्षा यह सुनिश्चित करना है कि नवाज शरीफ अगले आम चुनाव जीतने के लिए पाकिस्तान लौटें और देश की संघीय शक्ति राजनीतिक घर, संसद पर नियंत्रण रखें। राजनीतिक विश्लेषक अदनान शौकत ने कहा, नवाज शरीफ की वापसी में शहबाज शरीफ की भूमिका अहम है। वह वही हैं जो नवाज शरीफ और सैन्य प्रतिष्ठान के बीच संचार के दूत हैं। वह वही हैं जो चुनावों के लिए पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज (पीएमएल-एन) के राजनीतिक कथानक और नारे को तैयार और समायोजित कर रहे हैं। वह वही हैं जिन्होंने नवाज शरीफ को अपने भाषणों में सैन्य प्रतिष्ठान के पूर्व प्रमुख और अन्य शीर्ष अधिकारियों को निशाना बनाने से परहेज करने की सलाह दी थी। तो, यह शहबाज शरीफ ही हैं जो नवाज शरीफ की वापसी का रास्ता साफ कर रहे हैं। लेकिन, सवाल यह है कि नवाज शरीफ की वापसी के बाद शहबाज शरीफ का क्या भविष्य

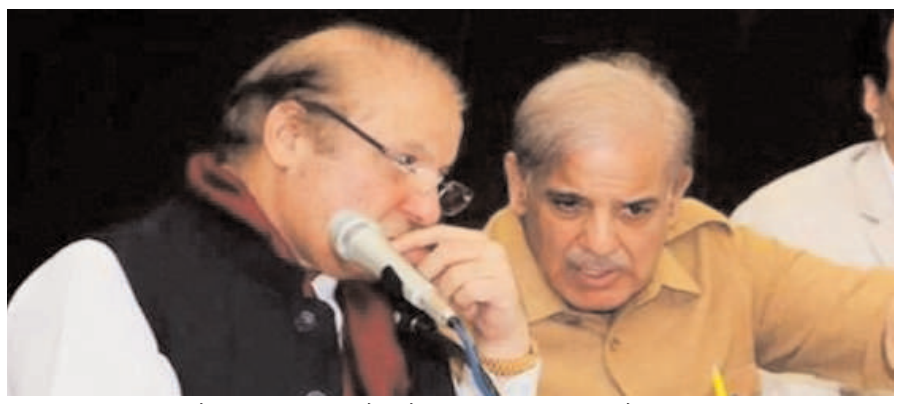

होगा क्योंकि यह सच है कि नवाज शरीफ की मौजूदगी में शहबाज प्रधानमंत्री नहीं बन सकते। कि शहबाज शरीफ देश के सबसे महत्वपूर्ण प्रांत पर नियंत्रण करने की योजना बना रहे हैं, जहां उनका शानदार ट्रैक रिकॉर्ड है। शहबाज शरीफ एक बार फिर देश के सबसे बड़े प्रांत पंजाब के मुख्यमंत्री बनने के लिए तैयार हैं। राजनीतिक विश्लेषक अदनान शौकत ने कहा, शहबाज शरीफ पंजाब के मुख्यमंत्री बनेंगे और उनके भाई देश के प्रधानमंत्री बनेंगे। सभी ने पंजाब के मुख्यमंत्री के रूप में शहबाज शरीफ की योग्यता की सराहना की है। उनके शासन में प्रांत ने जो विकास देखा है, वह प्रांत को देश के बाकी हिस्सों से कहीं आगे ले गया है। पंजाब में, वे शहबाज़ शरीफ़ के नेतृत्व को शहबाज़ स्पीड कहते हैं, क्योंकि वह सतर्क और सक्रिय थे और सभी क्षेत्रों के अधिकारियों को अपने नियंत्रण में रखते थे। शहबाज शरीफ के लिए संघीय सरकार में अपने भाई के साथ पंजाब में नियंत्रण बनाए रखना भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह प्रांत दशकों से पीएमएल-एन राजनीति का गढ़ रहा है।

अतीत में, पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) और उनके नेता इमरान खान के कड़े विरोध के कारण पार्टी की लोकप्रियता को नुकसान हुआ है, जिनके अन्य राजनीतिक दलों के खिलाफ बयान को जनता से व्यापक समर्थन मिला। पीएमएल-एन के प्रमुख होने के नाते शहबाज शरीफ पंजाब प्रांत से अपनी राजनीतिक ताकत फिर से हासिल करने और मुख्यमंत्री के रूप में अपने कार्यकाल की सफलता की कहानियों के साथ मतदाताओं तक पहुंचने के लिए सबसे अच्छे उम्मीदवार होंगे। राजनीतिक विश्लेषक अमीर लतीफ ने कहा, मध्य पंजाब वह जगह है, जहां पीएमएल-एन ने अपनी राजनीतिक ताकत बरकरार रखी है। और, इसकी अधिकांश ताकत नवाज शरीफ और शहबाज शरीफ के नेतृत्व से प्राप्त हुई है।

मुद्रक तथा प्रकाशक रंजीत राय द्वारा स्वामी आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, प्लॉट नं. सी-16 एवं 17, रोड नं. 9, पाटलिपुत्रा इंडस्ट्रीयल एरिया, पटना-800013 के पक्ष में आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड प्रेस से मुद्रित एवं सी-20, एस.के. पुरी, नियर बसावन पार्क, पटना, बिहार-800013 से प्रकाशित संपादक- देवन प्रसाद
(नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा पटना न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. BIHHIN/2013/49676, Email: news@pratahkiran.com, patna@pratahkiran.com, 9212228045, 8130691216, 9971557129